नागपुरी शिष्ट साहित्य

नागपुरी शिष्ट साहित्य

डॉ० श्रवण कुमार गोस्वामी

रिसर्च : दिल्ली

राँची विश्वविद्यालय के द्वारा
पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत
शोध-प्रबन्ध
'नागपुरी और उसका शिष्ट-साहित्य'
का
साहित्य-खंड

© RESERVED

Published by RESEARCH PUBLICATIONS in Social Sciences, 2/44, Ansari Road, Daryaganj, Delhi-6 and Printed at R. P. Printers, Shahdara, Delhi-32.

आभारोक्ति

छोटानागपुर की भूमि रत्नगर्भा है, पर इस धरती के वेटे सदा-सदा से उपेक्षित रहते आए हैं। आज छोटानागपुर का तीव्र गति से औद्योगीकरण किया जा रहा है, परन्तु यहाँ के लोगो को इस नूतन विकास का कोई लाभ प्राप्त नही हो रहा है। उपेक्षा और शोषण का यह क्रम छोटानागपुर के लिए अत्यत पुराना है, जिसका एक शिकार यहाँ की आन्तर-भाषा नागपुरी तथा उसका साहित्य भी है। यह एक विलक्षण सयोग है कि नागपुरी की ओर जिन विद्वानो का किंचित् ध्यान आकृष्ट भी हुआ है, उनका छोटानागपुर से कोई विशेष सम्पर्क नही रहा है। फल यह हुआ कि नागपुरी भाषा तथा साहित्य के सम्बन्ध मे इन विद्वानो के द्वारा अत्यन्त प्रतिकूल तथा निराशापूर्ण मत व्यक्त किए गए —

(१) नागपुरी भोजपुरी का विकृत रूप है।[1] —डॉ० ग्रियर्सन

(२) भोजपुरी की अन्य वोलियो की भाँति सदानी मे लिखित साहित्य का अभाव है।[2] —डा० उदयनारायण तिवारी

और यह माना जाने लग गया कि नागपुरी भोजपुरी की एक विभाषा है, जिसमे लिखित साहित्य का सर्वथा अभाव है। यह भ्रम फैलता रहा और इसके निराकरण का प्रयास तक नही किया गया। यह वात मुझे वरावर सालती रही, फलतः मैंने इसी विषय पर शोध-कार्य करने का निश्चय किया। अनेक वर्षों के परिश्रम तथा अनेक उतार-चढावो के पश्चात् मैंने "नागपुरी और उसका शिष्ट-साहित्य" नामक शोध-प्रवन्ध १४ जनवरी १९७० को राँची विश्वविद्यालय मे प्रस्तुत कर २४ नवम्वर १९७० को पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। यहाँ पर उल्लेख कर देना समीचीन ही होगा कि नागपुरी भाषा तथा साहित्य-विषयक यह पहला शोध-कार्य है।

'नागपुरी और उसका शिष्ट साहित्य' नामक शोध-प्रवन्ध को पूरा करने मे मुझे अनेक व्यक्तियों तथा सस्थाओ का अमूल्य सहयोग विविध रूपो मे प्राप्त हुआ है, जिनके नामो का उल्लेख मैं विस्तार-भय के कारण नही कर रहा, पर मैं उन सबके प्रति कृतज्ञ हूँ।

इस शोध-कार्य को सम्पन्न करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली तथा राँची विश्वविद्यालय से मुझे जो आर्थिक सहायता प्राप्त हुई, उससे मुझे वडा वल प्राप्त हुआ, अत मैं इन दोनो ही सस्थाओ का आभारी हूँ।

नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता, जिला पुस्तकालय, राँची, राँची विश्वविद्यालय पुस्तकालय, राँची, प्रसिद्ध मानव-विज्ञानी स्व० शरत्चन्द्र राय के निजी पुस्तकालय, राँची तथा इतिहास विभाग के पुस्तकालय (राँची विश्वविद्यालय) से मैंने पर्याप्त

१ लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया (१९०३), जिल्द-५, खण्ड-२, पृष्ठ-२७७

२ भोजपुरी भाषा और साहित्य (१९५४) पृष्ठ-३४४

लाभ उठाया है, अतः इन सभी संस्थाओं के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

डॉ० कामिल बुल्के ने कृपापूर्वक मुझे अपने निजी पुस्तकालय का केवल उपयोग ही नहीं करने दिया, बल्कि उन्होंने मेरे लिए दुर्लभ पुस्तकों तथा पाण्डुलिपियों का प्रबन्ध भी कर दिया था। उनके इस अनुग्रह के लिए मैं धन्यवाद जैसे तुच्छ शब्द का प्रयोग करूँ तो यह मात्र औपचारिकता होगी, अतः मैं चुप रहना ही उचित मानता हूँ।

नागपुरी के अनन्य भक्त स्वर्गीय पीटर शांति नवरंगी से इस कार्य में मुझे प्रत्येक सहयोग मिला और मिली सबसे बड़ी वस्तु उनकी कृपा-दृष्टि। उनके प्रति मैं किन शब्दों में आभार प्रकट करूँ—मैं समझ नहीं पाता। मेरे जानते नागपुरी की किंचित् सेवा कर ही उनके प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन संभव है और मुझे यह विश्वास है कि ऐसा करके ही उनकी आत्मा को शांति भी पहुँचाई जा सकती है।

श्री योगेन्द्र नाथ तिवारी, श्री राधाकृष्ण, श्री दिनेश्वर प्रसाद तथा श्री सुशील कुमार से विचार-विमर्श के मुझे जो अवसर प्राप्त होते रहे हैं, उनसे मुझे अपने कार्य में बड़ी सहायता मिली है, अतः मैं इन सभी कृपालुओं का अनुगृहीत हूँ।

इस शोध-प्रबन्ध को प्रस्तुत कर पाना कदाचित् मेरे लिए संभव नहीं हो पाता, यदि पग-पग पर मुझे अपने गुरु तथा शोध-निदेशक डॉ० रामखेलावन पाण्डेय डी० लिट्, आचार्य तथा अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग रांची विश्वविद्यालय के सुचिन्तित निदेशन तथा परामर्श की यथासमय प्राप्ति नहीं होती रहती। अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी मुझे समय प्रदान करने में आपने कभी भी कोई कोताही नहीं की। इन सबके लिए 'आभार-प्रदर्शन' की औपचारिकता निभाकर भी मैं अपने को उऋण नहीं कर पाऊँगा—यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ, अतः मौन हूँ—पर श्रद्धावनत।

सुप्रसिद्ध भाषाविद् श्रद्धेय डॉ० उदयनारायण तिवारी, डी० लिट् से बहुत दूर रहकर भी मैं सदा उनके आशीर्वाद पाता रहा हूँ। जब-जब मेरे सामने कठिनाइयाँ आईं, डॉक्टर साहब ने सहर्ष मेरी सहायता की है, अतः मैं डॉक्टर साहब के प्रति अपने-आपको सदा नतमस्तक पाता हूँ।

मेरे शोध-प्रबन्ध "नागपुरी और उसका शिष्ट साहित्य" का प्रकाशन दो स्वतन्त्र ग्रन्थों के रूप में किया जा रहा है —

(१) नागपुरी शिष्ट साहित्य
(२) नागपुरी भाषा

प्रस्तुत पुस्तक "नागपुरी शिष्ट साहित्य" के प्रकाशक रिसर्च पब्लिकेशन्स इन सोशल साइंसेज दिल्ली-६ का मैं हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन में विशेष रुचि प्रदर्शित की है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखन में जिन लेखकों के ग्रंथों की सहायता ली गई है और जिनकी रचनाओं का उपयोग उद्धरण के रूप में किया गया है, उन सबके प्रति भी मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

—श्रवण कुमार गोस्वामी

५ नवम्बर १९७२
७०३, मेन रोड
रांची-१

विषय-सूची

१

प्रवेशक

(क) छोटानागपुर—एक ऐतिहासिक परिचय

पहले छोटानागपुर का सपूर्ण क्षेत्र घने जगलो से परिपूर्ण था, फलस्वरूप यह झारखण्ड के नाम से जाना जाता था। प्राचीनकाल मे इस क्षेत्र को कर्कखण्ड कहते थे। महाभारत मे इसका उल्लेख कर्ण की दिग्विजय मे आया है—

अगान् वगान् कलिंगाश्च शुण्डिकान् मिथिलानथ।
मागधान् कर्कखण्डाश्च निवेश्य विषयेऽऽत्मन॥
आवशीराश्च योध्याश्च अहिक्षत्र च निर्जयत्।
पूर्वा दिश विनिर्जित्य वत्सभूमि तथागतम्॥[1]

इस क्षेत्र को अर्कखण्ड भी कहा जाता था, क्योकि अर्क रेखा (सूर्य रेखा) राँची से होकर गुजरती है। "आइन-ए-अकबरी" तथा "जहाँगीरनामा" मे इस भू-खण्ड को "कोकरा" कहा गया है। "जहाँगीरनामा" के अनुसार यहाँ बहुमूल्य हीरे प्राप्त होते थे, सभवत इसी कारण इसका एक नाम हीरानागपुर भी है। पर, इसका सर्वाधिक प्रचलित नाम "नागपुर" रहा है। इस नामकरण के दो आधार हैं—
(१) यहाँ के जगलों में कीमती हाथी पाये जाते थे, फलत इसका नाम नागपुर पडा। यहाँ प्राप्त होनेवाले हाथी इतने विख्यात हुआ करते थे कि "श्यामचन्द्र" नामक हाथी को प्राप्त करने के लिए शेरशाह ने यहाँ के तत्कालीन राजा पर आक्रमण के निमित्त अपनी सेना सन् १५१० ई० मे भेजी थी।[2] यहाँ के जगलो से प्राप्त होनेवाले

१ महाभारत, द्वितीय खण्ड (सवत् २०२३ गोरखपुर) पृष्ठ १६६५।

२ १५१०, ए० डी० शेरशाह सेन्ड्स ऐन एक्सपेडिशन अगेंस्ट दि राजा ऑफ झारखण्ड (छोटा-नागपुर) टू सिक्योर दि पोजेशन आफ ऐन एलिफ़ेंट नेम्ड श्यामचन्द्र-शरत्चन्द्र राय, दि मुण्डाज ऐण्ड देयर कंट्री (१९१२) अपेंडिक्स-४।

हाथियों की ख्याति का उल्लेख "आइन-ए-अकबरी" में भी मिलता है।[3] (२) प्राचीन-काल से ही छोटानागपुर के ऊपर नागवंशी राजाओं का प्रभुत्व रहा है, अत इस क्षेत्र का नागपुर के नाम से अभिज्ञात होना स्वाभाविक ही है। सन् १७६२ ई० में इसका नाम "चुटियानागपुर" रखा गया, क्योंकि महाराष्ट्र के नागपुर तथा इस नागपुर के बीच अन्तर स्पष्ट करना प्रशासनिक दृष्टि से अपरिहार्य हो गया था। चुटिया आज भी राँची जिले के अन्तर्गत एक कस्बा है, जहाँ पहले नागवंशी लोगों का निवास था। अंग्रेज "चुटिया" शब्द का ठीक-ठीक उच्चारण नहीं कर पाते थे, फलत कालान्तर में "चुटियानागपुर" आज का "छोटानागपुर" बन गया। सम्प्रति छोटानागपुर बिहार का एक प्रमुख प्रमंडल है, जिसके पाँच जिले राँची, हजारीबाग, पलामू, सिंहभूम तथा धनबाद हैं।

छोटानागपुर के आदिनिवासी असुर माने जाते हैं। इस जाति के लोग आज भी छोटानागपुर में पाये जाते हैं, जो लोहा गलाने का काम करते हैं। यहाँ बाहर से आनेवाली आदिम जातियों में मुंडा, उराँव तथा खड़िया हैं। पर इनके आगमन—काल, क्रम तथा मूल-स्थान के सम्बन्ध में निश्चय-पूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। इस प्रदेश में पुरातत्त्व विभाग की ओर से खोज नहीं के बराबर हुई है, फिर भी उपलब्ध सामग्रियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यहाँ मनुष्य अनादि काल से रहते आ रहे हैं।

प्राचीन छोटानागपुर

प्राचीन छोटानागपुर झारखण्ड के नाम से जाना जाता था और ऐसा माना जाता है कि इस क्षेत्र के लोगों पर उस समय बाहरी राजाओं का कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं था। महाभारत-काल में राजगृह के शक्ति-सम्पन्न राजा जरासन्ध ने भी इस क्षेत्र पर विशेष ध्यान नहीं रखा था। मगध के महापद्मनंद उग्रसेन ने उड़ीसा तक के क्षेत्रों पर अधिकार प्राप्त किया था, अत ऐसा सम्भव है कि उसने झारखण्ड को भी अधिकृत किया हो। मगध साम्राज्य में इस क्षेत्र को कदाचित् पहली बार अशोक के राज्य-काल (२७३-२३२ ई० पू०) में सम्मिलित किया गया था। मौर्य साम्राज्य के पतन पर कलिंग के राजा खारवेल ने झारखण्ड के क्षेत्र से होकर राजगृह तथा पाटलिपुत्र को पराभूत किया था। समुद्रगुप्त (सन् ३३५-३८० ई०) ने दक्षिण पर आक्रमण के समय झारखण्ड को भी पार किया था। चीनी यात्री इत्सिंग के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि झारखण्ड से होकर ही वह नालन्दा तथा बोधगया पहुँचा था।[4]

३ आइन-ए-अकबरी (१९६५), पृष्ठ १३०।

४ एम० डी० प्रसाद, डिस्ट्रिक्ट सेंसस हैंड बुक राँची १९६१, पृष्ठ १।

नागवंश का प्रारम्भ

प्रथम नागवंशी राजा फणिमुकुट राय हुए। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित किंवदन्ती प्रचलित है—

जनमेजय के नागयज्ञ में पुण्डरीक नामक नाग जलना नहीं चाहता था, अतः मनुष्य का रूप धारण कर वह काशी भाग आया। यहाँ एक ब्राह्मण का वह शिष्य बन गया और उनके घर पर रहकर अध्ययन करने लगा। पुण्डरीक की कुशाग्र प्रतिभा से प्रभावित होकर ब्राह्मण ने अपनी कन्या पार्वती का विवाह उसके साथ कर दिया। पुण्डरीक जब सोता था तो उसकी जीभ बाहर निकल आती थी, जो दो हिस्सों में विभक्त थी। उसके मुँह से जहरीली साँस निकला करती थी, जिससे पार्वती बेचैन हो जाया करती। वह अपने पति से इसका कारण बराबर पूछती, पर पुण्डरीक कुछ भी नहीं बताता।

एक बार दोनों दक्षिण के तीर्थों की यात्रा पर निकले। पुरी से लौटते हुए वे लोग सुतियाम्बे (पिठौरिया के समीप) पहुँचे। उन दिनों पार्वती गर्भवती थी। उसे असह्य प्रसव-पीड़ा होने लगी। उसने सोचा कि अब वह जीवित नहीं बच पाएगी, अतः क्यों नहीं अपने पति से दो जीभों का रहस्य अभी ही पूछ लिया जाय। पूछने पर पुण्डरीक ने पार्वती को सच्ची बात बतला दी कि वह मनुष्य नहीं नाग है। यह बतलाकर वह सुतियाम्बे के दह में समा गया। पार्वती ने पुत्ररत्न को जन्म दिया। इसके बाद लकड़ियाँ चुनकर उसने आग जलाई और उस आग में वह जल मरी। तदुपरांत पुण्डरीक नाग दह से निकल आया और वह नवजात पुत्र की रक्षा अपना फण फैलाकर करने लगा।

कुछ लकड़हारों ने इस दृश्य को देखा और इसकी सूचना पड़ोस के एक दूबे नामक ब्राह्मण को दी। दूबे नवजात शिशु को लेकर घर चला आया। उसने उसका पालन-पोषण किया और उसका नामकरण फणिमुकुट राय किया, क्योंकि वह नाग के फण के नीचे पाया गया था। इस किंवदन्ती का दूसरा रूप यह भी है कि दूबे ने प्रधान मानकी मदरा मुंडा नामक व्यक्ति को यह बच्चा सौंप दिया, जिसने अपने बेटे के साथ-साथ फणिमुकुट राय का भी लालन-पालन किया। जब बारह वर्ष व्यतीत हो गए, तो मदरा मुंडा ने देखा कि उसके अपने पुत्र की तुलना में फणिमुकुट राय कहीं अधिक योग्य एवं प्रतिभाशाली था, अतः उसने फणिमुकुट राय को ही अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। अन्य मानकियों तथा परहा राजाओं ने भी एकमत होकर फणिमुकुट राय को अपना राजा स्वीकार कर लिया। ऐसा माना जाता है कि यह घटना संवत् १२१ अथवा सन् ६४ ई० की है।[५] यहाँ से नागवंशी राज्य का प्रारम्भ होता है। (पर शरतचन्द्र राय के अनुसार यह घटना ५वीं शताब्दी की है।) फणिमुकुट राय

५ पी० वी० चक्रवर्ती, छोटानागपुर राज, पृष्ठ १।

पुण्डरीक नाग का पुत्र था, अत इस वश का नाम नागवश हुआ। यह उल्लेखनीय है कि लगभग ऐसी ही किवदन्ती शिशुनाग के सम्बन्ध मे भी प्रचलित है।[6]

मुस्लिम शासन-काल

तुर्क-अफगान शासन-काल के पूर्व तक (सन् १५२६ ई०) छोटानागपुर बाहरी प्रभावों से मुक्त था और इस क्षेत्र की यात्रा करना निरापद नही माना जाता था। फिर भी मथुरा जाते समय चैतन्य महाप्रभु ने झारखण्ड को पार किया था—

'मथुरा यात्रार छले आसि झारिखण्ड। भिल्ल प्राय लोक ताहा परम पाषण्ड ॥ ५० ॥
नाम-प्रेम दिया कैल सबार निस्तार। चैतन्येर गूढलीला बुझिते शक्ति कार ॥ ५१ ॥
वन देखि हय भ्रम-एइ वृन्दावन। शैल देखि मने हय एइ गोवर्द्धन ॥ ५२ ॥
याहा नदी देखे, ताहा मानये कालिंदी। ताहा प्रेमावेशे नाचे प्रभु पड़े कान्दि ॥ ५३ ॥'[7]

इसी प्रकार लोगों का छिटपुट आवागमन इस क्षेत्र मे होता। पर यहाँ के शासन पर यहाँ के राजाओं का ही अधिकार था और झारखण्ड बाहरी हस्तक्षेपों से पूर्णत. मुक्त था। सन् १५१० ई मे "श्यामचंद्र" नामक हाथी को प्राप्त करने के लिए शेरशाह ने अपनी सेना यहाँ भेजी। इसे सर्वप्रथम मुस्लिम आक्रमण माना जा सकता है। शेरशाह जब हुमायूं का पीछा कर रहा था, उस समय भी उसने पलामू के चेरुह सरदार के विरुद्ध खवास खाँ को झारखण्ड मे भेजा था।[8] सन् १५५६ ई० मे अकबर शासनारूढ हुआ। उन दिनों झारखंड को कोकरा भी कहा जाने लग गया था। सन् १५८५ ई० मे अकबर ने शाहबाज खाँ के सेनापतित्व मे यहाँ एक सेना भेजी। शाहबाज खाँ ने तत्कालीन राजा मधुसिंह को पराजित किया, फलत मधुसिंह ने मुगल-साम्राज्य को कर देना स्वीकार कर लिया।[9] सन् १६०५ ई० मे अकबर की मृत्यु हो गई। इसके पश्चात् छोटानागपुर एक प्रकार से पुन स्वतत्र हो गया।

"तुजुक-इ-जहाँगीरी" मे छोटानागपुर को कोकरा कहा गया है। जहाँगीर के

६ महावंश टीका स्पष्ट कहती है कि शिशुनाग का जन्म वैशाली मे एक लिच्छवी राजा की वेश्या की कुक्षि मे हुआ था। इस बालक को घूरे पर फेंक दिया गया। एक नागराज इसकी रक्षा कर रहा था। प्रात लोग एकत्र होकर तमाशा देखने लगे और कहने लगे "शिशु" है, अत इस बालक का नाम शिशुनाग पड़ा। इस बालक का पालन-पोषण मंत्री के पुत्र ने किया।—डॉ० देवसहाय त्रिवेद, प्राङ् मौर्य बिहार (१९५४), पृष्ठ ९९-१००।

७ श्री श्री चैतन्य चरितामृत (मध्यलीला), वृन्दावन (१९६४), पृष्ठ ४६६।

८ चौसा के युद्ध के पश्चात् उसने [illegible] बिहार की तरफ [illegible] चेरुह सरदार के विरुद्ध और जलाल खाँ [illegible] बंगाल की तरफ भेजा और स्वयं हुमायूँ का पीछा करने [illegible]—डॉ० हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल सम्राट् हुमायूँ पृ० २४८।

९ [illegible] (१९५५) पृ० ४३८।

शासन-काल मे यहाँ बहुमूल्य हीरे पाये जाते थे। यहाँ से जहाँगीर को एक ऐसा हीरा भी प्राप्त हुआ था, जिसका मूल्य पचास हजार रुपये आँका गया था। इस क्षेत्र को अपने अधिकार मे लाने के लिए बिहार के सूबेदारो ने कई प्रयास किए, किंतु उन्हे कुछ हीरो से ही सतुष्ट होकर यहाँ से लौट जाना पडता था, क्योकि यहाँ के जगल घने तथा मार्ग दुर्गम थे। जब इब्राहिम खाँ बिहार का सूबेदार बनाया गया, तो जहाँगीर ने उसे कोकरा पर आक्रमण कर तत्कालीन राजा दुर्जनशाल को अपदस्थ करने का आदेश दिया ताकि राज्य के सभी हीरो तथा हीरे की खानो पर मुगल-अधिकार हो सके। सूबेदार बनने के पश्चात् इब्राहिम खाँ ने शीघ्र ही कोकरा पर आक्रमण कर दिया। पहले की तरह इस बार भी दुर्जनशाल ने कुछ हाथी तथा हीरे इब्राहिम खाँ के पास भिजवाए, पर खाँ ने उन्हें स्वीकार नही किया और राज्य के ऊपर पूरी शक्ति के साथ अचानक हमला बोल दिया। दुर्जनशाल की सेना तैयार भी नही हो सकी थी कि मुगलो की सेना उस पर चढ आई। दुर्जनशाल की खोज होने लगी। अतत. उसे एक घाटी मे अपने भाई तथा विमाताओ के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। इब्राहिम खाँ के हाथ दुर्जनशाल के कोषागार के सारे हीरे तथा तेईस हाथी लगे। इस वीरता तथा उपलब्धि से प्रसन्न होकर जहाँगीर ने इब्राहिम खाँ को "फतेहजग" की उपाधि प्रदान की और उसका मसब चार हजार सवार का कर दिया।[१०]

दुर्जनशाल को बदी बनाकर दिल्ली से ग्वालियर भेज दिया गया, जहाँ उसे बारह वर्षो तक रखा गया। एक बार किसी हीरे की ठीक-ठीक परख नही होने के कारण दरबार मे हीरे के पारखियो के बीच विवाद उठ खडा हुआ। उस हीरे की परख के लिए दुर्जनशाल को बुलाया गया। उसने सदेहास्पद हीरे और एक सच्चे हीरे को दो अलग-अलग भेडो के सीगो मे बाँधकर उन्हे लडा दिया। जो हीरा नकली था, वह टूट गया। दुर्जनशाल की परख करने की इस रीति से प्रसन्न होकर शहशाह ने उसे तथा उसके सभी साथियो को मुक्त कर दिया तथा दुर्जनशाल को "शाह" की पदवी भी प्रदान की। दुर्जनशाल पुन शासनारूढ हुआ। अब उसे प्रतिवर्ष रु० ६०००) मुगल-शासन को देने पडते थे।[११]

दुर्जनशाल के परवर्ती राजाओ ने कर देना बन्द कर दिया, फलत मुहम्मद शाह के शासन-काल (१७१९-१७४८) मे बिहार के सूबेदार सरबलन्द खाँ ने छोटानागपुर पर चढाई की। सन् १७३१ ई० मे सूबेदार फखरुद्दौला ने भी छोटानागपुर पर आक्रमण किया। इस प्रकार छोटानागपुर मुस्लिम प्रभाव मे आता गया और यहाँ मुसलमान बसने लग गए। कहा जाता है कि राजा दुर्जनशाल मुक्त होकर जब छोटानागपुर लौट रहे थे, तो उनके साथ राजपूत सैनिक तथा पुजारी ब्राह्मण भी आए। इन लोगो ने राज्य के सगठन मे राजा की सहायता की, अतः

१० तुजक-इ-जहाँगीरी (१९५२), पृष्ठ १०८-१०९।

११ शरत् चन्द्र राय, दि मुडाज ऐण्ड देयर कट्री (१९१२) पृष्ठ १५२।

इन्हे जागीरें दी गईं। ये लोग ही आगे चलकर जमींदार कहलाए।

ब्रिटिश शासन-काल

सन् १७६५ ई० मे सम्राट् शाह आलम द्वितीय के द्वारा बगाल, बिहार तथा उडीसा की दीवानी ईस्ट इडिया कम्पनी को प्रदान की गई, जिसमे छोटानागपुर बिहार के एक अग के रूप मे सम्मिलित था। सन् १७६९ ई० मे पहली बार छोटा-नागपुर मे अंग्रेजो का सम्पर्क स्थापित हुआ, जब कप्तान कैमक का आगमन हजारीबाग मे हुआ। लगभग सन् १७६१-६२ ई० मे मराठा शासक माधवराव के प्रभाव के कारण रामगढ का महत्त्व बढ गया। सन् १७६९ ई० मे पलामू के राजा तेजसिंह को उनके शत्रुओ ने अपदस्थ कर दिया, अत उसने कप्तान कैमक से भेंट की। लेफ्टिनेंट गोडार्ड के अधीन एक सेना पलामू आई, जिसने तेजसिंह को पुन सत्तारूढ कर सपूर्ण पलामू को अपने कब्जे मे ले लिया। पलामू का राजा रामगढ को कर दिया करता था, पर कप्तान कैमक ने यह व्यवस्था कर दी कि वह सीधे कम्पनी को कर दे। आगे चलकर पलामू राजा की सहायता से कप्तान कैमक ने रामगढ के राजा को भी कम्पनी के अधिकार मे ले लिया।[12]

नागवंशी राजा दृपनाथ शाही ने कप्तान कैमक को पलामू-विजय मे सहायता प्रदान की थी। साथ ही उसने कम्पनी का अधिकार भी स्वीकार कर लिया। अब उसे कम्पनी को प्रतिवर्ष बारह हजार रुपए कर के रूप मे देने पडते थे। पर कर नही चुकाने के कारण सन् १७७३ ई० मे छोटानागपुर पर पुन चढाई हुई। राजा ने बारह हजार रुपये के स्थान पर अब पद्रह हजार एक रुपए कर देना स्वीकार कर लिया। आतरिक प्रशासन पर राजा का अधिकार पूर्ववत् बना रहा। राजा ने यह कबूलियत भी लिख दी कि छोटानागपुर मे यात्रा करने वाले यात्रियो की रक्षा तथा चोर-डाकुओ के आतक को दबाने का भार राज्य पर होगा। पर, इन कार्यों मे राजा को सफलता नही मिली। वह कर देने मे भी पिछड गया। राजा ने यहाँ के निवासी असंतुष्ट थे ही, जिसकी शिकायत चतरा तक पहुँच चुकी थी। इस असतोष के कारण सन् १७८९ ई० मे आदिवासियो का विद्रोह हुआ, जो बड़ी कठिनाई से दबाया जा सका।[13]

सन् १७८० ई० मे कप्तान कैमक के स्थान पर चैपमैन का आगमन हुआ, जो छोटानागपुर का प्रथम असैनिक प्रशासक था। चैपमैन, जज, मजिस्ट्रेट तथा जिले का कलक्टर भी था। उसकी अदालत बारी-बारी से शेरघाटी तथा चतरा मे लगती थी। इस समय रामगढ बटालियन की स्थापना की गई, जिसका केन्द्र हजारीबाग था। चैपमैन के अधिकार-क्षेत्र के अन्तर्गत रामगढ, केन्दी, कुडा, खडगडीहा, सम्पूर्ण पलामू,

१२ एस० डी० प्रसाद, डिस्ट्रिक्ट सेंसस हैंड बुक, राँची १९६१, पृष्ठ २।
१३ वही, पृष्ठ ३।

चकाई, पाचेत तथा शेरघाटी के आस-पास के इलाके थे।[१४]

छोटानागपुर के महाराजा तथा उनके भाइयो मे झगडा शुरू हो गया। इस झगडे के पीछे महाराजा के दीवान दीनदयालनाथ सिह का हाथ था। आदिवासी तो पहले से असतुष्ट थे ही, अत वे भी इस झगडे का लाभ उठाने को उद्यत हो गए। पर यह समाचार अग्रेजो को मिल गया, अत' सन् १८०७-१८०८ ई० मे मेजर रफसेज के अधीन एक सेना भेजी गई। दीवान पहले तो भाग निकलने मे सफल हो गया, पर वाद मे वह गिरफ्तार कर लिया गया। महाराजा ने वकाया कर चुका दिया और अपने भाइयों से समझौता भी कर लिया। सन् १८०९ ई० मे यहाँ छः पुलिस थाने वनाए गए। यही से आतरिक प्रशासन पर अग्रेजो का हस्तक्षेप प्रारभ हो गया।[१५]

आदिवासियो के वीच व्याप्त असतोष की आग भीतर-ही-भीतर सुलगती रही, जिसका विस्फोट सन् १८३१-३२ के कोल आदोलन (लरका आदोलन) मे हुआ। इसका प्रधान कारण मुस्लिम तथा सिख ठेकेदारो का मुडाओ के प्रति अपमानजनक व्यवहार था। तमाड के समीप एक गाँव मे मुडा लोग जमा हुए। इन लोगो ने मिलकर मुसलमान तथा सिख ठेकेदारो को लूटा तथा उनकी सम्पत्ति को काफी नुकसान पहुँचाया। यह आदोलन राँची जिले के अनेक हिस्सो मे फैल गया। आदोलन-कारियो ने गैर-आदिवासियो (सदान) के साथ अमानुषिक तथा वर्वर व्यवहार किया। मार-काट काफी दिनो तक चलती रही। यह आदोलन सन् १८३१ ई० में प्रारभ हुआ था, पर इसे सन् १८३२ मे काफी खून-खरावी के पश्चात् कप्तान विलकिन्सन के द्वारा दवाया जा सका।

इस कोल आदोलन से शिक्षा ग्रहण कर अग्रेजो ने प्रशासन की सुविधा को ध्यान मे रखकर "साउथ वेस्ट फ्रटीयर एजेन्सी" की स्थापना की, जिसका मुख्यालय लोहरदगा वनाया गया। इस एजेन्सी के अधीन आज का लगभग सपूर्ण छोटानागपुर प्रमडल था। इसकी देख-रेख एक एजेन्ट के द्वारा की जाती थी, जो एजेन्ट टू दि गवर्नर जनरल कहलाता था। आगे चलकर इस पद का नाम सन् १८५४ ई० मे कमिश्नर कर दिया गया। पहले एजेन्ट के अधीन प्रिंसिपल एसिस्टेंट टू दि एजेन्ट हुआ करता था। सन् १८६१ ई० मे इस पद के स्थान पर डेपुटी कमिश्नर पदनाम का प्रयोग प्रारम्भ हो गया।[१६]

अव छोटानागपुर पूर्णत अग्रेजो के अधिकार मे था। सन् १८४५ ई० मे चार ईसाई मिशनरियो का जर्मन से यहाँ आगमन हुआ। अभी यहाँ चार ईसाई मिशन सक्रिय हैं जिनके द्वारा यहाँ लाखो आदिवासियो को ईसाई धर्म मे दीक्षित किया जा चुका है।

१४ एस० डी० प्रसाद, डिस्ट्रिक्ट सेंसस हैंड वुक राँची, १९६१, पृष्ठ ३।

१५ वही, पृष्ठ ३।

१६ एस० डी० प्रसाद, डिस्ट्रिक्ट सेंसस हैंड वुक राँची, १९६१, पृष्ठ ३।

१८५७ का विद्रोह

हजारीबाग में स्थित देशी सिपाहियों की सातवीं तथा आठवीं कम्पनी ने ३ जुलाई, १८५७ को विद्रोह कर दिया। जब यह समाचार कर्नल डाल्टन (रांची के कमिश्नर) को प्राप्त हुआ, तो उसने रांची से लेफ्टिनेंट ग्राहम को रामगढ़ सेना की दो पैदल कम्पनियों, घोड़सवारों तथा दो तोपों के साथ विद्रोह शान्त करने के लिए हजारीबाग भेजा। १ अगस्त को यह सेना वहाँ से चली। इस बीच हजारीबाग की विद्रोही सेना ने रांची की ओर कूच कर दिया। जब यह समाचार ग्राहम के सैनिकों को मिला, तो उन लोगों ने भी ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और वे रांची की तरफ लौटने लग गए। लेफ्टिनेंट ग्राहम कुछ वफादार सैनिकों के साथ ७ अगस्त को हजारीबाग बड़ी मुश्किल से पहुँच सका।

लेफ्टिनेंट ग्राहम की विद्रोही सेना रांची पहुँच गई। इन लोगों ने डोरण्डा में केन्द्रित सेना को उभाड़ा, फलतः रांची में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भयंकर विद्रोह भड़क उठा। विद्रोहियों ने डिप्टी कमिश्नर की कचहरी तथा अन्य कार्यालयों को जला डाला और सरकारी खजाने को लूट लिया। जेल से कैदी मुक्त कर दिए गए। यहाँ की सेना पर अंग्रेजों का विश्वास नहीं रह गया, फलतः कर्नल डाल्टन तथा अन्य अंग्रेज अधिकारी हजारीबाग भाग गए। विद्रोहियों को यह आशा थी कि हजारीबाग की सेना उनके साथ हो जाएगी, पर जब हजारीबाग की सेना रांची नहीं आई, तो उन लोगों ने शाहाबाद के विद्रोही नेता बाबू कुँवरसिंह के पास पहुँचने का निश्चय किया। पर यह सेना बाबू कुँवरसिंह के पास नहीं पहुँच सकी, क्योंकि चतरा में २ अक्तूबर, १८५७ को उनकी मुठभेड़ मेजर इंग्लिश की सेना से हुई और उन्हें पराजित होना पड़ा।[१७]

इस विद्रोह में बड़कागढ़ के ठाकुर विश्वनाथ शाही तथा भरनो के जमींदार पाण्डेय गणपत राय ने महत्त्वपूर्ण भाग लिया था। विद्रोह शान्त होने पर इन दोनों स्वातंत्र्य-सेनानियों को फाँसी की सजा दी गई।

१८५७ के पश्चात् की प्रमुख घटनाएँ

जमींदारों के द्वारा बेगारी प्रथा के प्रारम्भ तथा मालगुजारी में अवैधानिक वृद्धि के कारण यहाँ के निवासियों के बीच असंतोष व्याप्त होने लगा, जिसकी परिणति "सरदार लड़ाई" में हुई। सन् १८८७ ई० तक इस "लड़ाई" ने उग्र रूप धारण कर लिया, जिसमें उराँव, मुंडा तथा किसान सभी भाग ले रहे थे। इन लोगों ने जमींदारों को मालगुजारी देना बन्द कर दिया। समझौते के लिए लेफ्टिनेंट गवर्नर सर स्टुअर्ट

१७ एस० डी० प्रसाद, डिस्ट्रिक्ट सेंसस हैंड बुक रांची, १९६१, पृष्ठ २।

वेली का सन् १८९० ई० मे यहाँ आगमन हुआ, पर इस समस्या का कोई समाधान नही निकल सका।

सन् १८९५ ई० मे यह आन्दोलन अपनी चरम-सीमा पर था। इसी समय बिरसा मुंडा नामक आदिवासी नेता का प्रादुर्भाव हुआ। बिरसा ने जो आन्दोलन चलाया वह भूमि तथा धर्म दोनो से सम्बन्धित था। बिरसा ईसाई पादरियो के भी विरोधी थे। उन्होने यहाँ के लोगो को यह सदेश दिया—"यहाँ की भूमि के स्वामी हम हैं। इसके लिए किसी को भी मालगुजारी न दी जाय। हमे जागना चाहिए और गैर-आदिवासियो को यहाँ की भूमि से निकाल बाहर करना चाहिए ताकि हम अपना शासन स्वय सँभाल सकें। ससार मे ईश्वर सिर्फ एक है अत अन्य भगवानो तथा प्रेत आदि की पूजा बन्द की जाय। हमे स्वच्छ तथा सच्चा जीवन व्यतीत करना चाहिए। हत्या, चोरी, झूठ आदि महापाप है।"

बिरसा का यह दावा भी था कि (बिजली की कडक के समय) उन्हे ईश्वर से सत्प्रेरणा प्राप्त हुई है और वह ईश्वर दूत है। आगे चलकर उन्होने अपनी दैविक शक्ति का परिचय भी लोगो को दिया, फलत वह भगवान कहे जाने लग गए। बिरसा के बढते हुए प्रभाव के कारण अग्रेज चिन्तित हुए, क्योकि बिरसा के अनुयायिओ ने सशस्त्र क्रांति प्रारम्भ कर दी थी। २ अगस्त, १८९५ ई० को बिरसा अपने अनेक साथियो के साथ बन्दी बनाए गए। सन् १९०० ई० मे उनकी मृत्यु जेल मे हैजे से हो गई, ऐसा कहा जाता है।[१८]

विसुनपुर थाना के जतरा उराँव ने सन् १९१४ ई० मे "टाना भगत आन्दोलन" शुरु किया। ईसाई धर्म स्वीकार कर लेनेवाले आदिवासियो की आर्थिक अवस्था अन्य आदिवासियो की अपेक्षा तेजी से सुधरने लगी, फलत आन्दोलनकारियो ने अग्रेजी शासन के साथ असहयोग प्रारम्भ कर दिया। इन्होने अपने को महात्मा गाधी का अनुयायी बताया। साथ ही इन्होने सादगी तथा पवित्रता का सदेश लोगो को दिया। टाना भगत मादक द्रव्य, मांस, नृत्य, सगीत तथा शिकार से दूर रहते है। ये सिर्फ टाना भगत के द्वारा बनाया गया भोजन ही खाते है तथा विवाह अपनी जाति के बाहर नही करते।[१९]

काग्रेस के द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन मे भाग लेने के कारण टाना भगतों को काफी कष्ट उठाने पडे, फलस्वरूप स्वतन्त्रता के पश्चात् इनकी स्थिति सुधारने के लिए अनेक उपाय किए जा रहे है।

आज का सपूर्ण छोटानागपुर विशेषत राँची एक औद्योगिक क्षेत्र के रूप मे परिवर्तित हो गया है, जहाँ छोटी-बडी घटनाएँ तथा गतिविधियाँ होती ही रहती है,

१८ एम० डी० प्रसाद, डिस्ट्रिक्ट सेंसस हैंड बुक राँची, १९६१, पृष्ठ ४।

१९ वही, पृष्ठ ४।

जिनका प्रभाव यहाँ के निवासियो पर तेजी से पड रहा है। ऐसी स्थिति मे यहाँ छोटे-मोटे आन्दोलनो का होना स्वाभाविक ही है। कभी-कभी "झारखण्ड अलग राज्य" की माँग भी जोर पकड लेती है। सन् १९६७-६८ मे छोटानागपुर से गैर-आदिवासियो को निकाल बाहर करने के आन्दोलन ने राँची जिले को विशेष रूप से प्रभावित किया। इसी समय से बिरसा जो ईसाई धर्म तथा पादरियो के विरोधी थे, ईसाइयो के भी प्रेरणा-स्रोत बन गए हैं। यहाँ के आदिवासी भी अब दो गुटो मे विभक्त हो गए हैं—(१) हिन्दू आदिवासी तथा (२) ईसाई आदिवासी। इन दो विशिष्ट घटनाओ ने छोटानागपुर की राजनीति को एक नूतन दिशा प्रदान की है।

(ख) नागपुरी साहित्य का सामान्य परिचय

नागपुरी भाषा की भाँति नागपुरी साहित्य का अध्ययन भी अब तक एक उपेक्षित विषय रहा है, फलत. नागपुरी साहित्य का कोई इतिहास उपलब्ध नही। सत्य तो यह है कि आज तक छोटानागपुर का ही कोई इतिहास तैयार नहीं किया जा सका, तो यहाँ की एक भाषा के साहित्य के इतिहास-लेखन की ओर किसी का ध्यान क्यो आकर्षित होता ? छोटानागपुर सदा से उपेक्षित रहता आया है, जबकि यहाँ की भूमि रत्नगर्भा मानी जाती है। छोटानागपुर की सस्कृति से परिचय प्राप्त करने के लिए अब यह आवश्यक हो गया है कि यहाँ की विभिन्न भाषाओ तथा उनके साहित्य के अध्ययन, प्राचीन स्थलो तथा अवशेषो के पुरातात्त्विक अनुसधान तथा यहाँ के इतिहास के वास्तविक स्वरूप को ढूँढ निकालने के निमित्त विद्वानो तथा अनुसधानो की दृष्टि इस ओर आकर्षित की जाय। इससे बहुत-सी लुप्त परम्पराओ तथा आश्चर्य-जनक ऐतिहासिक तथ्यो का उद्‌घाटन हो सकेगा। जिस दिन ऐसा होगा, उस दिन निश्चय ही लोगो की यह धारणा निर्मूल प्रमाणित होकर रहेगी कि छोटानागपुर का अपना ऐसा कोई वैशिष्ट्य नहीं, जिस पर वह गर्व कर सके।

"छोटानागपुर की पहाडियो मे सीतावेंगा की गुफा मे द्वितीय या तृतीय शताब्दी ई० पू० की एक नाट्यशाला मिली है, जो "नाट्य-शास्त्र" के वर्णन से मेल खाती है।"[२०] इससे यह विश्वास दृढ होता है कि छोटानागपुर मे साहित्य की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है, पर यह परम्परा किन्ही कारणो से लुप्तप्राय हो गई है। इसी साहित्यिक-शृखला की एक कडी नागपुरी साहित्य भी है, जिसके सम्बन्ध मे कतिपय विद्वानो का यह मन्तव्य रहा है कि इसमे कुछ भी नही। परन्तु, नागपुरी साहित्य के प्रेमी तथा अध्येता यह भली-भाँति जानते हैं कि नागपुरी का साहित्य बिखरा हुआ भले ही क्यो न हो, किन्तु मात्रा तथा गुण की दृष्टि से उसे हीन नही माना जा सकता। वास्तविकता तो यह है कि मैथिली को छोडकर बिहारी परिवार की किसी भी भाषा

२० डॉ० शान्तिकुमार नानूराम व्यास, सस्कृत और उसका साहित्य (१९५७), पृष्ठ ६७।

का साहित्य गीतो की दृष्टि से नागपुरी साहित्य के समकक्ष नही।

नागपुरी साहित्य की दो निश्चित धाराएँ हैं —(१) लोक-साहित्य तथा (२) शिष्ट-साहित्य।

नागपुरी मे असख्य लोकगीत तथा लोक कथाएँ प्रचलित है। यदि इन लोक-गीतो तथा लोक कथाओ का सकलन और विश्लेषण किया जाय, तो यह प्रकट हो जाएगा कि नागपुरी लोक-साहित्य का भाण्डार कितना सम्पन्न है। पर, दुर्भाग्यवश अब तक ऐसा नही हो सका है। लोक-साहित्य के सकलन की दिशा मे अब तक दो लघु प्रयास किए गए हैं :—

(१) काथलिक मिशन, राँची के रेवरेण्ड फादर बुकाउट ने "सदानी फोक-लोर स्टोरीज" नामक एक सकलन साइक्लोस्टाइल कर प्रकाशित किया था, जिसमे ग्यारह लोक-कथाएँ है।

(२) रेवरेण्ड एफ० हान, डब्लू० जी० आर्चर, आई० सी० एस० तथा धरमदास लकडा ने "लील खो-र आ खे-खेल" नामक ग्रथ का प्रकाशन दो खण्डो मे पुस्तक भण्डार, लहेरियासराय से करवाया था, जिनमे उराँवो के बीच प्रचलित २६६० (दो हजार छ सौ साठ) गीतो का सकलन किया गया है। इन गीतो मे अधिकाश गीत नागपुरी भाषा के है। इस ग्रथ के प्रथम खण्ड का प्रकाशन सन् १९४० ई० तथा द्वितीय खण्ड का प्रकाशन सन् १९४१ ई० मे हुआ।

इन प्रयासो के पश्चात् लोक साहित्य के सकलन की दिशा मे कोई उल्लेखनीय प्रगति नही हुई है, अत. यह स्पष्ट है कि अनुसधान की दृष्टि से नागपुरी लोक-साहित्य अभी भी एक अछूता क्षेत्र है।

लोक-साहित्य के अतिरिक्त नागपुरी मे शिष्ट साहित्य भी प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध है। यह ग्रथ इसी विषय से सम्बन्धित है। यहाँ यह जिज्ञासा स्वभाविक है कि लोक-साहित्य और शिष्ट साहित्य के बीच क्या भेद है? इस विषय पर निम्न-लिखित विचार ध्यान देने योग्य है —

"साधारणत. मौखिक परम्परा से प्राप्त और दीर्घकाल तक स्मृति के बल पर चले आते हुए गीत और कथानक" लोक-साहित्य कहे जाते हैं। स्थूल दृष्टि से लोक-साहित्य अलिखित परम्परा प्राप्त साहित्य है, परिनिष्ठित साहित्य लिपिवद्ध। इसी कारण एक विद्वान् ने लोक-साहित्य को अपौरुपेय भी कहा है। क्योकि उसके रचयिता का पता नही, इसके अलावा वह किसी एक रचयिता की वैयक्तिक अभिरुचि से सीमित न होकर समाज की भावनाओ का लेखा-जोखा सामने रखता है।"[२१]

"लोक-साहित्य तथा परिनिष्ठित साहित्य का भेद मूलत वही है, जो एक बहती हुई सरिता तथा एक चारदीवारी से बँधे हौज का। परिनिष्ठित साहित्य नियमो

२१ बैजनाथ सिंह "विनोद", भोजपुरी लोक-साहित्य एक अध्ययन (१९५८), पृष्ठ २१९।

के जाल-जाल से आबद्ध रहता है, उसकी अभिव्यंजना शैली एक निश्चित ढाँचे पर चलती है, उसमें कृत्रिम रूप से खराद-तराश करके हठात् शैलीगत रमणीयता लाने की कोशिश की जाती है, जो नैसर्गिक रमणीयता नहीं। फिर भी नहरी वातावरण में इन्हीं की कदर होती है। वस्तुतः परिनिष्ठित साहित्य को जन्म देने का श्रेय नागरिक लोगों को ही है। वेदों के समय लोक-साहित्य तथा परिनिष्ठित साहित्य जैसा भेद दिखलाई नहीं पड़ता। समूचा वैदिक साहित्य—प्रमुखतः संहिता भाग—मूलतः लोक-साहित्य ही है। महाभारत में लोक-साहित्य के प्रचुर बीज भरे पड़े हैं। कदाचित् भारतीय साहित्य में लोक-साहित्य तथा परिनिष्ठित साहित्य की भेदक रेखा वाल्मीकि रामायण है। इसके बाद तो लोक-साहित्य तथा परिनिष्ठित साहित्य के बीच की दूरी उत्तरोत्तर बढ़ती गई। किन्तु इस दूरी के बावजूद भी परिनिष्ठित साहित्य को लोक-साहित्य से प्रेरणा और नया बल मिलता रहा है।'[२२]

ऊपर शिष्ट साहित्य को ही परिनिष्ठित साहित्य कहा गया है। इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि शिष्ट साहित्य मूलतः लिपिबद्ध होता है और वह लोक-साहित्य की तरह मौखिक परम्परा तथा स्मृति का सहारा नहीं लेता। इस प्रकार शिष्ट साहित्य के अन्तर्गत हस्तलिखित, मुद्रित तथा रेडियो द्वारा प्रसारित रचनाएँ आ जाती हैं। वस्तुतः लोक-साहित्य तथा शिष्ट साहित्य के बीच ऐसी कोई सर्वमान्य विभाजक-रेखा नहीं खींची जा सकती,[२३] जिससे यह ज्ञात हो सके कि किसी साहित्य का कितना भाग शिष्ट साहित्य है और कितना भाग लोक-साहित्य, क्योंकि प्रारम्भिक अवस्था में प्रत्येक साहित्य लोक-साहित्य के रूप में ही पनपना प्रारम्भ करता है, अतः मैंने उपर्युक्त निकष को स्वीकार कर इस प्रबन्ध में शिष्ट साहित्य के अन्तर्गत वैसी ही रचनाओं को स्थान देने तथा उन पर विचार करने का प्रयास किया है, जो हस्तलिखित, मुद्रित तथा रेडियो के द्वारा प्रसारित है।

नागपुरी में शिष्ट साहित्य की रचना का क्रम कब से आरम्भ हुआ, इस सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक कुछ भी नहीं कहा जा सकता। नागपुरी का प्राचीन साहित्य

२२ बैजनाथ सिंह, "विनोद", भोजपुरी लोक-साहित्य : एक अध्ययन (१९५८), पृष्ठ २१८।

२३ *इन मध्ययुग के संतों का लिखा हुआ साहित्य—कई बार तो वह लिखा भी नहीं गया, कबीर ने तो* "मसि-कागद" छुआ ही नहीं था।—लोक साहित्य कहा जा सकता है या नहीं? आजकल हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रंथों में इन संतों की रचनाएँ विवेच्य मानी जाती हैं, अथ च इनकी गणना अभिजात और परिष्कृत साहित्य में होने लगी है। सीमा-रेखा कहाँ है? क्यों कबीर की रचना लोक-साहित्य नहीं है? सच पूछा जाय तो कुछ थोड़े से अपवादों को छोड़कर मध्ययुग के सम्पूर्ण देशीभाषा के साहित्य को लोक-साहित्य के अन्तर्गत घसीट कर लाया जा सकता है। इसीलिए इस देश में लोक-साहित्य की खोज का काम बहुत जटिल है। केवल परिष्कृत और लौकिक कहे जाने वाले साहित्य की अध्ययन-प्रणाली को ही भेदक माना जा सकता है। लोक-साहित्य मौखिक परम्परा से प्राप्त और संगृहीत होता है, जबकि मध्ययुग का तथाकथित परिष्कृत साहित्य नव पाण्डुलिपियों के आधार पर संपादित होता है। डॉ०—हजारी प्रसाद द्विवेदी, जनपद (अक्तूबर १९५२) पृष्ठ ७१।

तथा उसका इतिहास उपलब्ध नही, अत. किसी सर्वमान्य निष्कर्ष का दावा किया जाना अभी सभव नही। नागपुरी साहित्य-प्रेमियो के बीच एक मान्यता यह प्रचलित है कि नागपुरी के ज्ञात प्रारम्भिक कवि हनूमान सिंह थे। यह भी कहा जाता है कि बरजूराम पाठक हनूमान सिंह के समकालीन थे। सन् १८३१ ई० के कोल-विद्रोह को बरजूराम पाठक ने अपनी आँखो देखा था। इस विषय पर उनके गीत भी उपलब्ध हैं। पुराने लोगो के अनुसार हनुमान सिंह बरजूराम पाठक से उम्र मे ४० वर्ष बडे थे, अत यह अनुमान किया जा सकता है कि हनूमान सिंह सन् १८०० ई० के आस-पास मे अवश्य जीवित रहे होगे। हनूमान सिंह नागपुरी के दुर्जय गायक एव कवि थे। एक बार हनूमान सिंह तथा बरजूराम पाठक के बीच सगीत-गीत प्रतियोगिता हुई थी, जिसमे हनूमान सिंह को परास्त होना पडा था। कालान्तर मे हनूमान सिंह ने पुन साधना कर बरजूराम पाठक* को सगीत-गीत प्रतियोगिता मे पछाडा था। प्रतियोगिता की बात न भी मानी जाय, तो बरजूराम पाठक का हनूमान सिंह का समकालीन होना निश्चित है, अत प्रचलित धारणा का आधार लेकर यह कहा जा सकता है कि नागपुरी शिष्ट साहित्य की रचना का श्रीगणेश सन् १८०० ई० के पूर्व अवश्य हो गया होगा। इसके पूर्व भी नागपुरी के कवि तथा लेखक रहे होंगे, पर न तो कही उनका उल्लेख ही प्राप्त होता है और न उनका कृतित्व।

'नागपुरी साहित्य मे गीतो की प्रचुरता है। नागपुरी के गीत मुख्यत वैष्णव गीत हैं और इनमे राधा तथा कृष्ण का प्राय किशोर तथा यौवन ही चित्रित हुआ है। साथ ही रामकथा तथा शिव-महिमा भी नागपुरी गीतो की उपजीव्य रही हैं। हनूमान सिंह के समय मे गीतो का विषय रहस्यवाद से भी प्रभावित प्रतीत होता है, क्योकि उस समय के गीतो पर कबीर की छाप दिखलाई पडती है। हनूमान सिंह के समकालीन कवियो ने भी कृष्णलीला, राम-कथा तथा शिव-महिमा पर ही गीत लिखे हैं। उस समय के प्रसिद्ध कवियो मे बरजूराम पाठक, लेदाराम तथा घासी महथ के नाम लिए जा सकते हैं। हनूमान सिंह के पश्चात् अभिमन (पूरा नाम महथा अभिमन प्रसाद सिंह) तथा सोबरन को विशेष ख्याति मिली। इनके गीत मुख्यत कृष्णलीला तथा राम-कथा पर आधारित हैं, पर सोबरन के गीतो मे रहस्यवाद की छाप भी दिखलाई पडती है।'

घासी राम नागपुरी के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हुए। उनका जन्म (उनके पुत्र दुलाम राम के अनुसार) सन् १८५९ (सवत् १९१६) मे राँची जिला के करकट नामक गाँव मे हुआ था। ऐसा कहा जाता है कि घासीराम ७१ वर्ष की आयु तक जीवित

*बरजराम नामक एक कवि पचपरगनिया मे भी हुए हैं। इनका जन्म सन् १७२० ई० के आस-पास बाघमुंडी थाना के अन्तगत मारजनहातु मे हुआ था। इससे भी स्पष्ट है कि नागपुरी मे साहित्य-रचना का क्रम काफी पहले आरम्भ हो चुका था, क्योकि पचपरगनिया नागपुरी की ही एक विभाषा है।

थे, इसका अर्थ है कि सन् १९३० ई० के आस-पास उनका देहावसान हुआ होगा। पर उनके पुत्र दुलामराम का कहना है कि उनके पिता घासीराम ६७ वर्ष तक जीवित रहे। इस दृष्टि से घासीराम की मृत्यु का वर्ष १९२३ ई० माना जा सकता है। इन्हें मिड्ल तक की शिक्षा मिली थी और जीविका अर्जित करने के लिए इन्होंने शिक्षक तथा पोस्टमास्टर के काम किए थे। परन्तु इनकी काव्य-साधना की धूम यहाँ के जमींदारों के यहाँ मच गई और घासीराम ने नौकरी छोड़ दी। घासीराम की प्रकाशित पुस्तक "नागपुरी फाग शतक" है, अपितु यों कहना चाहिए कि घासीराम नागपुरी के ऐसे प्रथम कवि हुए जिनकी रचना उनके जीवन-काल में ही प्रकाशित हो सकी। इस पुस्तक की प्रति अब उपलब्ध नहीं। इसकी प्रति मेरे देखने में आई है, जिससे यह पता चलता है कि राँची जिला के मसमानो ठाकुरगाँव के लाल गोकुलनाथ शाहदेव घासीराम के आश्रयदाता थे। लाल साहब ने ही "नागपुरी फाग शतक" का प्रकाशन करवाया था। घासीराम के अधिकांश गीत कृष्ण-लीला, राम-कथा तथा शिवस्तुति से संबंधित हैं। इन्होंने कुछ गीत अपने आश्रयदाता तथा उनके परिवार के सम्बन्ध में भी लिखे हैं। घासीराम के गीतों में शृंगार-रस भी अपने निखार पर है, जिसमें संयोग तथा वियोग दोनों का मर्मस्पर्शी वर्णन है।

स्फुट गीत लिखने की परम्परा को छोड़कर प्रबन्धात्मक काव्य लिखने की दिशा में दुकपाल देवघरिया ने सर्वप्रथम प्रयास किया। "नलदमयंती-चरित", "श्री वत्स-चरित", तथा "महाप्रभु वासुदेव-चरित" इनकी मुख्य कृतियाँ हैं। इनमें से "नल-दमयंती-चरित" का धारावाहिक प्रकाशन 'आदिवासी" में हो चुका है। शेष दो रचनाएँ अप्रकाशित हैं। इसी शैली में महलीदास ने "सुदामा-चरित" लिखा। जयगोविन्द कृत" लंका काण्ड" को भी काफी ख्याति मिली, पर अब इसकी मुद्रित प्रति उपलब्ध नहीं। इन कवियों के अलावा फुटकल गीत लिखने वाले अनेक कवि हुए, जिनमें द्विज भोला, शीतलप्रसाद सिंह (अभिमन के पुत्र), लछमिनी, रुगटू मलार, पदुम तथा गदुरा आदि मुख्य हैं।

पाँच परगने में प्रचलित पचपरगनिया नागपुरी की एक विभाषा है, जिसपर बंगला की किंचित् छाप है। नागपुरी क्षेत्र में पचपरगनिया गीतों का भी अत्यधिक प्रचार है। इस बोली के दो उल्लेखनीय कवि बिनन्दिया तथा गौरांगिया हुए। इनके गीतों का संग्रह सिल्ली के राजाबहादुर श्री उपेन्द्रनाथ सिंहदेव ने "आदि झूमर संगीत" (१९५६) नामक पुस्तक में प्रकाशित करवाया है। कहा जाता है कि बिनंदिया वस्तुतः सिल्ली के परमार क्षत्रिय राजकुल में उत्पन्न हुए, जिनका वास्तविक नाम विनोद सिंह था। इन गीतकारों के सम्बन्ध में पुस्तक के "पूर्वाभास" में कहा गया है—"प्रस्तुत संग्रह में गौरांगिया और बिनंदिया के नाम से दो गीतकारों के सरस गीतों का संकलन है। दोनों में वही भक्ति-चेतना और प्रेम-माधुरी है, जो भारत के भिन्न-भिन्न वैष्णव

संतो की वाणी मे है। यह संग्रह स्पष्ट कर देता है कि भावधारा मे, पद लालित्य मे, सामयिक चेतना मे और साहित्य-प्रणयन मे, यह प्रदेश भी भारत के अन्य प्रदेशो के पांवो से पांव मिलाकर ही चल रहा था। न यह कभी पिछडा रहा था और न आज भी है।"

नागपुरी के शृंगारिक कवियो मे जगनिवास नारायण तिवारी अद्वितीय है। इनकी अप्रकाशित पुस्तक "रस-तरंगिणी" मे लगभग ६०० गीत हैं। तिवारी जी ने छन्द तथा अलंकार शास्त्र का अध्ययन किया था, यही कारण है कि उनकी रचनाओ मे वह क्लिष्टता आ गई है, जो सामान्य पाठको या श्रोताओ के लिए बोधगम्य नही, पर गीतो की कलात्मकता तथा उनमे भावो का जो गुंफन है, वे सहृदय साहित्यानुरागियो का मन सहज ही मोह लेते हैं।

नागपुरी मे यो तो अनेक गीतकार हुए, पर उनकी रचनाएँ उपलब्ध नही हो पाती। जिन गीतकारो की हस्तलिखित या मुद्रित रचनाएँ प्राप्त होती है, उनमे महंतदास, लोकनाथदेव, बुधु, उदयानाथ साय, भुलुराम, आनन्द, पूरण, बोधन, चन्द्रभानु, द्विज जीतनाथ, प्रयाग दास, तुलाम्वर साय, विशुनाथ साय, कन्हैयालाल, अर्जुन, देवचरन, गरही, बुधुवा, राधेकांत, गणेशदास, माधो, अधीन, लछुमन, भोला, वसुदेव सिंह, रघुनाथ दास, नारायण दास, रुक्मिणी, रतन, महिपति, नन्दलाल, रामकिष्टो, नरोत्तम, मधु, कान्दोराय, मोहितनन्दन, डोमन, विश्वनाथ, हरि, रामा, उदित नारायण सिंहदेव, रघुनाथ शरण सिंहदेव, गोपीनाथ मिश्र, दिवाकरमणि पाठक, 'मधुप', माकुरुगढी, जगधीप नारायण तिवारी, वनमाली नारायण तिवारी, रामूदास, देवघरिया, हुलास राम, एतव उरांव, कवि बालक, बानेश्वर साहु, करमचन्द भगत, डोमन राम, जगरनाथ सिंह, लक्ष्मण सिंह, प्रद्युम्न राय, खुदी सिंह तथा कपिल मुनि पाठक आदि हैं।

धनीराम बक्शी नागपुरी के अनन्य सेवक, गीतकार तथा गद्य लेखक हुए। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने यदि खडी बोली हिन्दी को व्यवस्था प्रदान की थी, तो धनीराम बक्शी ने नागपुरी के बिखरे हुए साहित्य को लुप्त होने से बचा लिया। चाईबासा मे रहकर बक्शीजी ने अपनी तथा नागपुरी गीतकारो की अनेक पुस्तिकाएँ प्रकाशित की, जो छोटानागपुर के घर-घर मे फैल गईं। इन पुस्तिकाओ के कारण लोगो मे एक जागृति तथा सुरुचि उत्पन्न हुई और यहाँ के लोगो ने अपनी नागपुरी भाषा तथा साहित्य का महत्त्व समझा।

नागपुरी मे गद्य-लेखन का प्रारम्भ सन् १६०० के आस-पास ईसाई मिशनरियो ने किया और इसके अग्रदूत रेवरेण्ड पी० इह्नेस हुए। धनीराम बक्शी की तरह काथलिक मिशन के पादरी पीटर शान्ति नवरंगी ने नागपुरी के उन्नयन के लिए श्लाघनीय प्रयास किए। यदि यह कहा जाय कि श्री नवरंगी ने नागपुरी के लिए अपने को समर्पित ही कर दिया तो कोई अत्युक्ति नही होगी।

स्वतन्त्रता के पूर्व तक नागपुरी साहित्यकार पुरानी परम्परा का पालन करते रहे थे, अर्थात् उनके साहित्य मे राधा-कृष्ण के प्रेम, राम-कथा, शिव-स्तुति तथा भक्ति को ही स्थान मिलता रहा। पर, स्वतन्त्रता-सग्राम की आग ने छोटानागपुर को भी प्रभावित किया और यहाँ के साहित्यकारो मे विषय-परिवर्त्तन के चिह्न परिलक्षित होने लग गए। ऐसे सकेत हमे शेख अलीजान मे पहले-पहल दिखाई पडते हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात् देश मे जागृति की एक नई लहर दौड गई। नागपुरी कवियों के सामने आधुनिक तथा नवीन विषयो का कोई अभाव नही था। यही कारण है कि नागपुरी साहित्यकारो ने आधुनिक समस्याओ पर पर्याप्त लिखा। इस पीढी के कवियो मे नईम उद्दीन मिरदाहा, अब्बासअली, पाण्डेय दुर्गानाथ राय, खुदी सिंह, बलदेव प्रसाद साहु, दु खहरण नायक, बटेश्वर साहु, केदारनाथ पाठक, लक्ष्मण राम गोप, योगेन्द्रनाथ तिवारी तथा प्रफुल्ल कुमार राय आदि प्रमुख है। इन्होंने छोटा-नागपुर के हृदय की धड़कनो को अपने गीतों तथा अपनी कविताओ मे स्पदित करने का सफल प्रयास किया है। "लव-कुश-चरित" बलदेव प्रसाद साहु का पुराने कथानक पर लिखा गया एक स्मरणीय प्रबन्धात्मक काव्य है।

सन् १९५७ ई० मे राँची मे आकाशवाणी का केन्द्र खुल जाने के कारण नागपुरी गद्य को पुन. विकसित होने का अनुकूल अवसर प्राप्त हुआ। सुशील कुमार, विष्णुदत्त साहु, स्व० किशोरी सिंह तथा श्रवण कुमार गोस्वामी के द्वारा लिखे गए रेडियो नाटक अत्यन्त लोकप्रिय हुए। यदा-कदा आकाशवाणी के द्वारा नागपुरी मे वार्त्ता तथा कहानियाँ भी प्रसारित होती है। इन कार्यक्रमो ने नागपुरी की ओर लोगों को आकृष्ट किया और साथ ही कुछ नई प्रतिभाएँ भी सामने आई है।

नागपुरी मे स्वतन्त्र रूप से लिखे गए नाटक प्राय मिलते ही नही। प्रो० विसेश्वर प्रसाद "केशरी" द्वारा लिखित "ठाकुर विश्वनाथ शाही" इस दिशा मे उत्साह-वर्द्धक प्रयास है।

नागपुरी भाषा-परिषद्, राँची के द्वारा "नागपुरी" नामक एक सोलह पृष्ठो के मासिक-पत्र का प्रकाशन अप्रैल, १९६१ मे किया गया था, परन्तु इसके चार ही अक प्रकाशित हो सके और इसका प्रकाशन बन्द हो गया। इस पत्र के आविर्भाव से नागपुरी साहित्य विशेषत नागपुरी गद्य के विकास को बल प्राप्त होने लगा था। "नागपुरी" के माध्यम से कुछ नए हस्ताक्षर भी सामने आए जिनमे सभी प्रकार के लोग-हैं। कहानीकार के रूप मे हरिनन्दन राम तथा प्रफुल्ल कुमार राय के नाम उल्लेख योग्य हैं। निबधकार के रूप मे योगेन्द्रनाथ तिवारी, शिवावतार चौधरी, भुवनेश्वर "अनुज", छुन्नूलाल अम्बिका प्रसाद नाथ शाहदेव, विनय कुमार तिवारी तथा प्रफुल्ल कुमार राय आदि प्रमुख हैं। आलोचको मे भवभूति मिश्र, श्रवण कुमार गोस्वामी तथा प्रो० विसेश्वर प्रसाद केशरी के नाम लिए जा सकते है।

अक्तूबर, १९६९ मे "नागपुरिया समाचार' नामक मासिक समाचार-पत्र का

प्रकाशन हुआ। यह पत्र भी कुछ ही अंकों के पश्चात् बन्द हो गया। नागपुरी साहित्य के विकास मे इस पत्र का योगदान विशेष नही, पर नागपुरी गद्य को लोकप्रिय बनाने मे इसने जो सहायता पहुँचाई, उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

नागपुरी गद्य के विकास मे "आदिवासी सकम", "अबुआ झारखण्ड" तथा "झारखण्ड समाचार" ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नागपुरी भाषा तथा साहित्य श्री राधाकृष्ण द्वारा सम्पादित "आदिवासी" (साप्ताहिक) का चिर ऋणी रहेगा, क्योकि यही एक ऐसा पत्र है, जिसने प्रारम्भ से ही नागपुरी भाषा तथा साहित्य के उत्थान मे अपने आपको दत्तचित्त कर रखा है।

इधर कुछ कवियो मे एक नई चेतना स्फुरित हो रही है। इन्होंने भी छन्द के बन्धन को अस्वीकार कर नूतन शैली मे आधुनिक कविताओ की रचना शुरू कर दी है। यह स्मरणीय है कि अब तक नागपुरी पद्य मे जो कुछ भी लिखा गया है, उनमे अधिकाश गीत ही हैं। पर इन दिनो गीतो के अलावा कविताएँ भी लिखी जा रही है। इसके सूत्रधार प्रफुल्ल कुमार राय माने जा सकते हैं। इस धारा के अन्य प्रमुख कवि "नहन" तथा "शशिकर" हैं।

नागपुरी भाषा तथा साहित्य पर हिन्दी के माध्यम से भी निरन्तर विचार-विमर्श होता ही रहता है। नागपुरी के इन शुभचिंतको मे स्व० पीटर शांति नवरगी, योगेन्द्रनाथ तिवारी, डॉ० रामखेलावन पाण्डेय, डी० लिट्, राधाकृष्ण, प्रो० विसेश्वर प्रसाद केशरी, शम्भु नारायण लाल, भवभूति मिश्र तथा कन्हैयाजी आदि हैं। इनमे से कुछ लोगो ने नागपुरी के कुछ प्रमुख कवियो का अपने निबन्धो मे मूल्याकन भी किया है।

जिस प्रकार बिहारी-भाषा परिवार की सदस्या होते हुए भी नागपुरी की प्रकृति अपनी अन्य भगिनी भाषाओ (मगही, मैथिली और भोजपुरी) से भिन्न है, उसी प्रकार नागपुरी साहित्य की भावभूमि भी मगही, मैथिली तथा भोजपुरी के साहित्य की तुलना मे विशिष्ट है, जिस पर समुचित ध्यान दिए बगैर नागपुरी साहित्य के महत्त्व को नही समझा जा सकता।

नागपुरी किसी विशेष जाति की भाषा नही। इसका प्रयोग सभी धर्मों के मानने वाले करते है। इसने यहाँ के आदिवासियो तथा गैर-आदिवासियो को समीप लाने मे सम्पर्क-सेतु का कार्य किया है। यही कारण है कि यह यहाँ की सम्पर्क-भाषा मानी जाती है। फल यह हुआ कि नागपुरी शिष्ट साहित्य के निर्माण मे हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, आदिवासी, गैर-आदिवासी तथा विदेशी मिशनरियो ने भी योगदान किया। इस सम्मिलित सहयोग ने नागपुरी शिष्ट साहित्य को एक ऐसी गरिमा तथा विशिष्टता प्रदान की है, जो बिहार की किसी भी भाषा के साहित्य को नसीब नहीं, क्योंकि मगही, मैथिली तथा भोजपुरी साहित्य की सर्जना मे मात्र हिन्दुओ का ही योग है।

आज शिष्ट साहित्य मे गीत, सगीत से दूर भागता जा रहा है, जब कि कभी

गीत और सगीत दोनो को अभिन्न तथा एक-दूसरे का पूरक माना जाता था। नागपुरी मे आज भी सगीत के अभाव मे गीत की कल्पना नही की जा सकती, क्योंकि प्रत्येक गीत गाने के लिए रचा जाता है और उसकी सफलता सगीत की कसौटी पर खरा उतरने मे ही है। इसी कारण यहाँ का प्रत्येक गीतकार सामान्यत सगीतकार भी होता है। यह परम्परा शताब्दियो से चली आ रही है। हनूमान सिह तथा बरजू राम पाठक के बीच जो प्रतियोगिता हुई थी, वह गीत तथा सगीत प्रतियोगिता थी। ऐसी प्रतियोगिताएँ आज भी होती हैं। नागपुरी साहित्य की यह विलक्षणता अन्यत्र दुर्लभ है।

पुस्तक-प्रकाशन का कार्य अब विशुद्ध व्यापारिक दृष्टिकोण से किया जा रहा है, फलत नागपुरी साहित्य के प्रकाशक नहीं मिल पाते। प्रकाशकों की इस उदासीनता के कारण अनेक प्रतिभा-सम्पन्न साहित्यकारों की रचनाएँ भी प्रकाश मे नहीं आ पा रहीं। हितैषी कार्यालय, चाईबासा के स्वामी धनीराम बक्शी की मृत्यु के कारण नागपुरी पुस्तको का प्रकाशन लगभग बन्द-सा हो गया है। जो अपनी किताब स्वयं छपवा सकते हैं, उनकी ही रचनाएँ पाठको तक पहुँच पाती है। इस दिशा मे प्रशासन के अतिरिक्त मन्त्रियों का ध्यान भी आकर्षित किया गया, परन्तु अब तक इसका कोई सुफल सामने नही आ सका है।

अनेक विपरीत परिस्थितियो तथा बाधाओ के रहते हुए भी नागपुरी भाषा तथा साहित्य का विकास गतिमान है। अनेक उत्साही व्यक्ति इसकी उन्नति के लिए प्रयत्नशील दीख पड रहे हैं, अत हमे विश्वास के साथ यह आशा करनी चाहिए कि नागपुरी भाषा तथा साहित्य का प्रगति-चक्र भविष्य मे और अधिक गतिशील हो उठेगा।

(ग) अध्ययन पद्धति

नागपुरी भाषा तथा साहित्य के अध्ययन-अनुसंधान की ओर विद्वानो अथवा अनुसधाताओ का ध्यान अब तक आकर्षित नही हो सका था। इतना ही नहीं, नागपुरी भाषा के सम्बन्ध में कतिपय विद्वानो के द्वारा जो भ्रान्त निष्कर्ष निष्पादित किए गए, उनका खंडन या विरोध भी किसी ने नही किया। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि नागपुरी किस सीमा तक उपेक्षित रही है। नागपुरी के साहित्य-सकलन की ओर भी किसी व्यक्ति या सस्था की दृष्टि नही मुड सकी। एक-दो व्यक्तियों ने इस दिशा में थोडी रुचि अवश्य प्रदर्शित की है, किन्तु उनके द्वारा सकलित साहित्य उनकी निजी सम्पत्ति है, जिसका सार्वजनिक होना अभी शेष है। चूँकि नागपुरी भाषा तथा साहित्य के सम्बन्ध मे इनके पहले कोई ठोस कार्य नहीं हुआ था, अत. जब इस शोध-कार्य का श्रीगणेश किया गया, तो ऐसा लगा कि सदर्भ-ग्रथो तथा सकलित साहित्य के अभाव मे यह प्रयास एक अनकही कहानी बनकर रह जाएगा। एक अछूते विषय में

अनुसधाता के समक्ष पग-पग पर हतोत्साहित करने वाली कितनी कठिनाइयाँ आ सकती हैं, उनका किंचित् आभास मुझे पहले भी था, परन्तु पूर्ण ज्ञान नही। इन विघ्नो को दूर करने के लिए एक विशिष्ट अध्ययन-पद्धति अपनानी पडी, जिसके प्रमुख अग निम्नलिखित हैं —

(१) क्षेत्रीय-कार्य
(२) पत्राचार
(३) व्यक्तिगत-सम्पर्क
(४) सूचनादाताओं का सहयोग
(५) सदर्भ-ग्रथो का अध्ययन
(६) विचार-विमर्श।

(१) क्षेत्रीय-कार्य

इस शोध-कार्य को सम्पन्न करने के लिए क्षेत्रीय-कार्य की सर्वाधिक सहायता लेनी पडी है। यह साहित्य-सकलन तथा सूचना-सग्रह के लिए अपरिहार्य प्रमाणित हुआ। राँची नागपुरी का मुख्य क्षेत्र है, अत यहाँ के विभिन्न गाँवो मे मुझे अनेक बार जाना पडा। कभी-कभी कुछ दिनो के लिए मुझे गाँवो मे रुकना भी पडता था। इस क्रम मे मुझे जो अनुभव प्राप्त हुए है, वे अत्यत कटु हैं। कभी-कभी तो मैं चार-पाँच घंटो तक लगातार साइकिल चलाता रह गया और मुझे पीने के लिए एक बूँद पानी भी प्राप्त नही हो सका। एक घटना सिमडेगा की है। शख नदी पार कर मुझे वाघडेगा नामक गाँव जाना था। मैं सिमडेगा से सुबह को साइकल पर चला। किसी प्रकार जगली तथा पहाडी रास्ता तय कर मैं शख नदी के किनारे पहुँच गया। पर, वहाँ पहुँचकर ऐसी अनुभूति होने लगी कि मैं एक ऐसे निर्जन, अज्ञात तथा भयावह स्थान पर आ गया हूँ, जहाँ से मेरा लौट पाना अब असभव है। चारो ओर दूर-दूर तक फैली हुई बडी-बडी चट्टानें और शख की गरजती हुई धारा। काफी देर के पश्चात् एक आदिवासी युवक दिखलाई पडा। मुझे भयभीत तथा चिन्तित देखकर युवक ने मुझे आश्वस्त करने का प्रयास किया। उसने अपने कधे पर मेरी साइकिल रख ली। मै उसके पीछे-पीछे उसके निर्देशानुसार चलने लगा। पानी की धारा जब मेरे सीने तक चढ आई, तो मेरी साँस ऊपर-नीचे होने लगी। किसी प्रकार मै नदी के पार पहुँच सका। जब मैं अपने गन्तव्य पर पहुँचा, तो मुझे देखकर लोगो को अपार आश्चर्य हुआ, मानो उनके सामने मैं नही—मेरा भूत खडा हो। अभी भी जब मेरी आँखो के सामने शख नदी का दृश्य नाच जाता है, तो मैं सिहर उठता हूँ। इसी प्रकार के कितने विविध एव तीखे अनुभव है, जो इस अनुसधान के क्रम से मुझे प्राप्त हुए। राँची के अनेक गाँवो तथा स्थानो के अलावा क्षेत्रीय-कार्य के लिए मैंने निम्नलिखित स्थानो की यात्रा की —

मध्यप्रदेश—जशपुर, कोरिया, उदयपुर, घोलेंग, पत्थलगांव, अम्बिकापुर (सुरगुजा), कुनकुरी तथा बिलासपुर।

उड़ीसा—गांगपुर, हामिरपुर (राउरकेला), बोनाईगढ, बामड़ा, क्योंझर और सुन्दरगढ।

बगाल (पश्चिम)—मालदा, पुरुलिया, रघुनाथपुर, तथा आदरा।

बिहार—रामगढ, हजारीबाग, चदवा, लातेहार, गढवा, गोला, धनबाद, चक्रधरपुर चाईबासा तथा जमशेदपुर।

क्षेत्रीय-कार्य से साहित्य-सकलन तथा सूचना-संग्रह मे उल्लेखनीय सहायता प्राप्त हुई। सच तो यह है कि क्षेत्रीय-कार्य के अभाव मे इस शोध-कार्य को पूरा कर पाना समव था ही नही—कम-से-कम मैं ऐसा मानता हूँ। इस दृष्टि से यदि यह कहा जाय कि प्रस्तुत प्रबन्ध की रीढ क्षेत्रीय-कार्य ही है, तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

(२) पत्राचार

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के प्रस्तुतीकरण मे पत्राचार का भी पर्याप्त लाभ उठाया गया है। कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियो तथा संस्थाओ से सम्पर्क स्थापित करने के लिए पत्राचार का सहारा लेना पडा, जिनसे आवश्यक एव उपयोगी सूचनाएँ प्राप्त हो सकीं। "नागपुरी साहित्य-सेवियो का संक्षिप्त परिचय" नामक परिच्छेद के लिए मुख्यत. पत्राचार की ही मदद लेनी पडी है। इसके लिए नागपुरी साहित्य-सेवियो के पास साइक्लोस्टाइल्ड फार्म की प्रतियाँ डाक के द्वारा भेजी गई, जो उनके द्वारा भरकर मेरे पास वापस लौटा दी गई।

(३) व्यक्तिगत-सम्पर्क

नागपुरी भाषा तथा साहित्य के सम्बन्ध मे जानकारी रखने वाले व्यक्तियो तथा सस्थाओं की सहायता प्राप्त करने के लिए "व्यक्तिगत-सम्पर्क" की विशेष आवश्यकता पड़ी। इस क्रम में मुझे उल्लेखनीय सहयोग स्वर्गीय पीटर शांति नवरंगी, डॉ० कामिल बुल्के, श्री राधाकृष्ण तथा श्री योगेन्द्र नाथ तिवारी से मिला। डॉ० बुल्के का स्नेह यदि मुझ पर नही होता, तो संभवतः "ईसाई मिशनरियो के तत्त्वावधान मे रचित नागपुरी साहित्य" नामक परिच्छेद का प्रामाणिक लेखन संभव नहीं हो पाता। इन कृपालुओ के अतिरिक्त भी मुझे अनेक व्यक्तियो से लाभ हुआ है, जिनकी एक लम्बी सूची बन सकती है।

(४) सूचनादाताओं का सहयोग

कभी-कभी क्षेत्रीय-कार्य तथा पत्राचार के बाद भी यह अनुभव हुआ कि

कुछ अतिरिक्त सूचनाओ की आवश्यकता अभी भी बनी है। ऐसी अवस्था मे मित्रो तथा शुभचिन्तको ने वाछित सूचनाएँ भेजकर आवश्यकताओ की पूर्ति की है।

(५) संदर्भ-ग्रन्थों का अध्ययन

नागपुरी भाषा तथा साहित्य से सम्बन्धित सदर्भ-ग्रथों का कैसा अभाव है, यह दुहराने की आवश्यकता मैं नही समझता। नागपुरी पर डॉ० ग्रियर्सन ने अपने "लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया" नामक ग्रथ मे विचार किया है, जिन विचारो को ही परवर्त्ती विद्वानो ने प्रकारान्तर से दुहराने की चेष्टा की है। डॉ० ग्रियर्सन तथा अन्य विद्वानो के ग्रथो के अध्ययन के लिए मुझे कलकत्ता जाना पडा। राँची मे ऐसा आज भी कोई पुस्तकालय नही, जहाँ पुरानी पुस्तकें प्राप्त हो सकें, अत कलकत्ते मे एक महीने तक ठहरकर मैंने "नेशनल लाइब्रेरी" मे उपलब्ध आवश्यक पुस्तको का अध्ययन किया।

(६) विचार-विमर्श

प्राप्त सूचनाओ तथा तथ्यो की प्रामाणिकता की परीक्षा के लिए विचार-विमर्श करना अत्यत लाभदायक सिद्ध हुआ। इस क्रम ने मुझे अपने गुरु तथा निदेशक श्रद्धेय डॉ० रामखेलावन पाण्डेय से निरतर सत्परामर्श तथा समुचित निर्देशन यथा-समय प्राप्त होते रहे। नागपुरी भापा साहित्य के विपय मे स्वर्गीय पीटर शाति नवरगी तथा श्री योगेन्द्रनाथ तिवारी से मुझे निरतर विचार-विमर्श का सुअवसर प्राप्त हुआ। इन सभी महानुभावो के विचारो तथा अनुभवो से मैंने यथासभव लाभ उठाने का प्रयत्न किया है।

२

ईसाई मिशनरियों के तत्त्वावधान में रचित नागपुरी साहित्य

सम्प्रति राँची का विकास एक औद्योगिक नगर के रूप मे हो रहा है, परन्तु स्वतन्त्रता के पूर्व राँची, मिशनरियो का नगर प्रतीत होता था। राँची के तीन प्रसिद्ध मार्गों—मेन रोड पर जर्मन एवांजेलिकल लुथेरान मिशन, चर्च रोड पर एस० पी० जी० मिशन तथा पुरुलिया रोड पर काथलिक मिशन अवस्थित हैं। उपर्युक्त तीनो मिशनो की अवस्थिति राँची के हृदय-स्थल पर है, जिसके कारण ये और भी महत्वपूर्ण हो गए हैं। इन मिशनो के अलावे सेवेंथ डे एडवेंटिस्ट मिशन भी कार्य कर रहा है। छोटानागपुर के विकास मे प्रथम तीन मिशनरियो ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।

जर्मन एवंजेलिकल लुथेरान मिशन

सन् १८४४ ई० मे एवजेलिस्ता योहनेस गोस्सनर नामक पादरी ने बर्लिन (जर्मनी) से ए० शत्स के नेतृत्व मे अ० ब्रन्त, फ्रेड्रिक वाच्छ और इ० थ० जानके नामक व्यक्तियो को भारत भेजा। इन चारो व्यक्तियो को धर्म-प्रचार के लिए वर्मा के मेगुई शहर मे जाना था, पर इस क्षेत्र में अमेरिकन बापटिस्ट मिशन के लोग पहले ही आ पहुँचे थे, अत इन्हें अपना निर्णय बदल देना पड़ा। इन मिशनरियो का आगमन राँची मे कैसे हुआ, यह भी एक मनोरंजक कथा है।[1]

१. "दैव्योग से एक दिन जब वे अपने मित्रो के संग हुगली के तीर पर एक सकरी गली में फिर रहे थे तब परदेसियों के डेरो को देखते-देखते उन्होंने चिथड़े पहिने हुए और जटा बाँधे हुए कई एक सिरवाले, कतवार बुहारने हारे हरिजनो को गली मे काम करते देखा कि वे नावले वर्ण के हैं जो वहाँ के सुन्दर और गोरे-गोरे बंगालियो के बदन और चेहरे से भिन्न दिखाई देते हैं। तब नव-जवान परदेशी लोग आश्चर्य मान के अपने मित्रों से पूछने लगे कि ये कुली लोग जो यहाँ रास्ते में इधर-उधर काम कर रहे हैं किस देश के हैं? मित्रो ने बताया कि ये छोटानागपुर के आदि-निवासियो मे से हैं। उनके देश में उनको बहुत कष्ट मिलता है और जमींदार लोग इनको सताते बहुत हैं। वे उनको मनुष्य नहीं वरन् पशु के समान समझते हैं इसी कारण वे अपनी दशा को

२ नवम्बर १८४५ ई० को उपर्युक्त चार मिशनरियो का आगमन राँची मे हुआ। पहले उन्होने राँची के उत्तर मे अपना तम्बू खडा किया, जहाँ पहले जज की कोठी थी। तीन-चार दिनो के उपरान्त ये लोग वर्त्तमान जर्मन एवजेलिकल लुथेरान मिशन के अहाते मे आ गए। १ दिसम्बर १८४५ को जर्मन एवजेलिकल लुथेरान मिशन के प्रथम स्टेशन का शिलान्यास किया गया और उस स्थान का नाम "बैथेसदा" (दया का घर) रखा गया।

गाँवो तथा बाजारो मे घूम-घूमकर इन मिशनरियो ने धर्म-प्रचार का कार्य प्रारम्भ कर दिया। ये लोग तीन उपायो से लोगो के बीच धर्म-प्रचार करते थे—

(१) स्कूल मे शिक्षा देकर,
(२) बीमारो को दवा देकर, तथा
(३) धार्मिक प्रवचन देकर।

कभी-कभी इन्हे बडी विपरीत परिस्थितियो का सामना करना पडता था। इन्हे अपने कार्य मे सफलता भी नही मिल रही थी। एक लम्बी अवधि के बाद ९ जून १८५० ई० को निम्नलिखित चार व्यक्तियो ने अपने धर्म परिवर्त्तित किए :—

(१) नवीन पोडे —(हेथाकोटा निवासी)
(२) केशो —(चिताकुनी निवासी)
(३) वन्धु —(चिताकुनी निवासी) तथा
(४) घुरन —(कुरण्डा निवासी)

ये चारो व्यक्ति उराँव थे।

अब मिशनरियो को अपने उद्देश्य मे सफलता मिलने लगी। इस बीच मिशन के कई केन्द्र विभिन्न गाँवो मे भी स्थापित किए गए। सन् १८५७ तक छोटानागपुर मे ईसाइयो की सख्या ७०० के करीब पहुँच गई। मेन रोड, राँची मे अवस्थित जर्मन गिरजाघर की स्थापना २५ दिसम्बर १८५५ ई० को हुई।

सन् १८५७ के स्वतन्त्रता-सग्राम की लहर छोटानागपुर तक आ पहुँची और उसका प्रधान केन्द्र राँची हुआ। स्वतन्त्रता-सग्राम के कारण मिशनरियो को राँची छोडकर कलकत्ता जाने के लिए वाध्य होना पडा। फलस्वरूप मिशन की प्रगति रुक-

सुधारने और कुछ पैसा कमाने के लिए यहाँ आये हैं। यह सुनकर उन चारो मिशनरियो के मन मे बडी दया और प्रेम उत्पन्न हुआ। वे परस्पर कहने लगे कि भला हो कि छोटानागपुर मे जाकर हम इन्हीं जातियो के बीच सुसमाचार प्रचार करें। तब उनके मित्र लोग वहाँ जाने के लिए आनन्द से सम्मत हुए।"

—छोटानागपुर की कलीसिया का वृत्तान्त १८४४—१८९०—
लेखक—कुशलमय शीतल, द्वितीय सस्करण—१९५५,
पृष्ठ ६ तथा ७।

ली गई। सन् १८६१ ई० से मिशन का कार्य पुनः प्रारम्भ हो गया। जर्मन एवंजेलिकल मिशन अब यहाँ के भारतीय पादरियों द्वारा सचालित एक स्वतन्त्र निकाय है।

एस० पी० जी० मिशन

सन् १८६९ ई० मे रेवरेण्ड जावेज कॉर्नेलियस ह्विटली सपत्नीक राँची आए। इसके पूर्व उन्होंने करनाल के जाटो के बीच धर्म-प्रचार का कार्य किया था। यहीं से एस० पी० जी० मिशन का कार्य प्रारम्भ होता है। रेव० ह्विटली इगलिश मिशन के थे। कालान्तर मे रेव० ह्विटली छोटानागपुर के प्रथम बिशप नियुक्त किए गए। रेव० ह्विटली ने मिशन का सगठन कुछ इस प्रकार किया कि दस महीनो की अल्पावधि में ही ६०० व्यक्तियो ने धर्म-परिवर्त्तन किए। १ सितम्बर १८७० ई० को सन्त पाल गिरजाघर का शिलान्यास तत्कालीन कमिश्नर कर्नल डाल्टन के हाथो सम्पन्न हुआ। ६ मार्च १८७३ को यह गिरजाघर बनकर तैयार हो गया। उसी वर्ष पाँच आदिवासियो को पादरी नियुक्त किया गया। राँची के अलावा इस मिशन के केन्द्र रामतोलिया, मुढू, काडेर, बीरु, बन्गाडी, फटिया टोली, डोडमा, सपारोम, जारगी, चाईबासा, पुरुलिया, तपकरा, हजारीबाग तथा चित्रपुर गाँवों में भी खोले गये।

कायलिक मिशन

सन १८५९ ई० मे ही कलकत्ते में कायलिक मिशन ऑफ वेस्टर्न बगाल की स्थापना हो गई थी। पर छोटानागपुर की ओर इस मिशन की दृष्टि काफी देर से पडी। लगभग दस वर्षों के उपरान्त सन् १८६९ ई० मे रेव० फादर ए० स्टॉकमेन, एस० जे० नामक प्रथम कायलिक मिशनरी का आगमन चाईबासा मे हुआ। सबसे पहले इस मिशनरी ने हो तथा मुंडा जाति के लोगो के बीच धर्म-प्रचार करना प्रारम्भ किया। इस कार्य मे रेव० स्टॉकमेन को कोई विशेष सफलता नहीं मिली। सन् १८७४ ई० मे चाईबासा का केन्द्र उठाकर बुरुडी नामक गाँव मे लाया गया। बुरुडी खूटी थाना के अन्तर्गत एक गाँव है। उन दिनो लोहरदगा जिला था। बुरुडी मे ही कायलिक मिशन का सबसे पहला गिरजाघर बनाया गया। डोरण्डा के मद्रासी, ईसाई सिपाहियो की सेवा के लिए सन् १८७६ ई० में फादर डिक्रोज आए। उन्होंने भी यहाँ धर्म-प्रचार के कार्य में हाथ लगा दिया। सन् १८८२ ई० मे सर्वदाग (खूँटी से दक्षिण में बारह मील पर अवस्थित एक गाँव) मे एक नये केन्द्र की स्थापना हुई। सन् १८८३ ई० मे डोरण्डा में केन्द्रीय मिशन की स्थापना की गई।

सन् १८९५ ई० में धर्म-परिवर्तित मुडाओ की सख्या २०९२ तक जा पहुँची। रेव० फा० लिवेन्स का आगमन इसी वर्ष डोरण्डा मे हुआ। उन्होंने अपना कार्य-क्षेत्र तोरपा को चुना। सन् १८७७ ई० मे रेव० फा० मोटेट ने डोरण्डा से केन्द्रीय मिशन को हटाकर राँची शहर के बीच पुरुलिया रोड पर प्रतिष्ठित किया।

रेव० फा० लिवेन्स इस मिशन के निर्देशक वनाए गए। उनकी देख-रेख मे इस मिशन ने विशेष प्रगति की है। आज कायलिक मिशन अन्य मिशनो की तुलना मे द्रुतगति से प्रगति कर रहा है। रांची के सभी मिशनो मे यह सबसे वडा, सुगठित एवं सम्पन्न मिशन है।[२]

सेवेन्थ डे एडवेंटिस्ट मिशन

इस मिशन का आगमन सन् १९१९ ई० मे हुआ। इस मिशन के किसी भी मिशनरी ने नागपुरी का कोई साहित्य प्रकाशित नही किया है।

ईसाई मिशनरियो का आगमन छोटानागपुर की भूमि पर सन् १८४५ ई० में हुआ। उस समय के छोटानागपुर और आज के छोटानागपुर मे आकाश-पाताल का अन्तर आ गया है। उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे यहाँ तीन ईसाई मिशनो के कार्य चल रहे थे। इन तीनो मिशनो का एकमात्र ध्येय ईसाई धर्म का प्रचार था। इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए छोटानागपुर के पिछडे एव भीतरी क्षेत्रो मे जाकर मिशनरियों ने स्कूल तथा अस्पतालो की स्थापना की। ये दो ऐसे आकर्षण थे जिनकी ओर यहाँ के आदिवासियो का आकर्षित होना विलकुल स्वाभाविक था। धर्म-प्रचार के क्रम मे इन्हें अनेक कठिनाइयो का सामना भी करना पडा। विशेपकर हिन्दू तथा मुस्लिम जनता ने इन मिशनरियो का बहुत विरोध किया। परन्तु इन मिशनरियो के अथक परिश्रम तथा अंग्रेजी शासन की ओर से प्राप्त सरक्षण के कारण मिशनो के कार्य मे कोई विशेप व्यवधान उपस्थित न हो सका।

ईसाई धर्म के प्रचार का कार्य विशेषत आदिवासियो के बीच हुआ। इन आदिवासियों की अपनी-अपनी भाषाएँ हैं। मुंडा मुंडारी बोलते हैं। उरांव कुड़ुख (उरांव) का प्रयोग करते हैं। हो जाति के लोग अपनी भापा हो बोलते हैं। इसी प्रकार खडिया जाति की भी अपनी भापा खडिया है। आज भी ये आदिवासी जातियाँ अपनी भापा का अधिक प्रयोग करती है। इस प्रकार छोटानागपुर के आदिवासी भाषा की दृष्टि से विभिन्न भाषा-खडो मे विभाजित रहे हैं। अत यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि पहले से ही उनके बीच एक "सम्पर्क भाषा" रही होगी, जिसकी सहायता से वे सभी आपस मे विचार-विमर्श करते रहे हैं। वह सम्पर्क-भाषा नागपुरी ही है। इस भापा का प्रयोजन आदिवासी तथा गैर-आदिवासी जातियो के लोग समान रूप से करते हैं।

धर्म-प्रचार के क्रम मे मिशनरियो के समक्ष भापा की यह कठिनाई उपस्थित हुई। उन्हे भी एक ऐसी भापा की आवश्यकता थी, जिसका प्रयोग छोटानागपुर के अधिकाश आदिवासी करते रहे हो। इसी आवश्यकता को ध्यान मे रखकर ईसाई

२. शरत्चन्द्र राय, मुन्डाज एण्ड देयर कन्ट्री, (१९१२), पृ० २९०-२९४।

मिशनरियो ने नागपुरी को अपनाया, क्योकि नागपुरी ही एक ऐसी भाषा थी जो "सम्पर्क भाषा" के रूप मे उस समय भी सर्वत्र प्रचलित थी। उराँव, मुंडा, खड़िया तथा हो आदि सभी जातियाँ अपनी-अपनी भाषाओ के साथ नागपुरी का भी प्रयोग करती हैं। एस० पी० जी० मिशन राँची के रेवरेण्ड ई० एच० ह्विटली ने स्वयं स्वीकार किया है—"यह जमींदार तथा रैयत दोनो के द्वारा बोली जाती है। यह उराँव तथा मुंडा लोगो के द्वारा भी व्यापक रूप से अपना ली गई है, जो पहले सिर्फ अपनी ही भाषा का प्रयोग करते थे। इस प्रकार गँवारी को बोलने तथा समझने का महत्त्व मैजिस्ट्रेटो तथा मिशनरियो के लिए समान है।"[3]

इस तथ्य को ध्यान में रखकर ही रेव० ह्विटली ने सन् १८९६ ई० मे एक छोटी-सी पुस्तिका "नोट्स ऑन दी गँवारी डायलेक्ट ऑफ लोहरदगा छोटानागपुर" का प्रकाशन किया। इस पुस्तिका का प्रकाशन ही इस विचार की पुष्टि के लिए पर्याप्त है कि गँवारी (नागपुरी) का ज्ञान प्राप्त करना ईसाई मिशनरियों के लिए अनिवार्य-सा हो गया था। फलस्वरूप ईसाई मिशनरियो ने नागपुरी के अध्ययन के साथ-साथ मुण्डारी, उराँव, हो तथा खड़िया आदि भाषाओ पर भी ध्यान दिया। यहाँ की आदिवासी जनता तक पहुँचने के लिए उनकी भाषा में ही काम करना लाभदायक सिद्ध हुआ। ईसाई मिशनरियो ने नागपुरी, मुंडारी तथा उराँव इन तीन भाषाओ का विशेषरूप से अध्ययन किया, बल्कि यह भी कहा जा सकता है कि ईसाई मिशनरियो ने इन भाषाओं का उद्धार भी किया। इन भाषाओ मे ईसाई धर्म-ग्रन्थो के अनुवाद प्रकाशित कर ईसाई मिशनरियो ने यदि अपने ध्येय की पूर्ति की, तो उन्होंने नागपुरी, मुण्डारी तथा उराँव के महत्त्व से लोगों को अवगत भी करवाया। इस दृष्टि से ईसाई मिशनरियो के द्वारा इस क्षेत्र मे की गई सेवाएँ कभी भी भुलाई नही जा सकतीं। इस कार्य मे जर्मन एवंजेलिकल लुथेरान मिशन, एस० पी० जी० मिशन तथा काथलिक मिशन के मिशनरियों ने जो कार्य किए हैं, उनका विवरण काल-क्रमानुसार नीचे प्रस्तुत है।

ईसाई मिशनरियों द्वारा लिखित एवं उपलब्ध नागपुरी साहित्य

(१) रेव० ई० एच० ह्विटली

रेव० ह्विटली, एस० पी० जी० मिशन राँची के पादरी थे। सन् १८९६ ई०

३ रेव० ई० एच० ह्विटली—नोट्स ऑन दी गँवारी डायलेक्ट ऑफ लोहरदगा छोटानागपुर" पृष्ठ—इन्ट्रोडक्टरी
"इट इज स्पोकन बोथ बाई जमींदार्स एण्ड रैयतुस, ऐण्ड हैज बीन वेरी लार्जली एडॉप्टेड बाई दी मुण्डाज एण्ड ओरॉवज टू फॉरमर्ली स्पोक ओनली देयर एबोरिजनल लैंग्वेजेज। इट्स यूज इज कान्स्टेन्ट्ली इनक्रीजिंग। हेन्स दी इम्पॉर्टेन्स ऑफ अण्डरस्टैंडिंग ऐण्ड स्पीकिंग दिस गँवारी टू मैजिस्ट्रेट ऐण्ड मिशनरी इज एलाइक।"

मे "नोट्स ऑन दी गँवारी डायलेक्ट ऑफ लोहरदगा छोटानागपुर" नामक इनकी पुस्तिका का प्रकाशन, कलकत्ते के बगाल सेक्रेटेरियट प्रेस ने किया । इसे नागपुरी का सर्वप्रथम व्याकरण माना जा सकता है ।

सन् १८९६ ई० मे राँची जिले का अलग कोई अस्तित्व नही था । उस समय लोहरदगा ही जिला था । यही कारण है कि पुस्तिका के नामकरण मे "लोहरदगा" शब्द का प्रयोग किया है । पुस्तिका के अन्त में घरेलू बातचीत, एक मुकदमे की गवाही तथा एक छोटा-सा गीत सगृहीत है । ये सभी रचनाएँ नागपुरी मे ही है । पुस्तक रोमन लिपि मे मुद्रित है ।

इस पुस्तिका का दूसरा सस्करण सन् १९१४ ई० मे बिहार एण्ड उडीसा गवर्नमेन्ट प्रेस के द्वारा प्रकाशित किया गया । इस सस्करण मे पुस्तक का नाम "नोट्स ऑन नागपुरिया हिन्दी" रखा गया । इस सस्करण मे पृष्ठ-सख्या २१ से ३२ हो गई और इसमे कुछ नये उदाहरण भी सम्मिलित कर लिए गए ।

रेव० ह्विटली ने डॉ० ग्रियर्सन को उनके भारत का भाषा-सर्वेक्षण मे सहायता प्रदान की थी । नागपुरी पर विचार करते समय डॉ० ग्रियर्सन ने रेव० ह्विटली के व्याकरण को ही आधार माना ।

इस पुस्तक के प्रकाशन-काल (सन् १८९६) के पूर्व प्रकाशित कोई भी नागपुरी पुस्तक अब तक देखने मे नही आई है ।

(२) "राजा दाउद केर चुनल गीत मन"

इस पुस्तक की पाडुलिपि काथलिक मिशन, राँची मे उपलब्ध है, जो ½ फुलस्केप के आकार की दो कापियो मे लिखित है । इस पाडुलिपि मे नब्बे पृष्ठ है, जो बिलकुल खस्ते हो गए हैं और स्पर्श-मात्र से ही चूर हो जाते है । इस पाडलिपि मे लेखक या अनुवादक का नाम कही भी अकित नही । पाडुलिपि के प्रथम पृष्ठ के ऊपरी कोने मे महीन अक्षरो से १८९६ अकित है । पाडुलिपि के आवरण के एक स्थान पर ईस्टर अप्रील ९४ (रोमन लिपि मे) भी अकित है । इन दोनो को पुस्तक का लेखन-काल मानकर यह कहा जा सकता है कि ईसाई मिशनरियो द्वारा लिखित यह सर्वप्रथम धर्मगीत पुस्तक है ।

यह पुस्तक रोमन लिपि मे लिखी गई है और इसमे दाउद (सत डेविड) के निम्नलिखित गीतो का ही अनुवाद उपलब्ध है—१, २, ३, ४, ५, ८, ९, १०, १३, १४, १५, १८, २३, २४, २६, ३२, ३३, ३५, ३६, ३९, ४०, ५०, ५८, ६२, ६६, ७१, ७२, ८३, ८४, ८५, ९०, ९२, ९३, ९४, ९५, ९७, ९९, १००, १०२,-१०५, १०६, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११८, १२०, १२१,-१२६, १२७, १२९,-१३३,-१४२, १४५, १४६, १४८, १४९ तथा १५० (कुल इकसठ गीत), अत यह कहा जा सकता है कि अनुवाद अपूर्ण ही है । इस पुस्तक के १४० वे

गीत की प्रथम पाँच पक्तियों का देवनागरी लिप्यन्तर पाद-टिप्पणी में प्रस्तुत है।[४]

(३) रेव० पी० इडनेस

जर्मन एवजेलिकल लुथेरान मिशन के रेवरेण्ड पी० इड्नेस ने बाइबिल के सुसमाचारो का नागपुरी मे अनुवाद किया। ये पुस्तकें दी ब्रिटिश एण्ड फॉरेन बाइबिल सोसाइटी, कलकत्ता के द्वारा क्रमश. प्रकाशित की गईं। इन सभी पुस्तको मे कैथी लिपि का प्रयोग किया गया है। नागपुरी में प्रकाशित सुसमाचारो का विवरण इस प्रकार है :—

(क) सन् १६०७ ई० मे "नागपूरिया मे नया नियमकेर पहिला ग्रन्थ याने मत्ती से लिखल प्रभु यीशु ख्रीष्टकेर सुसमाचार" का प्रथम सस्करण प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक मे ११० पृष्ठ हैं।

(ख) सन् १६०८ मे "नागपूरिया मे नया नियमकेर दोसर ग्रन्थ याने मारक से लिखल प्रभु यीशु ख्रीष्टकेर सुसमाचार" का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक मे ७० पृष्ठ हैं।

(ग) सन् १६०६ मे "नागपूरिया मैं नया नियमकेर चौथा ग्रन्थ याने योहन से लिखल प्रभु यीशु ख्रीष्टकेर सुसमाचार" के प्रथम सस्करण का प्रकाशन हुआ। इस पुस्तक मे ८६ पृष्ठ हैं।*

(घ) सन् १६१२ ई० मे "नागपूरिया मे नया नियमकेर पाँचवाँ ग्रन्थ याने लूक से लिखल प्रेरितमनक काम" के प्रथम सस्करण का प्रकाशन हुआ। इसमे एक सौ दस पृष्ठ हैं।

ये सभी पुस्तकें डिमाई साइज मे प्रकाशित की गईं। "नागपूरिया मे नया

४. ईश्वर से सहाय जवर धर्म में चलेक केर विनती

१—हे परमेश्वर हमर विनती सुन, हमर विनती पर कान रख, अपन सच्चाई केर साथ हमर सुन।

२—अउर अपन दास केर साथ लड़ेकने विचार में मत आवहिं, काहेकि तोर साम्हने कोई जन बिना दोष नहीं ठहरी।

३—काहेकि बैरी हमर जीव केर पीछे पड़ल हय, हमर जीव के जमीन तक दिन खिन मरलय हय।

४—हमके सारो मुरदार के समान अधार जगाये बइठाय हय अउर हमर जीव हमर में बहुत सन्तोष से पूर्ण हय। हमर जीव हमर में उजड़ गेलई।

५—हम अगला दिनके याद करिला तोहर सब काम पर सोच करिला तोर हाथ केर बनाएक चीज पर ध्यान करिला। —पाडुलिपि, पृष्ठ ६१

*सूचनादाताओं के अनुसार "नागपुरिया मे नया नियमकेर तीसरा ग्रन्थ ..." का भी प्रकाशन हुआ था, पर यह पुस्तक मुझे कहीं भी देखने को नहीं मिल सकी।

नियमकेर पाँचवाँ ग्रन्थ याने लूक से लिखल प्रेरितमनक काम" से लिए गए एक उद्धरण का देवनागरी लिप्यन्तर पाद-टिप्पणी मे प्रस्तुत है।[५]

(४) नागपुरिया आराधना

सन् १६१५ ई० मे जर्मन एवजेलिकल लुथेरान (गोस्सनर) मिशन ने "नागपुरिया आराधना अर्थात् एतवारकेर गिरजा वचन" नामक पुस्तक का प्रकाशन किया। इस पुस्तक मे लेखक अथवा अनुवादक का नाम कही भी अंकित नही। पुस्तक का आकार डिमाई है। इसमे १०८ पृष्ठ हैं। यह देवनागरी लिपि मे मुद्रित है।

विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानो को सम्पन्न करने की विधियाँ इस पुस्तक मे वतलाई गई है। "विवाहकेर नियम" से लिया गया एक संक्षिप्त अंश पाद-टिप्पणी मे प्रस्तुत है।[६]

(५) रेवरेण्ड फादर हेनरिक फ्लोर

सन् १६३१ ई० मे कलकत्ते के मैसर्स वेग डनलप एण्ड कम्पनी लिमिटेड ने टी डिस्ट्रिक्ट लेवर एशोसिएशन के लिए "लैंग्वेज हैण्डबुक सदानी" नामक पुस्तक का

५ (प्रेरित मनक तजुब काम करेक)

(१२) प्रेरितमनक हाथ से ढेइर चिन्हा और ताजुब काम आदमीमनक मधे करल जात रहे, और उमन सौब एक चित्त होएके सुलेमानकेर ढबा मे रहैं। (१३) दोसर मन मधे के कहो उमन साथे मिलेकले साहस नी रहे, लेकिन आदमी उमनक बड़ाई करत रहे। (१४) मगर औरो विश्वासीमन, (ढेइर मरद और औरतो, प्रभु से मिल गेलैं,) होलैं। (१५) और आदमी बेमराहा मनके बाहरे सड़क में लाइन के खटिया और पटिया मन में रखत रहैं कि जेखन पतरस आवी, सेखन उक छाईयो उमन मधे केकरो मे पडोक। (१६) आसे पासेकेर शहरोमन से आदमीमन बेमराहामन के और अशुद्ध भूतमन से सताल मनके लियल यिरुशलीम मे जुमत रहैं, और उमन सौब बेस करल जात रहैं।

—नागपूरिया मे नया नियमकेर पाँचवाँ ग्रन्थ याने
लूकसे लिखल प्रेरित मनक काम, पृष्ठ १६—१७।

६. ए हमरेकेर दुलारा बचावइया प्रभु यीशु, तोए अपन पवित्र वचनमे कहइ हिस, आदमी अपन माए बाप के छोड़इ के अपन स्त्री से मिलल रही, और उमन दुइयो एक गतर होवैं। से उमन आगे दुइ नही, मगर एक गतर होवैं इले जे कोनो ईश्वर जोड़इ हे उके आदमी फरक न करोक। इ लेखे ए प्रभु, तोए एखन इ दुइयो जनके एक गतर मे जोड़इ हिस, अब जिन्दगी भइर इमन में दयाकर, कि उमन संतमेल मिलाप मे रहोक, आपस मे एक दोसरके पेयार करोंक, स्त्रीकेर सुख और दुःख पुरुष अपन सुख और दुःख समझोक और पुरुषकेर सुख और दुःख स्त्री अपन सुख और दुःख समझोक और इ लेखे सब दुःख और सुख आपुस में भोगोक और एक दोसरकेर सहाय करोक। ए प्रभु, तोए इमनके अपन सतभेडी बना इमनकेर रखवारी कर, इमनकेर अगुआई कर इमनके अपने बचन और पवित्र वियारी से अगुवाए दे, और अन्त मे उमन के अपन सरगी गुदरी में लेजा, और सदा तक उमनके आशीष दे, अपन बड प्रेम खातिर ऐसन बिन्ती पूरा कर, आमीन। पृष्ठ ६७-६८,

प्रकाशन किया। इस पुस्तक के अन्तरंग आवरण पर "प्रिन्टेड फोर प्राइवेट सर्कुलेशन" अंकित है। पुस्तक रोमन लिपि मे मुद्रित है और डिमाई आकार के इसमे १०६ पृष्ठ है।

श्री फ्लोर ने इस पुस्तक मे पृष्ठ १ से २१ तक सदानी का संक्षिप्त व्याकरण प्रस्तुत किया है। पृष्ठ २५ से ७४ तक सदानी बातचीत के उदाहरण हैं। प्रत्येक पृष्ठ दो स्तम्भो मे विभक्त है। पहले स्तम्भ में अंग्रेजी वाक्य हैं और दूसरे स्तम्भ मे सदानी अनुवाद। पृष्ठ ७७ से ९३ में एक संक्षिप्त शब्द-कोष है, जिसमे सदानी शब्दो के अंग्रेजी समानार्थक शब्द दिए गए हैं। इसी प्रकार पृष्ठ ९७ से १०६ मे अंग्रेजी शब्दो के सदानी समानार्थक शब्द दिए गए हैं।

श्री ह्विटली के बाद यह नागपुरी का दूसरा प्रकाशित व्याकरण है, जो नागपुरी सीखने मे विशेष सहायक माना जा सकता है।

श्री पीटर शांति नवरंगी के अनुसार श्री फ्लोर की दो और पुस्तकें गाँगपुर से प्रकाशित हुई थी—(१) कोमुनियो पोथी (२) सदरी गीत पुस्तक।[७] ये पुस्तकें गाँगपुर मिशन मे भी मुझे देखने को उपलब्ध नही हो सकी।

(६) नागपुरिया भजन

इस पुस्तक का प्रकाशन एस० पी० जी० मिशन, राँची के द्वारा हुआ। इसके कई संस्करण प्रकाशित हुए। मुझे इस पुस्तक का तीसरा संस्करण प्राप्त हुआ है जो सन् १९३२ ई० मे मुद्रित है। पुस्तक मे गीतकार या संग्रहकर्त्ता के नाम का उल्लेख कहीं भी नही है। इस पुस्तक में दो सौ सात भजन हैं, जो विभिन्न अवसरो पर गाए जाते है। पाद-टिप्पणी मे भजन-संख्या १६४ प्रस्तुत है।[८]

(७) रेवरेण्ड फादर कोनराड बुकाउट

काथलिक मिशन राँची के श्री बुकाउट ने "ग्रामर ऑफ दी नगपुरिया सदानी लैंग्वेज" लिखा। यह व्याकरण अब तक अप्रकाशित है। इस व्याकरण की एक

७ रेव० फॉ० फ्लोर प्रिपयर्ड ए "हैण्डबुक ऑफ सदानी" फोर यूज इन दी टी गॉर्डेन्स ऑफ आसाम। स्टिल लेटर ए सदानी कोमुनियो पुथी ऐण्ड ए सदरी गीत पुस्तक एपीयर्ड बाई दी सेम आथर इन गाँगपुर।

—ए सदानी रीडर, प्रोफेस पृष्ठ ३, १९५७।

८ १६४—भाई नहीं लेजबें रे धन बधल गठरी।

१—जब तोके मरण आइके धइर लेवी, सेखन घर दुरा महल छोडइ जाबे।

२—जे कुछ सा मे होवी तोहर ठिन, उसमके बाइध के तो कहर ले मुठरी।

३—एखन हो चेता मुरुख मने, छन भरकेर खबरके के कहेक पारी।

४—एक दिन प्रभु तो लेखा मगवई जे, कहबे तो सेखन के बचाएक पारी।

५—जे प्रभु यीशु के नी जानी जिन्दगी में, सेके तो प्रभु कहीं नी जानी तोके।

६—प्रभुकेर दासमन बिन्ती करत हैं, यीशुकेर चरण धइर लेबा भाइया॥ पृष्ठ ११२-१३।

प्रतिलिपि मुझे देखने को मिली। यह प्रतिलिपि कापी के आकार के २२१ पृष्ठो में पूर्ण होती है और इसमे ३९५ अनुच्छेद है। व्याकरण रोमन लिपि मे लिखा गया है। इसमे पन्द्रह अध्याय तथा एक इट्रोडक्शन है। यह प्रतिलिपि सन् १९३४ ई० की है।

श्री बुकाउट का देहान्त कलकत्ते मे १४ अगस्त १९०७ को हुआ। अत यह स्वय-सिद्ध है कि यह व्याकरण सन् १९०६ ई० के आसपास या पहले लिखा गया होगा। इस व्याकरण का इट्रोडक्शन बडा महत्त्वपूर्ण है।

श्री बुकाउट द्वारा सगृहीत लोक-कथाओ का सग्रह "सदानी फोक-लोर स्टोरीज", के नाम से उपलब्ध है। कापी के आकार के पृष्ठो मे साइक्लोस्टाइल कर यह सग्रह प्रकाशित किया गया है। सपूर्ण पुस्तक रोमन लिपि मे अकित है। दाहिने पृष्ठ पर नागपुरी मे लोक-कथा प्रस्तुत है और उसी का अग्रेजी अनुवाद बायें पृष्ठ पर दिया गया है। पाद-टिप्पणियो मे अनुवाद बांयें पृष्ठ पर दिया गया है। पाद-टिप्पणियो मे कठिन नागपुरी शब्दो के अग्रेजी मे अर्थ भी दिए गए है।

इस सग्रह मे निम्नलिखित ग्यारह लोक-कथाएँ सगृहीत हैं —

(१) चालीस गो चोरमन (२) सगुनवाला जोलहा
(३) वेलपत्ती रानी (४) गुरु अउर चेला
(५) गुदड चरई (६) चारो परीमन
(७) बनमपत्ती राजा (८) मायागर राजा
(९) वन भडसाकर वेटी (वन रगी रानी)
(१०) नवाँ नोकर, तथा (११) हरनी रानी।

इस सग्रह की भूमिका रेवरेण्ड हेनरिक फ्लोर ने लिखी है, जिसमे यह उल्लेख मिलता है कि ये कहानियाँ श्री बुकाउट ने वरवे नामक गाँव के एक लोहार से सुनकर लिपिवद्ध की थी। इन कहानियो का सशोधन रेवरेण्ड एल० कार्डोन ने किया था।[६] श्री फ्लोर की भूमिका नागपुरी पर पर्याप्त प्रकाश डालती है।

श्री पीटर शाति नवरगी ने इसी सग्रह की सगुनिया जोलहा, चालिस गो चोरमन, वेलपइत रानी, गुरु और चेला तथा गुडरी चरई करछडवामन नामक लोक-कथाओं को "ए सदानी रीडर" तथा "ए सिम्पल सदानी ग्रामर" नामक अपनी पुस्तकों में किंचित् सशोधन के साथ स्थान दिया है। श्री नवरगी ने 'सगुनिया

६ दी रेवरेण्ड सी० बुकाउट, एम० जे० कलेक्टेड देन इन रांची विद दी हेल्प ऑफ वन ऑफ हिज कैटेचिस्ट्स ऐण्ड दे वेयर सब्सीक्वेन्टली रिवाइज्ड ऐण्ड करक्टेड बाई दी रेवरेण्ड एल० कार्डोन एम० जे०।

—सदानी फोक-लोर स्टोरीज, फोरवर्ड, पृष्ठ-२।

जोलहा" का "नागपुरिया (सदानी) साहित्य" नामक अपनी पुस्तक में नाट्य-रूपान्तर (लीला) भी प्रस्तुत किया है।

(८) रेवरेण्ड जे० जान्स

कैथलिक मिशन, राँची में मुझे "नागपुरिया कहानी" नामक एक पाडुलिपि मिली। पाडुलिपि की लिपि रोमन है। आवरण पृष्ठ के एक कोने पर मई १९२६ (रोमन लिपि में) अंकित है, जो सम्भवतः इसका लेखन-काल है। इसके लेखक रेवरेण्ड जे० जान्स हैं। पाडुलिपि तीन कापियों में विभक्त है। इसमें निम्नलिखित लोक-कथाएँ सम्मिलित हैं —

(१) चाँदीपुरी आदि, (२) बनसपत्ती राजा, (३) गुरु और चेला (४) बन भैंसाकेर बेटी बनमगी रानी, (५) हरनी रानी, (६) नवाँ नोकर, (७) चालीसगो चोरमन, (८) बेलपत्ती रानी तथा (९) सगुनमाला जोलहा।

श्री बुकाउट के संग्रह "सदानी फोक-लोर स्टोरीज" तथा श्री जान्स के संग्रह "नागपुरिया कहानी" की तुलना से यह ज्ञात होता है कि श्री बुकाउट के संग्रह में श्री जान्स के संग्रह की सभी लोक-कथाएँ (मात्र चाँदीपुरी आदि छोड़कर) संगृहीत हैं, बल्कि उसमें गुदड़ी चरई तथा मायागर राजा ये दो लोक-कथाएँ अधिक हैं। इन कहानियों की भाषा तथा वाक्य-गठन में पूर्ण समानता है। श्री जान्स ने अपने संग्रह में सिर्फ आदरसूचक सर्वनामों तथा क्रियाओं का प्रयोग किया है पर श्री बुकाउट ने ऐसा नहीं किया। उदाहरणार्थ "गुरु और चेला" की एक पंक्ति नीचे प्रस्तुत है :—

—एगो बूढ़ा रहयँ जे खोब गरीब रहयँ।

—रेव० जे० जान्स।

—एगो बूढ़ा रहे जे खोब गरीब रहे।

—रेव० सी० बुकाउट।

इन दोनों संग्रहों से यह भ्रम उत्पन्न हो सकता है कि ये दो अलग-अलग प्रयास हैं, पर भाषा तथा वाक्य-गठन से ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक सम्मिलित प्रयास रहा होगा, जिसमें श्री जान्स ने श्री बुकाउट को पाडुलिपि तैयार करने में सहयोग दिया हो। श्री जान्स की चर्चा न तो श्री बुकाउट ने की है और न श्री पीटर शान्ति नवरंगी ने ही।

(९) रेवरेण्ड अल्फ्रेड पी० बून, एस० जे०

नागपुरी के विकास-प्रचार में काथलिक मिशन के जिन विदेशी मिशनरियों ने सहयोग प्रदान किया, उनमें रेवरेण्ड अल्फ्रेड पी० बून का उल्लेख बड़े आदर के साथ किया जायगा। श्री बून ने नागपुरी में सबसे अधिक लिखा, पर दुर्भाग्यवश

इनकी रचनाएँ प्रकाश मे नही आ सकी। श्री बून द्वारा रचित नागपुरी साहित्य की सूची नीचे प्रस्तुत है—

(क) प्रभु यीशु खीष्ट मसीह
(ख) संत मार्क केर लिखल सुसमाचार
(ग) सत लुकस केर पवित्तर सुसमाचार
(घ) सत योहन केर लिखल सुसमाचार
(ङ) साइलमइर केर हरेक एतवार दिन केर चुनल सुसमाचार
(च) प्रेरितमनकेर कार्य

(क) प्रभु यीशु ख्रीस्ट मसीह—

इस पुस्तक की पाण्डुलिपि तथा टकित प्रति दोनो ही काथलिक मिशन मे उपलब्ध है। टकित पुस्तक तीन जिल्दो मे है। प्रथम जिल्द मे १-६१, दूसरी जिल्द मे ६२-१६२ तथा तीसरी जिल्द मे १६३-२४६ पृष्ठ है। पुस्तक निम्नलिखत तीन भागो मे विभक्त है :—

पहला भाग—जेनु खीस्ट केर लडकपन	पृष्ठ १—१५
दोसर भाग—जेसु खीस्ट केर धर्म-काज अउर सिखान	पृष्ठ १६—१६२
तीसर भाग—जेसु ख्रीस्ट केर दुख उठान, मरन, जी उठान	पृष्ठ १६३—२४६।

यह पुस्तक रोमन लिपि मे लिखी गई है। यह "वरवम सलुटीस" नामक फ्रेंच पुस्तक का नागपुरी अनुवाद है। इसका लेखन-काल १६४० है।

(ख) सत मार्क केर लिखल सुसमाचार—

इस पुस्तक की पाडुलिपि काथलिक मिशन, राँची मे सुरक्षित है, जिसमें फुलस्केप आकार के १३२ पृष्ठ हैं। पुस्तक रोमन लिपि मे लिखी गई है। पांडुलिपि के १३२ वें पृष्ठ पर हमीरपुर ३० अक्टूबर १६३३ ई० रोमन लिपि मे अंकित है, अत. यह स्पष्ट है कि पाण्डुलिपि का लेखन सन् १६३३ ई० मे हमीरपुर (राउरकेला) मे सम्पन्न हुआ।

(ग) सत लुकस कर पवित्तर सुसमाचार—

इस पुस्तक की पाडुलिपि भी काथलिक मिशन, राँची मे सुरक्षित है, जिसमे फुलस्केप आकार के १५२ पृष्ठ है। इस पुस्तक मे भी रोमन लिपि का ही प्रयोग किया गया है। पृष्ठ १५२ की पीठ पर मामेरला १८ अक्तूबर १६४१ अकित है, अत स्पष्ट है कि यह पुस्तक "मामेरला" मे सन् १६४१ ई० मे लिखी गई।

(घ) सत योहन केर लिखल सुसमाचार—

इस पुस्तक की पाण्डुलिपि भी काथलिक मिशन, राँची में सुरक्षित है। पाडुलिपि में फुलस्केप आकार के ४४ पृष्ठ हैं। "सत योहन के सुसमाचार" में इक्कीस खंड होने चाहिए, पर इस पाण्डुलिपि में सात ही खण्ड लिखे गए है, अत. यह पुस्तक पूर्ण नही मानी जा सकती। पुस्तक का लेखन-काल सन् १६४१ ई० है।

(ङ) साइल भइर केर हरेक एतवार दिनकेर चुनल सुसमाचार—

इस पुस्तक की पाडुलिपि तथा टंकित प्रति कायलिक मिशन, राँची मे सुरक्षित है। पाडुलिपि कापी के आकार के १४६ पृष्ठा मे है और टंकित प्रति इसी आकार के १०० पृष्ठों मे है। इस पुस्तक मे भी रोमन लिपि का प्रयोग किया गया है। इस पुस्तक का लेखन-काल १६४० ई० है।

(च) प्रेरितमनकेर कार्य—

इस पुस्तक की पाडुलिपि कायलिक मिशन, राँची मे सुरक्षित है। पाडुलिपि कापी के आकार के १८३ पृष्ठों मे हैं। इस पुस्तक मे भी सर्वत्र रोमन-लिपि का प्रयोग किया गया है। इसका लेखन-काल सन् १६४१ ई० है।

उपर्युक्त सभी पुस्तकें अप्रकाशित है। पुस्तकों की संख्या की दृष्टि से विदेशी कायलिक मिशनरियों मे श्री बून ने नागपुरी मे सबसे अधिक पुस्तकें लिखी है। श्री बून के गद्य का एक संक्षिप्त उदाहरण पाद-टिप्पणी मे प्रस्तुत है।[10]

(१०) रेवरेण्ड फादर एन्तोनी सोयम

कार्थलिक मिशन के श्री एन्तोनी सोयम ने सदरी [illegible] नामक एक सचित्र शब्दकोष तैयार किया। इस कोष की हस्तलिखित प्रति [illegible] मिशन, राँची में देखने को मिली। इसमें फुलस्केप आकार के ३४ पृष्ठ है। इस कोष में [illegible] की अंग्रेजी शब्दों के समानार्थक नागपुरी शब्द दिए गए है। नागपुरी बोली का [illegible]

१० "[illegible]" [illegible]
[illegible]

[illegible] —[illegible] (१९४० ई०) भाग—३, पृष्ठ [illegible]।

प्रथम कोष माना जा सकता है। इस कोष के लेखन-काल का उल्लेख कही भी उपलब्ध नही।

(११) रेवरेण्ड पीटर शांति नवरगी

नागपुरी भाषा और साहित्य के विकास मे काथलिक मिशन रांची के श्री पीटर शांति नवरगी ने उल्लेखनीय कार्य किया है। श्री नवरगी स्वय नागपुरी भाषी थे, अतः नागपुरी-सम्बन्धी उनकी सेवाएँ विशेष महत्त्व रखती है। श्री नवरगी स्वय नागपुरी के एक सफल साहित्यकार है। अबतक इनकी निम्नलिखित पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं —

(क) ए सिम्पल सदानी ग्रामर—

इस पुस्तक का प्रकाशन सन् १९५६ ई० मे काथलिक मिशन रांची की धार्मिक साहित्य समिति ने किया। यह नागपुरी का तीसरा प्रकाशित व्याकरण है, जो अपने पूर्व प्रकाशित व्याकरणो की अपेक्षा अधिक विस्तृत तथा उपयोगी है। इस पुस्तक मे रोमन तथा देवनागरी दोनो लिपियो का प्रयोग किया गया है। अन्त मे "सगुनिया जोलहा" नामक लोककथा श्री बुकाउट के सग्रह से सकलित है।

श्री नवरगी ने नागपुरी का एक इससे भी कही अधिक विस्तृत व्याकरण तैयार किया था, जो दुर्भाग्यवश प्रकाशन के पूर्व ही कही गुम हो गया।

(ख) ए सदानी रीडर—

इस पुस्तक का प्रकाशन काथलिक मिशन रांची के द्वारा सन् १९५७ मे हुआ। १८३ पृष्ठो की इस पुस्तक मे लोक-कथाएँ, वार्त्ता और गीत सगृहीत हैं। पुस्तक तीन खण्डो मे विभाजित है। प्रथम खड मे लोक-कथाएँ तथा वार्त्ता, दूसरे खण्ड मे गीत तथा तीसरे खण्ड मे प्रेम-लहरी (ख्रीस्त की सक्षिप्त जीवनी) है।

श्री नवरगी के "ए सिम्पल सदानी ग्रामर" तथा "ए सदानी रीडर" के सयुक्त अध्ययन से नागपुरी सीख पाना समव है, इस दृष्टि से ये दोनो पुस्तकें अत्यत उपयोगी है।

(ग) मरकुस कर लिखल सिरी ईसु खिरिस्त कर पवितर सुसमाचार—

इस पुस्तक का प्रकाशन काथलिक मिशन, रांची ने किया। यह बाइबल के सुसमाचार का अनुवाद है। स्मरणीय है कि बाइबल सोसाइटी, कलकत्ता ने भी "मार्क" के सुसमाचार का नागपुरी सस्करण सन् १९०८ मे प्रकाशित किया था।

(घ) संत मतीकर लिखल ईसु खिरिस्त कर पवितर सुसमाचार—

काथलिक मिशन रांची ने इस पुस्तक का प्रकाशन सन् १९६३ मे किया। यह पुस्तक मत्ती के सुसमाचार का नागपुरी अनुवाद है। स्मरणीय है कि कलकत्ते की

बाइबल सोसाइटी ने भी सन् १९०७ ई० मे मत्ती के सुसमाचार का नागपुरी अनुवाद प्रकाशित किया था।

(ङ) ईसु-चरित-चिन्तामइन—

दो सौ आठ पृष्ठो की इस पुस्तक का प्रकाशन कार्थलिक मिशन, राँची ने सन् १९६३ ई० मे किया। इस पुस्तक मे ईसु की जीवनी पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है। पुस्तक ठेठ नागपुरी भाषा मे लिखी गई है। कदाचित् नागपुरी मे प्रकाशित पुस्तको के बीच यह प्रथम पुस्तक है, जिसमे दो सौ से भी अधिक पृष्ठ हैं।

(च) सत जोहन कर लिखल सिरी ईसु कर पवितर सुसमाचार—

इस पुस्तक का प्रकाशन भी कार्थलिक मिशन राँची ने किया। यह बाइबल के सुसमाचार का अनुवाद है।

(छ) संत लुकस कर लिखल ईसु खिरिस्त कर पवितर सुसमाचार—

सन् १९६४ ई० मे कार्थलिक मिशन राँची ने इस पुस्तक का प्रकाशन किया। यह लूक के सुसमाचार का नागपुरी अनुवाद है। स्मरणीय है कि कलकत्ते की बाइबल सोसाइटी ने भी सन् १९१२ ई० मे लूक के सुसमाचार का प्रथम संस्करण प्रकाशित किया था।

(ज) नागपुरिया (सदानी) साहित्य—

इस पुस्तक का प्रकाशन सन् १९६४ ई० मे हुआ। श्री नवरगी द्वारा पूर्व-लिखित पुस्तक "सदानी रीडर" का यह पूरक खड है। इस पुस्तक मे (१) तिरिया चरित, (२) बन्दरा बहुरिया, (३) बन-हरिनी कर बेटा, (४) छोटकी बहुरिया, (५) रविनाथ अउर छबिनाथ, (६) कमल अउर केतकी, तथा (७) बहिरा-बहिरी नामक लोक-कथाएँ सगृहीत हैं। सगुनिया जोलहा नामक लोक-कथा का नाट्य-रूपान्तर (लीला) भी इसमे सम्मिलित है।

पद्य भाग मे डमकच, बिहा गीत, फगुवा, झूमइर, जनी झूमइर, पावस, लहसुआ तथा भजन सगृहीत हैं।

(झ) नागपुरिया सदानी बोली का व्याकरण—

इस पुस्तक का प्रकाशन सन् १९६५ मे हुआ। नागपुरी के प्रकाशित सभी व्याकरणो मे यह व्याकरण अत्यधिक विश्वसनीय एव वैज्ञानिक माना जा सकता है।

(ञ) इन पुस्तको के अलावे श्री नवरगी ने नागपुरी का एक सक्षिप्त शब्दकोष भी तैयार किया है जो प्रकाशित नही हो सका है।

श्री नवरगी ने अकेले नागपुरी भाषा और साहित्य की जो सेवा की है, वह प्रशसनीय ही नही, बल्कि आश्चर्यजनक भी है। ४ नवम्बर १९६८ को विधाता ने हमलोगो से श्री नवरगी को उस समय छीन लिया जबकि हमे उनके निर्देशन की विशेष आवश्यकता थी। इनके निधन के कारण नागपुरी भाषा तथा साहित्य के क्षेत्र

मे जो एक रिक्तता उत्पन्न हो गई है, उसकी पूर्ति सभव नही प्रतीत होती। नागपुरी गद्य तथा पद्य के क्षेत्र मे श्री नवरगी के नवीन प्रयोग कभी भी भुलाए नही जा सकते। सच तो यह है, मृत्यु के पूर्व के सात-आठ वर्षों को उन्होने नागपुरी को ही पूर्णतः समर्पित कर दिया था।

श्री नवरगी के गद्य का एक नमूना पाद-टिप्पणी मे प्रस्तुत है।[११]

(१२) रेवरेण्ड फादर जोहन केरकेट्टा

(क) सादरी धर्मगीत—

१९५४ ई० मे काथलिक प्रेस, राँची ने श्री केरकेट्टा द्वारा सकलित एक "सादरी धर्म गीत" नामक पुस्तिका का प्रकाशन किया। सन १९६३ ई० तक इस पुस्तिका के पाँच सस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। नागपुरी-भाषी ईसाइयो के बीच यह पुस्तिका अत्यत लोकप्रिय है। इसमे ईसाई धर्म सम्बन्धी १४२ गीत है। गीत सख्या—१११ पाद-टिप्पणी मे प्रस्तुत है।[१२]

(ख) एतवार केर पाठ—

सन् १९६२ ई० मे सम्बलपुर से इस पुस्तक का प्रकाशन हुआ। यह अनुवाद है। विभिन्न रविवारो तथा पर्वों के लिए चिट्ठी और सुसमाचार इसमे सगृहीत हैं।

(१३) काथलिक धर्म की सादरी प्रश्नोत्तरी

सन् १९५९ ई० मे इस पुस्तक का प्रकाशन सम्बलपुर (उडीसा) के काथलिक मिशन ने किया। इस पुस्तक मे लेखक का नाम कही भी मुद्रित नही। पुस्तक मे धर्म-

११ ठीक समय मे मुनी पोहँचलँ। जब ऊ दरबार मे पइठलँ, तो इसन लागलक मानो दरबार इजोत होए गेलक। जतना केउ उहाँ जमा होए रहँ सउब अकचकाए के उइठ ठाढ भेलँ तलेक हाथ जोरलँ अउर उनकें मुँड नेवालँ। मुनियो जानलचिन्हल तइरें मधुर मुसकुराय के अउर हाथ जोइरके पहिले राजा के तलेक सउब केउके मुँड नेवालँ, अउर "अपने मनक सुवागत लागिन धइनबाद" कहलँ। सउब दरबारीमन उनके एकटक देखते रइह गेलँ।

ईसु-चरित-चिन्तामइन, पृ० १५, १९६३।

१२ स्वर्ग राइज जाएक लगिन

री० स्वर्ग राइज जाएक लगिन भाईमन,
एखने से डहर के खोजब,
स्वर्ग राइज जाएक लगिन भाईमन।
१—गोटेक डहर सकुर आहे ॥ २ ॥ गोटेक डहर चकर आहे।
२—सकुर डहर स्वर्ग राइज लेजी ॥ २ ॥ चकर डहर नरक गढा लेजी।
३—स्वर्ग राइज मे सदो सुख आहे ॥ २ ॥ नरक गढा मे सदो दुख आहे।

पृष्ठ ६२-६३, १९६३

सबधी प्रश्नो के उत्तर दिए गए हैं। कुछ उदाहरण पाद-टिप्पणी मे प्रस्तुत हैं।[13]

इस प्रकार राँची के जर्मन एवजेलिकल लुथेरान मिशन, एस० पी० जी० मिशन तथा काथलिक मिशन के विभिन्न मिशनरियो ने नागपुरी भाषा की सहायता लेकर अपने धर्म-प्रचार के कार्य को गतिशील बनाया। पर इस तथ्य पर भी सदा ध्यान रखना चाहिए कि इससे नागपुरी भाषा तथा उसके साहित्य के विकास मे जो सहयोग प्राप्त हुआ, वह कम महत्त्वपूर्ण नही। डॉ० जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने सर्वप्रथम बिहारी बोलियो के ऊपर सन् १८८३ ई० मे ध्यान दिया था। बिहारी बोलियो के अध्ययन के पीछे एक सरकारी ध्येय था, जिसकी पूर्ति के लिए "सेवेन ग्रामर्स ऑफ दी डायलेक्ट्स एण्ड सबडायलेक्ट्स ऑफ दी बिहारी लैंग्वेजेज" नामक पुस्तक का प्रकाशन डॉ० ग्रियर्सन ने करवाया। परन्तु डॉ० ग्रियर्सन की दृष्टि नागपुरी (गँवारी) पर नही जा सकी। नागपुरी की उपेक्षा का इतिहास यही से प्रारभ माना जा सकता है। कई वर्षों के उपरात रेवरेण्ड ई० एच० व्हिटली ने सन् १८९६ ई० मे गँवारी की ओर ध्यान दिया। यह एक अलग बात है कि दुर्भाग्यवश "नागपुरी" के ऊपर विद्वानो ने उतना ध्यान नही दिया, जितना कि मैथिली, मगही और भोजपुरी पर। परन्तु यह कम सतोष की बात नहीं है कि छोटानागपुर की विभिन्न भाषाओं की जैसी सेवा ईसाई मिशनरियो ने की है, वह बिहार की किसी भी भाषा या बोली के लिए ईर्ष्या का विषय हो सकती है। श्री होफमैन ने मुडारी का तेरह खडो मे विश्व कोष (एनसाइक्लोपेडिया) प्रस्तुत किया, जो अपने ढग की एक अनोखी चीज है।

जर्मन एवजेलिकल लुथेरान मिशन के श्री इब्नेस की यह धारणा थी कि नागपुरी (जो उन दिनो गँवारी के नाम से जानी जाती थी) की सहायता से ही धर्म-प्रचार सभव है। इसी मिशन के श्री नोतरोत्त मुडारी को यह स्थान दिलाना चाहते थे। श्री इब्नेस के अथक एव अनवरत परिश्रम के कारण उनके द्वारा अनूदित सुसमाचारो की लोकप्रियता बढी और एस० पी० जी० मिशन तथा काथलिक मिशन दोनो ने ही नागपुरी को अपने मिशनो मे समुचित स्थान प्रदान किया। ईसाई मिशनों मे नागपुरी को प्रविष्ट कराने का एकमात्र श्रेय श्री इब्नेस को ही दिया जा सकता है।[14]

१३ प्रश्न सख्या ८८—पाप का हेके ?

—आइन बुईझ के परमेस्वर केर हुकम, उठाए देबहेक पाप हेके।

प्रश्न सख्या १२६—हमरेमन अपन आत्मा के का नियर शुद्ध और पवित्र रखब ? —पृष्ठ १०

—अपन मन मे खुशी से कोनो खराब सोच, चाहे लालच भी करब होले हमरेमन अपन आत्मा के शुद्ध और पवित्र रखब। —पृष्ठ १६।

१४ वाल्टर होल्स्टन, जोहानस एवाजेलिस्चा मोस्सनर ग्लाउब उद जेमिन्दे, गोटिंगेन १९५९ (मूल जर्मनी से)

कार्थलिक मिशन राँची मे कुछ ऐसे पृष्ठ अभी भी सुरक्षित है, जो किसी नागपुरी शब्दकोष की रचना-प्रक्रिया की याद दिलाते है। इन पृष्ठो पर कई प्रकार की लिखावट देखी जा सकती है। ऐसे अनेक पृष्ठ एव छोटी-मोटी पोथियो को छोटा-नागपुर के विभिन्न मिशनो मे ढूँढा जा सकता है। यह सभव है कि विभिन्न मिशनो के द्वारा नागपुरी की और भी पुस्तके प्रकाशित की गई हो, पर अब वे उपलब्ध नही। एस० पी० जी० मिशन की अपनी एक पुस्तक की दुकान है। वहाँ के व्यवस्थापक ने १९६३ मे ही बताया कि कई वर्षो पूर्व सभी पुरानी पुस्तको को कूडा समझकर जला दिया गया। इसकी सभावना है कि उस तथाकथित कूडे मे कुछ अनुपलब्ध एव आवश्यक नागपुरी पुस्तके भी स्वाहा हो गई होगी। जर्मन एवजेलिकल लुथेरान मिशन की स्थिति भी लगभग ऐसी ही है। विश्वयुद्ध प्रारभ हो जाने के कारण इस मिशन के पुराने प्रकाशन तथा कागजात इधर-उधर हो गए। यहाँ का जर्मन एवजेलिकल लुथेरान चर्च प्रेस, राँची के प्राचीनतम प्रेसो मे एक है। नागपुरी की अनेक पुस्तके यहाँ मुद्रित हुई, परन्तु उचित प्रबन्ध एव पुरानी पुस्तको के प्रति उदासीनता के कारण यहाँ भी पुरानी पुस्तको की "प्रेस कापी" सुरक्षित नही रखी गई।

कार्थलिक मिशन की व्यवस्था सतोषजनक है। यहाँ नागपुरी सम्बन्धी प्राय: सभी सामग्रियाँ सुरक्षित मानी जा सकती है।

'सेवेथ डे एडवेंटिस्ट मिशन" का आगमन राँची मे सबसे पीछे सन् १९१९ ई० मे हुआ। इस मिशन की ओर से नागपुरी मे कोई भी पुस्तक प्रकाशित नही की गई। अब राँची के प्राय सभी मिशन हिन्दी मे ही धार्मिक पुस्तको के प्रकाशन मे रुचि दिखला रहे है।

नागपुरी भाषा एव साहित्य के विकास मे जिन ज्ञात-अज्ञात ईसाई मिशनरियो ने कुछ भी कार्य किया है, नागपुरी जगत् सदैव उनका आभारी रहेगा।

३

नागपुरी के विकास में आकाशवाणी, राँची का योगदान

आधुनिक युग मे प्रचार तथा प्रसार के निमित्त रेडियो एक सशक्त माध्यम है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के उपरात सभी प्रकार के संदेश गाँवो तक पहुँचाने मे रेडियो ने विशेष योगदान किया है। सम्पूर्ण राष्ट्र मे आकाशवाणी के क्षेत्रीय-केन्द्रो के खुल जाने से श्रोताओ को अनेक प्रकार के कार्य-क्रमो को सुनने का अवसर प्राप्त होने लगा। बिहार मे सबसे पहले आकाशवाणी केन्द्र की स्थापना पटना मे हुई। सम्पूर्ण बिहार राज्य की सेवा का भार पटना केन्द्र के ऊपर था। देहाती श्रोताओं के लिए "चौपाल" कार्य-क्रम का प्रसारण वहाँ से प्रारम्भ किया गया, जिसका माध्यम भोजपुरी है। बिहार मे अनेक बोलियाँ बोली जाती हैं, अत यह सम्भव नही कि पटना से सभी बोलियो की रचनाएँ पर्याप्त मात्रा मे प्रसारित की जाती। विशेषकर छोटानागपुर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने मे पटने का आकाशवाणी केन्द्र पूर्णत असफल रहा। इसी को ध्यान मे रखकर राँची में आकाशवाणी का एक केन्द्र प्रारम्भ करने के लिए केन्द्र से अनुरोध किया गया। केन्द्र ने जनता की इस माँग को स्वीकार कर २८ जुलाई १९५७ को राँची में आकाशवाणी-केन्द्र की स्थापना की, जो छोटानागपुर के श्रोताओं की निरन्तर सेवा करता आ रहा है।

आकाशवाणी राँची के द्वारा "हमारी दुनिया"[1] नामक साठ मिनटों का एक कार्य-क्रम प्रतिदिन प्रसारित किया जाता है, जिसमें "प्रादेशिक समाचार" भी सम्मिलित है। यह कार्य-क्रम विशेषकर ग्रामीणो के लिए है। राँची केन्द्र से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमो मे "हमारी दुनिया" का विशेष महत्त्व है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत नागपुरी मुण्डारी, उराँव, हो तथा सताली बोली की रचनाएँ भी प्रसारित की जाती हैं। "हमारी दुनिया" मे सामान्य रूप मे नागपुरी का ही प्रयोग किया जाता है।

१. पहले "हमारी दुनिया" का नाम "देहाती दुनिया" था।

राँची मे आकाशवाणी-केन्द्र की स्थापना से यहाँ की बोलियो को एक नई शक्ति प्राप्त हुई। छोटानागपुर लोक-साहित्य की दृष्टि से एक सम्पन्न क्षेत्र है, पर विद्वानों ने छोटानागपुर की इस विशिष्टता की ओर कोई ध्यान नही दिया है। ईसाई मिशनरियो ने इस क्षेत्र मे जो प्रयास किए हैं, वे अमूल्य हैं। यहाँ की बोलियो को एक सामान्य मच की आवश्यकता थी, जिस मच पर सभी बोलियो का सगम हो पाता। इस अभाव की पूर्त्ति राँची मे आकाशवाणी केन्द्र की स्थापना से हुई मानी जा सकती है।

आकाशवाणी राँची ने सामान्यत छोटानागपुर की प्रायः सभी बोलियो की सेवा की है, पर नागपुरी की विशेष रूप से। इस केन्द्र की स्थापना होते ही नागपुरी साहित्य का अवरुद्ध विकास पुन प्रारम्भ हो गया। नागपुरी साहित्य की सीमाएँ प्रत्येक दृष्टि से विस्तृत होने लगी। नूतन साहित्यिक विधाओ के उन्मेष के साथ-साथ नये साहित्यकारो का प्रादुर्भाव हुआ। प्राक्-आकाशवाणी काल मे नागपुरी "पद्य" मे बँधी हुई थी, पर आकाशवाणी की स्थापना के साथ ही वह गद्य के विस्तृत प्रागण मे भी कूकने लगी। प्राक्-आकाशवाणी काल मे नागपुर मे गीत लिखने की प्रथा खूब प्रचलित थी। ये गीत सिर्फ मनोरजन के साधन थे। कुछ लोक-कथाएँ भी प्रचलित थीं, जो नानी के मुखो मे ही सुरक्षित थी। परन्तु नागपुरी की नैसर्गिक सामर्थ्य से किसी ने भी लाभ नही उठाया था। नागपुरी छोटानागपुर की आन्तर-भाषा मानी जाती है। इस आन्तर-भाषा की सहायता प्राप्त कर आकाशवाणी आज छोटानागपुर के गाँव-गाँव मे लोकप्रियता प्राप्त कर रही है।

आकाशवाणी की स्थापना से नागपुरी लोकगीतो तथा लोक कथाओ के उद्धार की ओर लोगो का ध्यान पुन. गया। इन विधाओ के अतिरिक्त निम्नलिखित नई साहित्यिक विधाओं का भी श्रीगणेश —

(१) रेडियो-वार्त्ता
(२) रेडियो-नाटक
(३) कहानियाँ
(४) मौलिक निबन्ध

(१) रेडियो-वार्त्ता

पत्र-पत्रिकाओ मे जो महत्त्व निबन्धों का होता है, वही महत्त्व आकाशवाणी मे रेडियो-वार्त्ता का है। शिल्प की दृष्टि से रेडियो-वार्त्ता तथा निबन्ध के लेखन मे थोडा ही भेद है। आकाशवाणी, राँची की स्थापना के पूर्व नागपुरी में न तो रेडियो-वार्त्ता की उपयोगिता थी और न आवश्यकता ही। आकाशवाणी की स्थापना से इस विधा को विशेष बल प्राप्त हुआ। आधुनिक विषयो पर आकाशवाणी के द्वारा

नागपुरी में वार्त्ताएँ प्रस्तुत की जाने लगी। ये वार्त्ताएँ विशेषत ग्रामीणो की रुचि के अनुकूल होती हैं। आकाशवाणी के द्वारा प्रसारित होने वाली वार्त्ताओ में कृषि, योजना, साहित्य, स्वास्थ्य तथा अन्य विषयो को स्थान मिलता रहा है। इस नई विधा के आविर्भाव से नागपुरी गद्य को पुष्ट होने का अवसर प्राप्त हुआ। आकाशवाणी रांची ने नागपुरी जगत् को कई सफल वार्त्ताकार दिए जिनमे सर्वश्री योगेन्द्र नाथ तिवारी, प्रफुल्ल कुमार राय, रघुमणि राय, लक्ष्मणसिंह, राधाकृष्ण सुशील कुमार, विष्णुदत्त साहु, जगदीश नारायण सिंह, जगतमणि महतो, सुश्री यशोदा कुमारी तथा श्रीमती सरस्वती, विनेश्वर प्रसाद 'केशरी' तथा श्रवण कुमार गोस्वामी आदि हैं।

(२) रेडियो-नाटक

विशेष उत्सवो पर नाटक खेलने की प्रथा छोटानागपुर मे बहुत दिनो से चली आ रही है। परन्तु नागपुरी मे मौलिक नाटको का नितात अभाव है। फलस्वरूप हिन्दी के नाटक ही अब तक खेले जाते रहे थे। हिन्दी नाटक भी नागपुरी मंच पर आकर लगभग नागपुरी नाटक का ही स्वरूप ग्रहण कर लेते हैं, क्योकि पात्र अपनी सुविधा के अनुसार हिन्दी कथोपकथनो का रूपान्तर नागपुरी मे कर लिया करते है। आज भी नागपुरी साहित्य मे मौलिक नाटको का अभाव बना है।

आकाशवाणी रांची की स्थापना से नागपुरी नाटको का अभाव तो दूर नहीं हो सका, पर किसी सीमा तक उस अभाव को दूर कर सकने मे रेडियो नाटको ने विशेष भूमिका निभाई है। शिल्प की दृष्टि से मच पर अभिनीत नाटक तथा रेडियो नाटक मे बड़ा अन्तर है। रेडियो नाटककार को सामान्य नाटककार की अपेक्षा अधिक सजग रहना पड़ता है। मच पर प्रस्तुत नाटक दृश्य तथा श्रव्य दोनो होता है, पर रेडियो से प्रसारित नाटक, मात्र श्रव्य होता है। इस सीमा को ध्यान मे रखकर ही रेडियो नाटक लिखे जाते हैं। इस कठिन शिल्प-विधान के रहते हुए भी नागपुरी मे अत्यधिक सफल रेडियो नाटक लिखे गये। इन नाटको का नागपुरी-भाषी जनता ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया।

नागपुरी रेडियो नाटक के लेखन के क्षेत्र मे जिन व्यक्तियो को विशेष ख्याति तथा सफलता प्राप्त हुई, उनमे सर्वश्री सुशील कुमार, विष्णुदत्त साहु तथा श्रवण कुमार गोस्वामी के नाम उल्लेखनीय हैं। इन लेखको के अतिरिक्त सर्वश्री गंगाप्रसाद भुवनेश्वर "अनुज" तथा स्व० गिरिधारीसिंह आदि लेखको के रेडियो नाटक भी बड़े सफल प्रमाणित हुए।

श्री सुशीलकुमार

आकाशवाणी के रांची-केन्द्र ने श्री सुशीलकुमार का धारावाहिक रेडियो-नाटक "सोना, सोना, सोना" सन् १९५७ के दिसम्बर से [illegible]

किस्तों मे प्रसारित किया। चोका, वोका, कोका इस नाटक के तीन पात्र हैं, जिनके माध्यम से देश मे चल रही पंचवर्षीय योजनाओं का परिचय लोगों को प्रदान किया गया। सम्पूर्ण नाटक-शृंखला मे ऐसा कहीं भी नहीं लगता कि ये प्रचार के लिए लिखे गए नाटक हैं। हास्य तथा व्यग्य से पूर्ण कथोपकथन इन नाटको को जीवत बना देते हैं। "चोका, वोका, कोका" को श्रोताओं ने विशेष रूप से सराहा, अत सन् १९५८ के वर्ष मे एक और धारावाहिक नाटक "तेतर केर छाँहे" का प्रसारण प्रारम्भ हुआ।

"चोका, वोका, कोका" के अतिरिक्त श्री सुशील कुमार का धारावाहिक नाटक "लोबोसिंह" ६ किस्तो मे प्रसारित किया गया। इसके कुछ अश प्रकाशित भी हुए हैं। इन नाटको को सुनकर अनायास ही श्री रामेश्वरसिंह काश्यप का प्रसिद्ध रेडियो नाटक "लोहासिंह" की याद आ जाती है।

श्री विष्णुदत्त साहु

जनवरी १९५८ से जून १९५८ तक श्री विष्णुदत्त साहु के "तेतर केर छाँहे" नामक धारावाहिक रेडियो-नाटक का प्रसारण आकाशवाणी राँची से किया गया। ये नाटक भी पाक्षिक रूप से प्रसारित हुए। "तेतर केर छाँहे" के अन्तर्गत सोलह नाटको का प्रसारण हुआ।

"तेतर केर छाँहे" अर्थात् इमली के वृक्ष के नीचे मधरा नामक गाँव के लोगो की बैठक हुआ करती है, जिसमे सुखराम भगत, घिस्सू, भगतिन, टूटल सिंह, हरखू भगत, मास्टर साहब तथा तिवारी जी इन सात पात्रो के बीच बातचीत होती है और वे विभिन्न विषयो पर बातें करते हैं। प्रत्येक नाटक मे एक विशेष विषय की चर्चा होती है। सामान्यत. प्रत्येक नाटक मे श्री साहु ने एक गीत रखा है।

श्री विष्णुदत्त साहु के नाटको की भाषा श्री सुशील कुमार की भाषा की तरह फुदकती हुई नही। इन नाटको पर "प्रचार" हावी-सा लगता है, फिर भी नागपुरी-क्षेत्र के श्रोताओं ने इन नाटको को काफी पसन्द किया।

अब ये नाटक पुस्तकाकार रूप मे प्रकाशित हो गए है, जिन पुस्तकों के नाम क्रमश "तेतर केर छाँहे" तथा "मादर के बोल पर" हैं। इन पुस्तको का प्रकाशन जन-सम्पर्क विभाग, बिहार सरकार ने किया है।

श्रवण कुमार गोस्वामी

श्री विष्णुदत्त साहु लिखित "तेतर केर छाँहे" का प्रसारण जून १९५८ तक होता रहा। जुलाई १९५८ से दिसम्बर १९५८ तक इस कार्य-क्रम के लेखन तथा निर्देशन का भार श्रवण कुमार गोस्वामी को सौंप दिया गया। इस अवधि मे

श्रवण कुमार गोस्वामी के चौदह रेडियो नाटक प्रसारित हुए। ये नाटक पिछले रेडियो नाटकों से कुछ भिन्न रहे। इन नाटकों में "प्रचार" पर ध्यान कम रखा गया और श्रोताओं के मनोरंजन तथा नाटकीयता पर अधिक। प्रत्येक नाटक के अंत में एक गीत की योजना भी इन नाटकों में थी, जिसके कारण ये नाटक श्रोताओं के द्वारा खूब पसन्द किए गए। अभिनेताओं को अपनी प्रतिभा-प्रदर्शन का सर्वप्रथम अवसर इन्हीं नाटकों में प्राप्त हुआ। रेडियो-नाटक के शिल्प-विधान की दृष्टि से भी ये नाटक सफल प्रमाणित हुए। इस शृंखला के कुछ नाटकों को श्री तीनकौड़ी साहु ने राँलू नामक ग्राम में मंच पर प्रस्तुत किया, जो दर्शकों के द्वारा अत्यधिक प्रशंसित हुए।

उपर्युक्त तीन रेडियो नाटककारों के अतिरिक्त अन्य लेखकों की रचनाएँ भी आकाशवाणी से यदा-कदा प्रसारित की गई। स्वर्गीय किशोरी सिंह (आकाशवाणी के कर्मचारी कलाकार) स्वयं एक अच्छे नाटककार थे। उनसे नागपुरी साहित्य को विशेष आशाएँ थीं, पर दुर्भाग्यवश उनका असमय ही निधन हो गया।

रेडियो-नाटक के क्षेत्र में आकाशवाणी, राँची के तत्कालीन अधिकारी श्री सत्यप्रकाश 'किरण' ने विशेष रुचि प्रदर्शित की। उन्हीं के श्रम के कारण नागपुरी साहित्य को अनेक सफल नाटककार तथा अभिनेता प्राप्त हुए। अब तो आकाशवाणी राँची नागपुरी रेडियो-नाटकों के प्रसारण के प्रति उदासीनता दिखलाने लगी है।

(३) कहानियाँ

नागपुरी में प्रचलित लोक-कथाओं की संख्या अनेक है। अब तक नागपुरी लोक-कथाओं का संकलन एवं प्रकाशन संभव नहीं हो पाया है। आकाशवाणी की स्थापना से लोक-कथाओं के संकलन में अनेक व्यक्तियों की रुचि जाग्रत हुई है।

आकाशवाणी, राँची केन्द्र के द्वारा अक्सर नागपुरी लोक-कथाएँ प्रसारित हुआ करती हैं। इन लोक-कथाओं के संग्रह-कर्त्ताओं में सर्व श्री पीटर शान्ति नवरंगी, भुवनेश्वर 'अनुज', शिवशंकर राय, श्रवण कुमार गोस्वामी तथा सुश्री मीना कुमारी के नाम उल्लेखनीय हैं।

नागपुरी में मौलिक कहानियाँ भी इधर लिखी जाने लगी हैं, पर इस दिशा में आकाशवाणी राँची ने कोई विशेष कदम नहीं उठाया है परन्तु इसकी स्थापना से कुछ ऐसे साहित्यानुरागी अवश्य सामने आए हैं, जिनकी रुचि लोक-कथाओं के संग्रह में है।

(४) निबन्ध

रेडियो के द्वारा प्रसारित होने वाले निबन्धों तथा वार्ताओं में विशेष अन्तर नहीं रह पाता, फिर भी निबन्ध के ऊपर अलग से विचार किया जाना समीचीन

होगा। नागपुरी मे कुछ मौलिक निवन्ध और कुछ निवन्ध हिन्दी माध्यम से नागपुरी भाषा तथा साहित्य के सम्बन्ध मे आकाशवाणी राँची के द्वारा प्रसारित किए गए। इन दोनो प्रकार के निवन्धो से नागपुरी साहित्य की प्रगति को विशेष वल प्राप्त हुआ।

नागपुरी के मौलिक निवन्धकारो मे सर्वश्री योगेन्द्रनाथ तिवारी, पीटर शाति नवरगी, राधाकृष्ण, सुशील कुमार, जगदीशनारायण सिंह "पवन", रघुमणि राय तथा लक्ष्मण सिंह आदि प्रमुख है।

सर्व श्री योगेन्द्रनाथ तिवारी, श्रवण कुमार गोस्वामी, विसेश्वर प्रसाद "केशरी" तथा वलदेव साहु आदि ने नागपुरी साहित्य के सम्बन्ध मे विवेचनात्मक निवन्ध हिन्दी मे प्रस्तुत किए।

उपर्युक्त विधाओ के अतिरिक्त नागपुरी लोक-गीतो का प्रसारण आकाशवाणी, राँची केन्द्र की एक विशिष्ट उपलब्धि है। पर्व-त्योहार तथा विशिष्ट अवसरो के अनुकूल नागपुरी कार्य-क्रम आकाशवाणी, राँची के द्वारा निरन्तर प्रसारित किए जाते है। इन कार्य-क्रमो का रसास्वादन नागपुरी-भाषी श्रोता वडे चाव से करते है।

आकाशवाणी, राँची की उपलब्धियाँ और सीमाएँ

२७ जुलाई १९५७ को आकाशवाणी, राँची की स्थापना हुई। उस समय "देहाती दुनिया" के सचालन का भार श्री जुलियस तीगा तथा श्री सत्यप्रकाश नारायण "किरण" के हाथो था। हिन्दी के सुप्रसिद्ध कथाकार श्री राधाकृष्ण भी उस समय आकाशवाणी, राँची के एक विशिष्ट अधिकारी थे, जो स्वय नागपुरी भाषा तथा साहित्य मे गहरी पैठ रखते हैं। इन तीन व्यक्तियो ने "देहाती दुनिया" नामक कार्यक्रम को विशेष प्रभावोत्पादक वनाने का सफल प्रयास किया। श्री सत्यप्रकाश नारायण "किरण" नवोदित प्रतिभाओ को ढूँढ निकालने मे दक्ष थे, फलस्वरूप "देहाती दुनिया" के अन्तर्गत प्रसारित होने वाली तत्कालीन रचनाओ का स्तर पर्याप्त सतोषजनक तथा उन्नत रहा। श्री "किरण" का स्थानान्तरण अन्यत्र हो गया। श्री राधाकृष्ण ने आकाशवाणी को छोड दिया। इन व्यक्तियो के स्थान पर नये अधिकारी आते-जाते रहे हैं, पर "हमारी दुनिया" (भूतपूर्व "देहाती दुनिया") (विशेषतः नागपुरी) के कार्यक्रमो मे प्रगति के लक्षण दिखाई नही पडते।

२७ जुलाई १९५७ से लेकर अब तक आकाशवाणी, राँची ने नागपुरी साहित्य के क्षेत्र मे अनेक सफल प्रयोग किए। नागपुरी मे "रेडियो-नाटक" का लेखन आकाशवाणी, राँची की एक अन्यतम देन है, जो अविस्मरणीय है। आकाशवाणी,

रांची के द्वारा प्रसारित धारावाहिक रेडियो-नाटकों को लोग आज भी बड़े आदर के साथ याद करते हैं।

आकाशवाणी, रांची ने नागपुरी को गद्य-लेखन के क्षेत्र में स्वावलम्बी बनाया। उसने नागपुरी साहित्य को अनेक सफल गद्यकार दिए। आकाशवाणी की स्थापना से नागपुरी साहित्य-जगत् में जागृति की एक लहर दौड़ गई।

आकाशवाणी, रांची की अपनी कुछ सीमाएँ भी रही हैं। आरम्भिक काल में 'देहाती दुनिया" में नागपुरी कार्यक्रमों को अधिक समय दिया जाता था, परन्तु इधर "हमारी दुनिया' के अन्तर्गत, हो, उरांव मुण्डारी तथा संथाली रचनाओं को भी समय दिया जाने लगा है, अतः नागपुरी को कम समय दिया जाना बिलकुल स्वाभाविक है। अब "हमारी दुनिया" में नागपुरी रचनाओं को प्रत्येक महीने में लगभग दो सौ पचास मिनटों की अवधि प्रदान की जाती है। समय की इस सीमा के कारण नागपुरी साहित्य के प्रसारण में कमी हुई है। इसके साथ-साथ नागपुरी रचनाओं के स्तर में गिरावट भी आने लगी है। इसके लिए दोषी कौन है, यह कहना कठिन है। इन दिनों नागपुरी रचनाओं के स्तर में गिरावट की प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है, जो आकाशवाणी के लिए भी शोचनीय है।

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि इन सीमाओं के होते हुए भी आकाशवाणी, रांची ने नागपुरी साहित्य की अमूल्य सेवाएँ की हैं। यदि आकाशवाणी की स्थापना न हुई होती तो शायद नागपुरी गद्य तथा पद्य की अनेक विधाओं का श्रीगणेश भी नहीं हो पाता। इस दृष्टि से नागपुरी भाषा तथा साहित्य के विकास में आकाशवाणी के रांची केन्द्र ने जो उल्लेखनीय योगदान किया है वह कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

४

नागपुरी के विकास में पत्र-पत्रिकाओ की भूमिका

किसी भी भाषा तथा साहित्य के विकास मे पत्र-पत्रिकाओ की भूमिका महत्त्वपूर्ण हुआ करती है। इस दृष्टि से नागपुरी अभागिन ही मानी जाएगी, क्योकि नागपुरी मे आज भी ऐसी कोई पत्रिका नही, जिसके माध्यम से नागपुरी-भाषी अपनी भावनाओ को अभिव्यक्त कर सके। पर नागपुरी पूर्णतः अभागिन भी नही मानी जा सकती, क्योकि इसके विकास मे अनेक पत्र-पत्रिकाओ ने महत्त्वपूर्ण योग दिया है। यहाँ ऐसी ही कुछ पत्र-पत्रिकाओ का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है। इन पत्र-पत्रिकाओ को सुविधा के लिए दो वर्गो मे रखा जा सकता है —

(१) नागपुरी मे प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ, तथा
(२) नागपुरी रचनाएँ प्रकाशित करने वाली पत्र-पत्रिकाएँ

(१) नागपुरी मे प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ

(क) नागपुरी के प्रथम समाचार-पत्र का प्रकाशन ३ फरवरी १९४७ को हुआ। विवरण इस प्रकार है —

(क) पत्र का नाम	आदिवासी
(ख) प्रकाशन-अवधि	हफ्तेवारी खबर-कागज
(ग) प्रकाशन-स्थल	राँची
(घ) सपादक	राधाकृष्ण
(ङ) प्रकाशक	दि पब्लिसीटी डिपार्टमेंट गवर्नमेंट ऑफ बिहार
(च) मुद्रक	के०सी० त्रिवेदी, सुदर्शन प्रेस, राँची
(छ) पृष्ठ-सख्या तथा आकार	फुलस्केप आठ पृष्ठ
(ज) वार्षिक शुल्क	१॥)

(झ) एक प्रति ०
(ञ) लिपि देवनागरी

"आदिवासी" नागपुरी में प्रकाशित प्रथम समाचार-पत्र है, पर नागपुरी में इसका प्रकाशन अधिक दिनों तक संभव नहीं हो सका। इसके प्रारंभिक तीन अंक पूर्णत. नागपुरी में प्रकाशित किए गए। चौथे तथा पाँचवें अंक को संयुक्त कर 'जगल-अंक" प्रकाशित किया गया। इस अंक से ही नागपुरी को हटाकर "आदिवासी" का प्रकाशन हिन्दी में किया जाने लग गया। इस सम्बन्ध में इसके भूतपूर्व सम्पादक श्री राधाकृष्ण से यह जानकारी प्राप्त हुई कि यह परिवर्तन राजनीतिक दबाव के कारण करना पड़ा था।

"आदिवासी" के प्रारंभिक तीन अंकों में कविता, लेख, संपादकीय, समाचार, टिप्पणी, चिट्ठी, बुझौवल तथा लोक-कथाओं का प्रकाशन किया गया। एक स्थानीय समाचार-पत्र में जो विशेषताएँ होनी चाहिएँ, वे सारी विशेषताएँ इन अंकों में सम्मिलित थी। सरकारी समाचार-पत्र होते हुए भी पाठकों के पत्रों का प्रकाशन "चिट्ठी' के अन्तर्गत इस पत्र की एक विशिष्टता थी। सम्पादन तथा मुद्रण की दृष्टि से भी ये अंक अत्यन्त स्वच्छ एवं आकर्षक थे।

"आदिवासी" के प्रथम अंक में शिलानंद ने लिखा है—"हमरे बाबु राधाकिसन कर बड़न मानत ही कि उनकर जतन से अब ए दानी (सदानी)[1] भाखाओं में एकठो खबर कागज निकलेक लागलक। .... हम आसरा करतही कि छोटानागपुर कर सउबे केउ इ पहिला सदानी खबर-कागज के देइख के खुस होवएँ अउर इके घर-घर पसराएक कर जतन करवएँ। हम सोचीला कि इ खबर-कागज छोटानागपुर कर सउब जाइत-पाईत कर अदमीमन के एक करी, सउब में पेरेम कर सम्बन्ध जोरी, सउब के उनइत करेक कर डहर बताइ और हमर देस के ऊँच उठाइ।"[2] वास्तव में "आदिवासी" के प्रकाशन का यहाँ के लोगों ने समुचित स्वागत किया था। श्री शिलानंद ने अपने निबंध में "आदिवासी" से जो आशाएँ की थी, वे निराधार नहीं थी, पर राजनीतिक-कुचक्रों के कारण ऐसा नहीं हो सका। यदि "आदिवासी" का प्रकाशन आज भी नागपुरी में होता रहता तो शायद नागपुरी का साहित्य और भी विकसित तथा व्यापक होता।

'आदिवासी" का प्रकाशन आज भी हो रहा है। यह सत्य है कि "आदिवासी" अब एक हिन्दी-साप्ताहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है, पर इसके भूतपूर्व संपादक श्री राधाकृष्ण तथा कार्यकारी-संपादक श्री सुशीलकुमार लाल सदैव इसके लिए प्रयत्नशील रहे हैं कि "आदिवासी" में नागपुरी रचनाओं को निरन्तर सम्मिलित

१ 'ए दानी" यह मुद्रण की भूल है इसे सदानी होना चाहिए।
२. "सदानी भाखा" से, आदिवासी ३ फरवरी १९५३, पृष्ठ २, कालम १।

किया जाय। छोटानागपुर मे प्रचलित जितनी भी भाषाएँ या बोलियाँ हैं उनकी रचनाओं को "आदिवासी" मे सदा से स्थान मिलता रहा है। १६४७ से लेकर अब तक अनेक नागपुरी कवियो, लेखको, निबन्धकारो, कहानीकारो, नाटककारो तथा अनुसधानाओ को प्रकाश मे लाने का श्रेय "आदिवासी" को है। एक प्रकार से नागपुरी-भाषी लोगो के लिए "आदिवासी" ही एकमात्र ऐसा मच है, जहाँ से वे कुछ बोल सकते हैं। परन्तु, सरकारी साप्ताहिक होने के कारण "आदिवासी" की सीमाएँ किसी से छिपी नही हैं। राजकीय अनुशासन का पालन करते हुए भी इस पत्र ने नागपुरी के विकास मे जो योगदान किया है, वह अविस्मरणीय ही नही, ऐतिहासिक भी है।

(ख) नागपुरी मे दूसरे पत्र का प्रकाशन अप्रैल १६६१ को हुआ। विवरण इस प्रकार है—

(क) पत्र का नाम	नागपुरी
(ख) प्रकाशन-अवधि	मासिक
(ग) प्रकाश-स्थल	राँची
(घ) सम्पादक	योगेन्द्रनाथ तिवारी
(ङ) प्रकाशक	योगेन्द्रनाथ तिवारी, नागपुरी भाषा परिषद्, राँची।
(च) मुद्रक	'सरस्वती प्रेस, कोर्ट कम्पाउण्ड, राँची।
(छ) पृष्ठ-सख्या तथा आकार	डवल क्राउन अठपेजी (आकार) सोलह (पृष्ठ सख्या)
(ज) वार्षिक-शुल्क	तीन रुपये
(झ) एक प्रति	२५ नये पैसे
(ञ) लिपि	देवनागरी

नागपुरी भाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित मासिक "नागपुरी" का ऐतिहासिक महत्त्व है। इसके प्रकाशन से नागपुरी साहित्य मे उत्साह की नई लहर दौड़ गई थी और लोगो को यह विश्वास हो चला था कि नागपुरी भाषा तथा साहित्य के विकास को एक नई दिशा प्राप्त होकर रहेगी। परन्तु, दुर्भाग्यवश ऐसा नही हो सका। मुश्किल से नागपुरी के चार ही अक प्रकाशित हो सके—अप्रैल अक, जून अक (यह मई तथा जून का सम्मिलित अक था) जुलाई अक तथा अगस्त अंक। नागपुरी का प्रकाशन बद हो जाएगा इसका आभास मई-जून अक मे प्रकाशित नागपुरी भाषा परिषद् के मुख्य मत्री श्री प्रफुल्लचद्र राय के "इने उने केर बात, आउर अपनइने से" शीर्षक निवेदन से मिल गया था—

"ढेइर मेहनत कोसिस करल पर अपनइन केर ई जे महिनवारी कागज "नागपुरी" निकलये एखन पक्का निकलल नइ कहेक चाही। इकर मे कएठो बात

सात हय। पहिला, इके महिनवारी निकलाएक ले एक न (एक)[3] आदमी के सटेक चाही। जे केउ खटी मेके एखन कुछ नइ मिली। मगर कागज के महिनवारी निकलाहेंक होई। कौन-कौन बात कागज में छपी सेकर देनेक, उके ठीक करेक आउर आपन चट ने आपन विचार राखेक काम उनकर हेके। दोसरा, कागज के महिनवारी निकलाएले कागज केर दाम आउर छपाई खरचा चाही। महीना परती करीब डेढ़ सव रुपइया केर हिसाब है। महिनवारी एतना रुपइया नइ भेल से बरावइर कागज निकलना भारी बात हेके। रुपइया के तो जोगाड करहेंक होई। तीसरा, माइन लेख, आदमी भी मिल गेलक, रुपइया कर जोगाड भी होय गेलक तेउ कागज नइ निकली। कागज भीतरे जे छपाएला सेकर लिखवइया चाही। से लिखवइया मनकेर भारी जरूरत है। चउथा, कागज केर छपालेहे नई होई। इकर बिक्री ले परचार चाही। ई काम केर करवइया सहर आउर देहाइन मे होवहेंक चाही तवे कागज बढ़िया से चली। पांचवां नागपुरी भाखा बोलवइया-मन कर मन मे आपन बोली, साहित्य आउर काव्य पर गरब करेक चाही आउर मन मे कल्नो इके हीनेक नइ चाही।

जब अपनेन सब केउ इ पांचो चीज के अपनावें तो हमरे केर नागपुरी बोली हँसे लागी। उकर हँसी सुइन के कतना जे आदमी उकर बटे खिचावें सेकर कोनो हिसाव नखे। इकर में हमरइन-सब केर मान आउर सान है।"[4]

जो आशंका थी वह सच निकली। अगस्त १९६१ के अंक के पश्चात् नागपुरी का प्रकाशन बन्द हो गया।

"नागपुरी" के चार अंकों में सर्वश्री योगेन्द्रनाथ तिवारी, शिवावतार चौधरी, छुन्नूलाल अम्बिका प्रसाद नाथ साहदेव, प्रफुल्लकुमार राय, रामेश्वर राम, हरिनन्दन राम, विशेश्वर ओझा, सुरेखा कुमारी, छछन्दल, विकल, जगनिवास नारायण तिवारी, महादेव उरांव, नईमुद्दीन मिरदाहा, विमेश्वर प्रसाद केशरी, भवभूति मिश्र, लेदाराम तथा विनय कुमार तिवारी आदि समसामयिक लेखकों के अलावा पुराने कवियों यथा घासीराम तथा हनूमानसिंह आदि की रचनायें प्रकाशित हुई। इन सभी अंकों में गद्य की प्रधानता मिलती है। सम्पादक के द्वारा लिखे गए "नागपुरी बोली' (अप्रैल १९६१), "हमरे केर बोली" (जून १९६१), "नागपुर में नागपुरी (जुलाई १९६१) तथा "आपन भाखाक बात" (अगस्त १९६१) शीर्षक सम्पादकीय यह प्रमाणित करते हैं कि नागपुरी में उच्चकोटि का गद्य भी लिखा जा सकता है। मौलिक कहानी-लेखन के क्षेत्र में श्री प्रफुल्ल कुमार राय[5], श्री हरिनन्द राम[6] तथा

३. (एक) मुद्रण में छूट गया है।

४. आवरण-पृष्ठ—२ से।

५. बिन बातक बात (अप्रैल १९६१) 'अवतरे नी मिले बूझे' आउर किलकिसो (जून १९६१)

६ भाइगे बाचलक जिया मोर (जून १९६१)।

श्री विकल[7] की कहानियाँ उल्लेखनीय है। नागपुरी कविताओ पर श्री भवभूति मिश्र[8] तथा श्री विसेश्वर प्रसाद केशरी[9] के द्वारा नागपुरी मे प्रस्तुत विवेचनो से यह आशा बँधती है कि नागपुरी मे आलोचना के लिए शब्दावली तथा अभिव्यक्ति की कोई विवशता नही।

सन् १९६४ मे "नागपुरी भाषा-परिषद्" राँची के द्वारा एक चार पृष्ठो का प्रचार-पत्र निकाला गया, जिसमे "नागपुरी" (महिनवारी कागज) के पुन प्रकाशन का उल्लेख है। इससे ये विवरण प्राप्त होते है—

प्रधान सम्पादक	प० योगेन्द्रनाथ तिवारी
महिनवारी चदा	५० कचिया
एक बरिसकर चदा	५ रुपया
मनिआडर भेजेक पता	मनीजर नागपुरी, प्रगति प्रेस, रातू रोड, राँची।

इस प्रचार-पत्र मे अपनी भाषा के महत्त्व पर पूरा-पूरा प्रकाश डाला गया है और आशा की गई है कि 'नगपुरिया ससकिरती के जीआएक जोगाएक जगाएक लागिन" लोग बडी सख्या मे "नागपुरी" के ग्राहक बनेंगे। वार्षिक ग्राहको को यहाँ तक छूट दी गई थी कि यदि वे धान कटने के बाद चदा देना चाहे तो ऐसा भी कर सकते है[10] पर शायद पाठको के ऊपर इस छूट का भी कोई अनुकूल प्रभाव नही पड सका। इस बीच "नागपुरी" के पुन प्रकाशन की पूरी योजना बनाई जा चुकी थी और पत्र का एक अक प्रेस मे प्रकाशनार्थ दिया भी जा चुका था। इस बार डबल-क्राउन १६ पेजी मे "नागपुरी" का प्रकाशन किया जाने वाला था। इस प्रकाश्य अक के मुझे सोलह मुद्रित पृष्ठ प्राप्त हुए है, जिनमे सर्व श्री राधाकृष्ण (डाइन-कर पैरी), भुवनेश्वर "अनुज" (कचन नाथ) तथा नईम उद्दीन मिरदाहा (गीत किसानु) की रचनाएँ सम्मिलित है। इस प्रकार नागपुरी भाषा परिषद् की यह योजना भी सफल नही हो सकी, जबकि परिषद् को श्री सुशील कुमार बागे (तत्कालीन मत्री, बिहार सरकार) तथा श्री शिवप्रसाद साहू (लोहरदगा के प्रसिद्ध व्यवसायी) का सरक्षण प्राप्त था।

"नागपुरी" का पुन प्रकाशन अब तक सभव नही हो सका है। आज भी लोग इस पत्र के पुराने अको की चर्चा करते है और यह अनुभव करते है कि "नागपुरी" का पुनः प्रकाशन होना चाहिए। श्री योगेन्द्रनाथ तिवारी ने वृद्धावस्था मे

७ अब भेली लेदरा पिधइया (जुलाई तथा अगस्त १९६१)।

८ नागपुरी लोक गीत मे शाक्त भावना (हिन्दी से अनूदित जुलाई तथा अगस्त १९६१)।

९ अम्बा मजरे मधु मातलइ रे (जुलाई १९६१)।

१० जे माई धान कटेंक बाद रुपया भेंजवें सें चिठी से खुलासा लिख देवें तबले उनकरठन कागज भेंजेक सुरु होए जाई। मुला उनके धान कटते हैं रुपया तुरत भेइज देवेक होई।

भी "नागपुरी" का प्रकाशन कर नागपुरी तथा उसके साहित्य का विकास-पथ प्रशस्त किया है। वह आज भी "नागपुरी" को अपनी सेवाएँ देने को उद्यत हैं। परन्तु इस दिशा मे नागपुरी भाषा परिषद् की निष्क्रियता ही कदाचित् सबसे अधिक बाधक है। यदि भोजपुरी तथा मगही मे पत्रिकाओं का अनवरत प्रकाशन सभव है, तो कोई कारण नही कि "नागपुरी" के एक मासिक-पत्र का पोषण नागपुरी-भाषी जनता न कर सके।

(ग) नागपुरी मे तीसरे पत्र का प्रकाशन अक्तूबर १९६६ को हुआ। विवरण इस प्रकार है—

(क) पत्र का नाम	नागपुरिया समाचार
(ख) प्रकाशन-अवधि	मासिक
(ग) प्रकाशन-स्थल	राँची
(घ) प्रधान सम्पादक[११]	लक्ष्मीनारायण तिवारी
सम्पादक	रूपा और ज्वाला
(ङ) प्रकाशक	रूपा और ज्वाला
(च) मुद्रक	बागला प्रेस, राँची
(छ) पृष्ठ-संख्या तथा आकार	पृष्ठ-संख्या चार
	आकार-डबल क्राउन चारपेजी
(ज) वार्षिक शुल्क	१-२० पैसे
(झ) एक प्रति	१० पैसे
(ञ) लिपि	देवनागरी

नागपुरी के जीवन मे "नागपुरिया समाचार" का प्रकाशन एक संयोग ही माना जाएगा, क्योंकि इसके पहले "नागपुरी" के प्रकाशन की सारी तैयारियाँ धरी-की-धरी रह गई थीं। यह पत्र कुछ लोगो के समक्ष आकस्मिक रूप से प्रस्तुत हुआ और देखते-ही-देखते लुप्त भी हो गया। "नागपुरिया समाचार" चार पृष्ठों का समाचार मासिक था। एक माह के बासी समाचारों को पढ़ने के लिए शायद कोई भी प्रस्तुत न हो, संभवत. इसी कारण समाचार-पत्र के रूप मे इसे लोकप्रियता नहीं मिल सकी। इसके प्रकाशन के उद्देश्य के सम्बन्ध मे प्राय सभी अंको मे यह कहा गया है—

> "नगपुरिया बोली के आगे बढ़ावे के ख्याल में ई समाचार पत्र निकालल जात है। जे के भी ई समाचार पत्र में समाचार या

११ इस पत्र के सभी अंकों में लक्ष्मीनारायण तिवारी (प्र० स०) छपा है, इससे यह भ्रम भी होता है लक्ष्मीनारायण तिवारी प्रधान सम्पादक रहे हों, पर वह प्रधान सम्पादक थे।

कोई कहानी गीत भेजेक होय, खुशी से भेइज सकीला। समाचार पत्र छपेक पन्द्रह दिन पहिले खबैर पहुँच जायक चाही। नीचे लिखल मुताबिक पता मे भेजव—

सम्पादक

नागपुरिया समाचार

वागला प्रेस, मेन रोड, राँची।"

"नागपुरिया समाचार" के सभी अको को देखने के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि "नागपुरी" को आगे बढाने (जो इसका घोषित उद्देश्य है) के बहाने इससे कुछ निश्चित उद्देश्यो को पूरा करना था, जो इस प्रकार है—

(क) आनन्द मार्ग का प्रचार करना, तथा

(ख) चुनावो मे नागपुरिया समाज के नाम पर "प्राउटिस्ट ब्लॉक" के उम्मीदवारो के लिए जनमत तैयार करना

इस पत्र का प्रकाशन १९६७ के आम-चुनावो के कुछ माह पूर्व किया गया था, इससे भी यह स्पष्ट है कि इसके प्रकाशन का उद्देश्य राजनीतिक था। फरवरी १९६७ के अक के प्रथम पृष्ठ मे प्रउत (प्राउटिस्ट ब्लॉक) के सम्बन्ध मे प्रकाशित किया गया है—

["प्रउत"]

मानव समाज मे जे जाईत पाईत कर भेद-भाव है ऊ बनावटी है। सब भगवान कर छऊवा हकें। ई दुनिया मे सबकर बराबईर अधिकार है। लेकिन आई-भक काइल्ह समाज के दुभाग मे बाइट सकत ही। एक नैतिक औउर दोसर अनैतिक। ब्राह्मण, क्षत्रिय बनिया भले ही अनैतिक दल के आदमी कहल जायल। ईकर मे बाँचेक उपाय एहे है कि सब कोई मिल जुइल के अनैतिक दल के आदमी मन कर विरुद्ध आवाज उठायक चाही। दुनिया कर कल्याण खातिर महामानव श्री पी० आर० सरकार केर बनावल 'प्रउत" मे मदद करेक चाही। "प्रउत" समाजवाद केर एक नावा विचार हेके जे नैतिकता आउर आध्यात्मिकता मे टिकल है। इकर पाँच तरह के विचार है।

१—समाज के कहल बेगर केकरो धन दौलत जमा करेक हक नई मिलेक चाही।

२—दुनियाँ के सब चीजकर समाज मे बराबईर बटवारा होवे के चाही।

३—दुनियाँ के सब आदमी पर जेकर मे जैसन गुण है सेकर गुण कर पूरा-पूरी उपयोग होवेक चाही।

४—दुनियाँ मे ऊँच-नीच, धनी-गरीब के बीच मे जे भेद-भाव है सेकर मे मेल-मिलाप होवेक चाही ।

५—उपयोग के तरीका, देश, समय, आउर पात्र के मोताबिक बदलते रहेक चाही जेकर से कि हमेशा उन्नति करते रही ।"

इसी अंक के पृष्ठ—३ पर एक चुनाव-सम्बन्धी अपील भी छपी है, जो ध्यान देने योग्य है :—

"अपील

चुनाव पहुँचलक है : सतर्क होय आऊ । राउर केर "मत" कर बहुत बड़े कीमत है । ओकर से कोउ चुनाव जीत सकेला आऊर केउ हाईर भी सकेला ।

एहे जे इकर उचित प्रयोग करु । सतर्क रहु कि राऊर कर "मत" अयोग्य आऊर समाज विरोधी आदमीन कर पक्ष मे न जाय ।

प्रगतिशील नागपुरिया समाज राऊर से अपील करेला कि राऊर आपन "मत" ओहे आदमीन के दोऊ जे नैतिक, साधक समाज-सेवी आऊर त्याग भावना से परिपूर्ण है ।

मंत्री

नागपुरिया समाज, रांची ।"

इस अपील मे यह ध्यान देने योग्य है "राऊर आपन "मत" ओहे आदमीमन के देऊ जे नैतिक, साधक, समाज सेवी आऊर त्याग भावना मे परिपूर्ण है ।" इस कसौटी पर आनन्द-मार्ग का प्रत्याशी ही खरा उतर सकता है । स्पष्ट है कि अवान्तर रूप से विशेष प्रकार के उम्मीदवार के पक्ष मे ही यह अपील जारी की गई थी ।

'नागपुरिया समाचार" मे सामान्यत समाचार ही प्रकाशित होते थे । इसके विभिन्न अको मे ऐसी कोई भी रचना नही मिली जो साहित्यिक दृष्टि से उल्लेखनीय हो । वास्तविकता तो यह है कि इस पत्र ने नागपुरी साहित्यकारो का सहयोग प्राप्त ही नही किया था और अनेक नागपुरी साहित्यकारो को यह आज भी पता नही है कि "नागपुरिया समाचार" का कभी प्रकाशन भी हुआ था ।

ईसाई मिशनरियों ने धर्म-प्रचार के लिए नागपुरी का सहारा लिया था, इसी प्रकार ऐसा लगता है "आनन्द-मार्ग" के प्रचार के लिए ही "नागपुरिया समाचार" का प्रकाशन किया गया था । ऐसी अवस्था मे नागपुरी भाषा तथा साहित्य को इससे कुछ लाभ न हो सका, तो इसे अस्वाभाविक नहीं माना जाना चाहिए । परन्तु, इससे यह तथ्य तो लोगों के सामने आता ही है कि इस क्षेत्र के लोगों को समझाने-बुझाने का "नागपुरी" सर्वाधिक सशक्त माध्यम है ।

अप्रैल-मई १९६७ के संयुक्तांक के पश्चात् "नागपुरिया समाचार" का प्रकाशन बन्द हो गया। कई महीनो के उपरान्त इसका एक अंक दिखाई पड़ा जिस-पर अंक १९, मंगलवार अप्रैल १९६८ मुद्रित है। यह अंक नई सज्जा के अतिरिक्त निम्नलिखित परिवर्तनो के साथ पाठको के समक्ष प्रस्तुत हुआ —

प्रधान सम्पादक—लाल अरविन्द, ज्वाला।
प्रकाशक —प्रोग्रेसिव फेडरेशन आफ इंडिया, रांची।
शेष विवरण यथावत्।

इस अंक के पश्चात् "नागपुरिया समाचार" का प्रकाशन अगस्त १९६८ तक होता रहा और इसके बाद इसका प्रकाशन बन्द हो गया। इस प्रकार तीसरे नागपुरी पत्र का प्रकाशन भी कुछ अंकों के बाद ठप्प हो गया जबकि जून-जुलाई के अंक मे यह विज्ञापन प्रकाशित किया गया कि अब इस पत्र का पाक्षिक प्रकाशन होगा। आगे चलकर दिनाक २२ अक्टूबर १९६९ से "नागपुरिया समाचार" को दैनिक पत्र बना दिया गया, पर कुछ ही अंकों के बाद इसका प्रकाशन भी बन्द हो गया। यह पत्र डबल-क्राउन ४ पेजी आकार मे प्रकाशित होता था और इसमे चार पृष्ठ रहा करते थे। इसके प्रधान सम्पादक आचार्य चित्तेशानन्द अवधूत थे। मेरे जानते बिहार की किसी क्षेत्रीय भाषा मे प्रकाशित होनेवाला यह सर्वप्रथम दैनिक था। इस दृष्टि से 'नागपुरिया समाचार' का ऐतिहासिक महत्त्व है।

(२) नागपुरी रचनाएँ प्रकाशित करने वाली पत्र-पत्रिकाएँ

कुछ ऐसी पत्र-पत्रिकाएँ भी है जिनका प्रकाशन नागपुरी मे तो नही हुआ, पर वे यदा-कदा नागपुरी रचनाएँ प्रकाशित करती रही हैं। यहाँ ऐसी ही पत्र-पत्रिकाओं का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है। यहाँ यह उल्लेख कर देना उचित होगा कि इन पत्रिकाओं के सभी अंक उपलब्ध नही होते है। इन पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादको या प्रकाशको से सम्पर्क स्थापित करने पर बड़ी निराशा हुई, क्योकि प्राय सबने इन्हे कूड़ा समझकर नष्ट कर दिया। इनके पास कार्यालय-प्रति तथा प्रेस-प्रति भी अब सुरक्षित नहीं।

(क) झारखण्ड

(क) पत्र का नाम	झारखण्ड
(ख) प्रकाशन-अवधि	मासिक पत्र
(ग) प्रकाशन-स्थल	गुमला (रांची)
(घ) सम्पादक	ईश्वरी प्रसाद सिंह
(ङ) प्रकाशक	साहित्य आश्रम, गुमला, रांची

(च) मुद्रक	सर्चलाइट प्रेस, पटना
(छ) पृष्ठ-सख्या तथा आकार	पृष्ठ-सख्या—सोलह आकार—डवल क्राउन आठ पेजा
(ज) वार्षिक मूल्य	१॥)
(झ) एक प्रति	≡)॥
(ञ) लिपि	देवनागरी

"झारखण्ड" (मासिक) का पहला अक जनवरी १९३८ मे प्रकाशित हुआ और वर्ष के अन्त तक इसका प्रकाशन होता रहा। वारह अको के पश्चात् इसका प्रकाशन वन्द हो गया। सन् १९३८ मे श्री ईश्वरी प्रसाद सिंह ने गुमला से "झारखण्ड" प्रकाशित कर अदम्य उत्साह का परिचय दिया था। "झारखण्ड" के नीचे 'हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का प्रचारक" मुद्रित रहा करता था, परन्तु हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि के प्रचार के अलावा" झारखण्ड" मे यदा-कदा नागपुरी गीत भी प्रकाशित किए जाते थे, जिनमे "वसन्त की वहार" (गजेन्द्र सिंह)[१२] श्री गणेश वन्दना (गौरी नाथ पाठक),[१३] तथा गीत (ग्रामीण)[१४] आदि उल्लेख योग्य हैं। इस पत्र के किसी भी अक मे नागपुरी गद्य की कोई रचना नही मिली, पर श्री द्वारका प्रसाद के एक लेख का शीर्षक ही नागपुरी मे है—"हमरे मन हिन्दी नी जानी"[१५] जिसमे कई स्थानो पर नागपुरी गद्य का प्रयोग किया गया है। वानगी के लिए कुछ पक्तियाँ उद्धरित की जाती हैं —

> "मुरुख सफा सफा कपडा पिन्ह रहे और उकर हाथ मे गोटेक लउरी रहे जेकर मे मइढ रहे। उके देखके ही सब बुझ गेलें कि येही सार नासकटवा हेके। फिर तो लावा हरो, अउर ईसन ईसन लाठी वजरलक कि उनार दाँत गिजिड देलक।"

"मासिक झारखण्ड" ने हिन्दी के साथ-साथ नागपुरी की भी जो सेवा की है, वह वहुमूल्य है। इस पत्र की महत्ता इसमे भी है कि इसने पहली वार छोटा-नागपुर की पथरीली भूमि पर साहित्य-पताका फहराने की चेष्टा की थी, सभवत इन्हीं विशेषताओ के कारण यह पत्र विहार सरकार के द्वारा स्कूलो, कॉलिजो तथा होस्टलो के लिए स्वीकृत था।

१२ फरवरी १९३८, पृष्ठ १।
१३ फरवरी १९३८, पृष्ठ ६।
१४ मार्च १९३८, पृष्ठ १।
१५. कार्तिक, १९९४ वि० पृष्ठ ११।

(ख) आदिवासी सकम

(क)	पत्र का नाम	आदिवासी सकम (रोमन मे मुद्रित)
(ख)	प्रकाशन-अवधि	साप्ताहिक
(ग)	प्रकाशन-स्थल	जमशेदपुर
(घ)	सम्पादक	जयपाल सिंह
(ङ)	प्रकाशक	जयपाल सिंह, फाउन्ड्री हाउस, टाटानगर
(च)	मुद्रक	सच्चिदानन्द दत्त जमशेदपुर प्रिंटिंग वर्क्स, लिमिटेड ११ काली माटी रोड, साकची, जमशेदपुर
(छ)	पृष्ठ-सख्या तथा आकार	पृष्ठ-सख्या-आठ आकार-डबल-क्राउन चार पेजी
(ज)	वार्षिक शुल्क	०
(झ)	एक प्रति	एक आना
(ञ)	लिपि	देवनागरी, रोमन तथा बगला

"आदिवासी सकम" एक बहुभाषी साप्ताहिक समाचार-पत्र था जो प्रत्येक शनिवार को प्रकाशित हुआ करता था। इसका पहला अक ६ जुलाई १९४० को प्रकाशित हुआ था। श्री इग्नेस कुजूर ने अपनी पुस्तक "झारखण्ड दो मुहाने पर" (पृष्ठ—१४०) मे बताया है कि इस पत्र का प्रकाशन मार्च १९४१ तक हुआ था। इस पत्र के अक कही भी उपलब्ध नही है। इस पत्र के कुछ अक मुझे श्री जुलियस तीगा ने दिखाने की कृपा की।

"आदिवासी सकम" के प्रत्येक अक मे हिन्दी, अग्रेजी तथा बगला की रचनाएँ सम्मिलित हुआ करती थी। कभी-कभी नागपुरी, मुडारी तथा उराँव भाषा की रचनाएँ भी प्रकाशित हुआ करती थी। प्राप्त सूचनाओ से ऐसा प्रतीत होता है कि "आदिवासी सकम" छोटानागपुर का एक लोकप्रिय पत्र था, जिसे यहाँ के पुराने लोग अभी भी "सकम" के नाम से याद करते है।

"आदिवासी सकम" के प्राय. सभी अको मे कुछ समाचार तथा टिप्पणियो का प्रकाशन नागपुरी मे किया जाता था। नीचे ऐसी ही एक टिप्पणी प्रस्तुत की जाती है :—

"लडाई मे आदिबासी मनक हाथ।

एखन विलायत मे जोर लडाई चलाथे। दुनिया के दुश्मन हिटलर गोली और आग से वे दया-मया छौवा, बुढा जनाना मनकेर नाश कराथे। लडाई केर सूरत एसन अहे कि चद रोज मे हमरदुरा मे लडाई आय जाई। लडाई लगिन हमर

आदिवासीमन बहुत जोर करायँ कि दुश्मन हैर जाओक। आदिवासी मन कारखाना मे जोर से काम करायँ जे मे कि सरकार के वेसी हथियार मिलोक। आदिवासीमन लडाई मे भी जायले तैयार अहैं। सरकार केर हुकुम केर एकला देरी है। आदिवासी-मन लडाई ठाव मे काम करके ले भी जायले तैयार अहैं। अफसोस एतने अहै कि आदिवासी मनके अपन पूरा काम करैक ले सरकार दुरा नी खोईल अहे। रुपैया आदिवासी मन ठन नखे। ऊ मन गरीब आदमी हिकैं। मदद तन, मन और धन तीन रकम कर होवेला। आदिवासी मन-तन और मन से मदद देयँ और देवेले आगे भी तैयार अहे।

ई लडाई केर बडा २ नतीजा होई। कानून मे फेरफार होई। से ले सब कोई के जागले रहना चाही। जागना चाही केवल मोका देखे ले नहीं परन्तु सच्चा काम करेक लगिन। दुसर मन के देखीला कि ई चीज मिली ऊ चीज मिली होले सरकार के मदद देब कहैंना। ई गलत बात सरकार से हीके। जय और क्षय केर साथ मे हिन्दुस्तान मे सोवकर जय और क्षय अहे।"[१६]

"आदिवासी सकम" के प्राय प्रत्येक अक मे "उ दिनक बतिया" नामक एक स्तम्भ प्रकाशित होता था, जिसमे व्यंग्यात्मक-पद्य का प्रकाशन किया जाता था यथा—

"आदिवासी बनाम बिहारी।
दुयो गेलें रच्छैरी,
अरदली रहे भडारी।
हाकिम भेलें अनारी,
झगड़ा चलवा विमारी।
अलावे तियन तरकारी,
गोंहाइ भेलं घर-बारी, दुयो माय छौवारी।
फैसला प्रान्त बटवारी ॥"

जे० तीगा[१७]

"आदिवासी सकम" झारखण्ड पार्टी का समाचार-पत्र था, फलत इसमे प्रकाशित अधिकाश रचनाएँ राजनीति से प्रेरित हुआ करती थी। मौलिक रचनाएँ किसी भी भाषा मे देखने मे नही आई। नागपुरी के साथ भी यही बात थी। फिर भी श्री जयपाल सिंह ने अपने पत्र मे नागपुरी को स्थान देकर नागपुरी की जो सेवा की है, वह महत्वपूर्ण है। यो तो वह यह मानते ही थे कि यदि झारखण्ड प्रान्त का कभी निर्माण हो सका, तो यहाँ की सम्पर्क-भाषा नागपुरी ही बनाई जाने योग्य है।

१६ आदिबासी सकम, १४ सितम्बर, १९४०, पृष्ठ ५।
१७ आदिवासी सकम, २७ जुलाई १९४०।

(ग) अबुआ झारखण्ड

(क) पत्र का नाम	अबुआ झारखण्ड
(ख) प्रकाशन-अवधि	साप्ताहिक
(ग) प्रकाशन-स्थल	राँची
(घ) सम्पादक	इग्नेस कुजूर
(ङ) प्रकाशक	इग्नेस कुजूर
(च) मुद्रक	जी० ई० एल० चर्च प्रेस, राँची
(छ) पृष्ठ-संख्या तथा आकार.	पृष्ठ-संख्या—छ । आकार डिमाई चार पेजी
(ज) वार्षिक शुल्क	६॥)
(झ) एक प्रति	दो आने
(ञ) लिपि	देवनागरी

साप्ताहिक "अबुआ झारखड" का प्रकाशन १८ दिसम्बर १६४७ को प्रारंभ हुआ, जो कई वर्षों तक अनवरत रूप से प्रकाशित होता रहा । इस सम्बन्ध मे इसके तत्कालीन सम्पादक श्री इग्नेस कुजूर का कथन है—"इस साप्ताहिक का सम्पादक और प्रकाशक मैं सात वर्षों तक था। १६५२ मे मुझे बिहार विधानसभा मे एम० एल० ए० के लिए झारखण्ड पार्टी की ओर से खडा किया गया। श्री इग्नेस बेक इस साप्ताहिक के वर्तमान सम्पादक हैं।"[१८] इससे स्पष्ट है कि "अबुआ झारखण्ड" का सम्पादन श्री इग्नेस कुजूर तथा श्री इग्नेस बेक दोनो व्यक्तियो ने क्रमश. किया था। श्री बेक के देहावसान हो जाने के कारण "अबुआ झारखण्ड" का प्रकाशन बंद हो गया है।

श्री इग्नेस कुजूर द्वारा सम्पादित "अबुआ झारखड" के प्राय सभी अंको मे "दोना-दोनी" नामक एक स्तम्भ प्रकाशित किया जाता था, जो नागपुरी मे हुआ करता था। इस स्तम्भ मे "ढुठू" द्वारा सामयिक समस्याओं पर व्यंग्य प्रस्तुत किया जाता था। इस स्तम्भ के अन्तर्गत जो व्यंग्यात्मक रचनाएँ प्रकाशित हुई है, वे काफी पैनी और शिष्ट है। विभिन्न समस्याओं पर चोट करने की प्रणाली लेखक की मौलिकता की परिचायक है। नागपुरी मे भी इतने तीखे व्यग्य लिखे जा सकते हैं—यह देखकर सुखद आश्चर्य होता है। इस स्तम्भ को प्रकाशित कर श्री इग्नेस कुजूर तथा ढुठू ने नागपुरी साहित्य मे व्यंग्यात्मक रचनाओं की जो नीव डाली है, वह पर्याप्त पुष्ट है। एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत है —

'तकली सिखाई'

हमर सरकार केर दोहाई कि इहाँ-उहाँ सगरो "बेसिक-शिक्षा" केर स्कूल

१८ इग्नेस कुजूर, झारखण्ड दो मुहाने पर, पृष्ठ—१४०-१४१ ।

जारी कँर देलक। शिक्षा केर अन्त मे आसरा करल जायला कि हमर जवान मन उद्योग-धधा कँरके अपने जीवन मे कहियो गोलँची कर फूल रोपेक पारवैं। एहे निशान के पहुँचते लडका-लडकी अपन जिम्मेवारी समँझ जावैं।

पर आगे शिक्षा लागीन तो मोय सरकार के एहे सलाह देवो कि अपन "वजट" से हरेक कालेज केर थियेटर होल मे एक ठो कुल्हू और एक काना वरद केर व्यवस्था करवैं कि सिखाई और कताई से फुरसत पायके पेराई भी सीखेक पारवैं। और ठीक डिग्री लेवेक पहिले उम्मीदवारमन एक ठो "तेल मालीस" केर कोर्स पास करेक पारवैं। इकर से लक्ष्य है कि पीछे केर जिन्दगी मे नही तो कालेज से ठीक निकलेक खने स्टूडेन्ट के काम आय सकेला—नौकरी के खोज मे।

मोर काका मोर से सहमत हैं कि भैंसचानसेलर साहेब ठीन एक ठो दरखास्त पेश करल जाय के कम-से-कम झारखंड मे बी० ए० डिग्री के बदले टी० एम० (तेल मालीस) रखल जाय। कारण विहार केर ई विभाग मे ई कौशल केर बहुत थोडा प्रचार आहे।"[19]

सन् १९४७ के उपरात विद्यालयो मे तकली चलाने की शिक्षा देना कई वर्षों तक अनिवार्य था। इसकी अनुपयोगिता तथा टी० एम० (तेल मालिश) की उपयोगिता पर "हुडू" ने जो व्यग्य किया है, वह ध्यान देने योग्य है। ऐसे ही चुभते हुए व्यग्य का एक नमूना और देखिए—

"ई जनता सरकार केर रंज हेके —

जहाँ कि बाघ और बकरी एके घाट पानी पियायँ तो खाली सिंह और बाघे मन के रँज शासन केर बागडोर काहे देवल जाई? आनगा बगाधी कि अब "बकरियों" मन के मौका देवल जाई और उ मनक हाथ मे "बाघडोर" देवल जाई। जनता सरकार केर माने मोर काका कहायँ कि उ ऐसन जिनिस हेके जे न एक ठो आदमी केर हुये ठिक मनी, न नव आदमी केर हुये न नव लाग केर धर्म। ई मोर्मे केर एकमत और राय से चल नकी और चलाये।

रौरे कहना : "कदम कदम बढ़ाये जा बढ़ाये जा"।[20]

बिहार की राजनीति प्रारभ से ही जातीयताग्रस्त रही है, जिसकी ओर लेखक ने "बाघ और सिंह" शब्दो के माध्यम से सकेत किया है। इस सदर्भ मे "बागडोर" शब्द का प्रयोग कर जो चमत्कार पैदा किया गया है, वह प्रशसनीय है।

श्री इलिन बेक द्वारा सम्पादित "अबुआ झारखण्ड" मे नागपुरी रचनायें सम्मिलित नहीं की जाती थी, अत. इस पत्र के सम्बन्ध मे कुछ भी कहना अप्रासगिक होगा।

१९ ३ मार्च १९४९ (विशेषांक) पृष्ठ १६।
२० २५ जनवरी १९४८, पृष्ठ ८।

(ख) झारखड समाचार

(क) पत्र का नाम	झारखड समाचार
(ख) प्रकाशन-अवधि	साप्ताहिक
(ग) प्रकाश-स्थल	राँची
(घ) सम्पादक	इग्नेस कुजूर
(ड) प्रकाशक	इग्नेस कुजूर
(च) मुद्रक	इग्नेस कुजूर करमा प्रिंटिंग प्रेस ४६, पुरुलिया रोड, राँची
(छ) पृष्ठ-सख्या तथा आकार	पृष्ठ-सख्या-४ आकार—फुलस्केप
(ज) वार्षिक शुल्क	रु० ४-८० पैसे
(झ) एक प्रति	१० पैसे
(ज) लिपि	देवनागरी (यदा-कदा रोमन)

साप्ताहिक "झारखण्ड समाचार" का प्रकाशन ६ जून १९६८ को प्रारम्भ हुआ। इसके सम्पादक, मुद्रक तथा प्रकाशक इग्नेस कुजूर है, जिन्होने सन् १९५७ से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक "अबुआ झारखड" का सम्पादन किया था। "झारखड समाचार" एक हिन्दी साप्ताहिक है, जिसमे यदा-कदा अंग्रेजी का भी प्रयोग किया जाता है। श्री कुजूर ने जिस प्रकार अपने सम्पादन-काल मे "दोना-दोनी" नामक स्तम्भ चालू किया था, उसी प्रकार उन्होने "झारखड समाचार" मे "बुधवा का लूर" नामक एक स्तम्भ प्रारम्भ किया है, जो इस पत्र के प्राय प्रत्येक अक मे रहता है। "बुधवा का लूर" के अन्तर्गत सामयिक तथा स्थानीय महत्त्व की समस्याओ का व्यग्यात्मक-चित्र नागपुरी मे प्रकाशित किया जाता है पर स्तम्भ-लेखक का नाम नही दिया जाता है।[२१] "दोना-दोनी" की तरह "बुधवा का लूर" भी एक सफल स्तम्भ है, जिसकी रचनाएँ मस्तिष्क पर बडा गहरा प्रभाव डालती हैं। नीचे ऐसे ही दो अश उद्धरित किए जाते हैं —

(१)

"बतिया हमर अब की ऐसन अहे कि ई जवाना मे गोटेक दल बेगर खडा करले जीएक बडा कठिन। मोय गोटेक दल खडा करेक खोजायों।

२१ यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि इग्नेस बेक द्वारा सम्पादित "अबुआ झारखड" मे कभी-कभी "बुधवा का लूर' हिन्दी मे प्रकाशित हुआ करता था, पर उक्त पत्र का प्रकाशन अब बन्द हो चुका है। "बुधवा का लूर" छापने की प्रेरणा श्री कुजूर को वहीं से मिली है।

कटिक सोचू, ई जवाना हिके जीएक बेम जीएक केर और पैसा खाएक ले बेम काम करेक केर। पुरखा परिया और आईज के परिया मे आकाश पाताल केर फरक आहे। सोबहे अगर चोरीये करवें और पैसा जमा करिये लेबै, तो का देश धनी नी बनी? आईज केर आदमी मनक कपार, मोर देखेक मे एहे लाईन धराथे। आईज केर जमाना हिके—बेटा बीटी माय बापकेर लीडरी करैना, छोडा छोडी मन मास्टर मास्टरीन के पढाएक सिखएना, कारखाना मे लेबर फोरमेन के चलाएला।

मे दिन सुनली कने सोब गोदी केर छौवा मन माए केर छाति से दूध पीएक से "स्ट्राईक" कईर देनयँ। ऊ मनक माँग सुनली—ई ठठरी पजरी काया छाती केर थोडे सन दूध से ई "स्पेस" युग मे अब काम नी चली। हरेक माय के हरेक आधा बेला मे एक पौंड दूध देवेकहे पडी और नही तो हमरे एतना हजार छौवा मनकेर "स्ट्राईक" चालू रही।"[२२]

(२)

"मोर लगोटिया साग कहो कधियो नी रहय। हाँ ढेईरे दिन होलक कि करेया वाल साग तो रहय। आईज सोब कने कने हो गेलय। आईज मोर साग मन हिने फुलपेटिया ड्रेनपाईप और हुने "टाइट-ड्रेस" पेंट दिसवा।

ई जमाना रौरे जानबे करीला कि उघराएक जिनिस के ढपयना और ढपंक जिनिस के उघरा छोडयना। साईत ई बतिया भी रौरे जानीला कि ई उघराएक ढापेक जमाना मे पछिमे विलाईत बटे गोड नी ढपायना और पूर्वी जापान बटे घेया खुले रखयना। ईकर बीच हमारे मनक मुलुक मे पेंट के नी ढपयना।

का मोचायी रौरे, हियो आदिवासी करेयावाला मर्दाना मनकेर कोनहो बात नी होवाथे, होवाथे पटना, दिल्ली और हुन्दे बडका शहर ने रांची टाटा मे आवल टाईट फिट जनाना-मनकेर।।"[२३]

"झारखण्ड समाचार" मे प्रकाशित "बुधवा का लूर" की भाषा व्याकरण-सम्मत तथा परिमार्जित है। ये विशेषताएं "दोना-दोनी" मे दिखाई नही पडती। सन् १९६८ मे रांची जिले के कई क्षेत्रो मे आदिवासियो (विशेषत ईसाइयों) के द्वारा हिंसात्मक आन्दोलन किए गए थे और उथल-पुथल की उस अवस्था मे ही इस पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। अत "बुधवा का लूर" के अन्तर्गत ऐसी अनेक रचनाएं हैं, जो वर्ग-विशेष का प्रतिनिधित्व करने के कारण स्वस्थ दृष्टिकोण प्रस्तुत कर पाने मे असमर्थ है, पर जहां तक व्यंग्यात्मक शैली का प्रश्न है, इसकी सामर्थ्य पर शंका

२२ ३१ जुलाई १९६८, पृष्ठ ३।
२३ ६ मार्च, १९६९, पृष्ठ ३।

नही जा सकती और यह माना जाना चाहिए कि नागपुरी की अभिव्यक्ति को सक्षम बनाने मे "बुधवा का लूर" भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

उपर्युक्त पत्र-पत्रिकाओ के अतिरिक्त "शवरी" (चक्रधरपुर), साप्ताहिक हलधर (डाल्टनगज), रांची एक्सप्रेस (साप्ताहिक, रांची) रांची टाइम्स (साप्ताहिक, रांची) तथा रांची कॉलेज पत्रिका आदि मे भी नागपुरी रचनाएँ देखने मे आई है।

'रांची एक्सप्रेस' मे अब नियमित रूप से प्रति सप्ताह 'नागपुरी स्तम्भ' का प्रकाशन होने लगा है। इस स्तम्भ मे मुख्य समाचार नागपुरी मे प्रस्तुत किए जाते हैं। इसी प्रकार 'रांची टाइम्स' (रांची) तथा साप्ताहिक हलधर (डाल्टनगज) मे भी नागपुरी स्तम्भ का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया था, पर वह क्रम कुछ ही सप्ताहो के बाद टूट गया। इधर 'रांची टाइम्स' ने श्री प्रफुल्ल कुमार राय की एक लम्बी रचना—'सकर—एक ठो जिनगी' का प्रकाशन कर एक सराहनीय कार्य किया है।

यहाँ जिन-जिन पत्र-पत्रिकाओ का उल्लेख किया गया है, उन्होने नागपुरी भाषा तथा साहित्य के विकास मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, परन्तु इन पत्र-पत्रिकाओ का प्रकाशन अस्थायी तथा सामयिक प्रमाणित होता रहा है। किसी भी प्रचलित भाषा तथा उसके साहित्य के विकास के लिए पत्र-पत्रिकाओ का नियमित प्रकाशन एक अनिवार्यता ही मानी जानी चाहिए, किन्तु दुर्भाग्यवश "नागपुरी" मे आज भी कोई ऐसा पत्र या पत्रिका नही जो इसका दिग्दर्शन कर सके।[२४] इस अभाव की ओर नागपुरी-भाषी लोगो का ध्यान आकृष्ट हो रहा है, अत. यह आशा की जा सकती है कि निकट भविष्य मे नागपुरी मे नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाओ का प्रकाशन प्रारम्भ हो जाएगा।

२४ 'जय झारखड' (डाल्टनगज) नामक एक नागपुरी पत्र का प्रकाशन अगस्त १९७२ से प्रारभ हुआ है पर इसका भी नियमित प्रकाशन निश्चित नही।

५

नागपुरी शिष्ट साहित्य में प्रतिफलित छोटानागपुर की संस्कृति

साहित्य हमारे जीवन का प्रतिबिम्ब भी है। साहित्य मे मनुष्य के हर्ष-विषाद, आशा-आकांक्षा, सभ्यता-संस्कृति, उन्नति-अवनति तथा उसके जीवन की छोटी-बड़ी सभी समस्याओ के चित्र देखे जा सकते हैं। नागपुरी साहित्य मे भी नागपुरी भाषियों के जीवन की प्रतिच्छाया देखी जा सकती है। नागपुरी आदिवासियो तथा गैर-आदिवासियो दोनो प्रकार के लोगो की भाषा है। नागपुरी का प्रयोग प्रत्येक धर्म तथा वर्ग के लोग अपने जीवन मे करते हैं, फलस्वरूप नागपुरी साहित्य की सेवा हिन्दू, मुस्लिम तथा ईसाई सभी प्रकार के साहित्यानुरागियो ने की है। इस प्रकार नागपुरी साहित्य की भाव-भूमि पर्याप्त विस्तृत तथा व्यापक हो गई है। अपनी इस व्यापकता के कारण नागपुरी साहित्य छोटानागपुर के जन-जीवन को बड़ी तेजी से प्रभावित करने लगा है।

नागपुरी लोक-साहित्य तथा शिष्ट साहित्य के विवेचन से इस निष्कर्ष तक पहुँचा जा सकता है कि नागपुरी का साहित्य किसी भी क्षेत्रीय-भाषा के साहित्य से हीन नहीं। संसार की प्राय सभी भाषाओं के साहित्य मे सबसे पहले पद्य का विकास हुआ है। यही स्थिति नागपुरी की भी है। नागपुरी का अधिकांश साहित्य पद्य मे सुरक्षित है, परन्तु अब गद्य-लेखन का भी प्रारम्भ हो चुका है।

नागपुरी साहित्य का सम्यक् काल-विभाजन तो सभव नहीं, क्योंकि इसका कोई इतिहास नहीं। पर, प्रवृत्तियों की दृष्टि से इसे तीन मुख्य खंडों मे सुविधापूर्वक रखा जा सकता है —

(१) भक्ति साहित्य,
(२) शृंगार साहित्य, तथा
(३) आधुनिक साहित्य

नागपुरी का सम्पूर्ण भक्ति तथा शृगार साहित्य पद्य मे उपलब्ध है, विशेषत: गीतो के रूप मे। आधुनिक साहित्य के अन्तर्गत गद्य तथा पद्य दोनो का विकास हो रहा है। आधुनिक नागपुरी साहित्य-रचना को आज की तेजी से बदलती हुई परिस्थितियों तथा घटनाओ ने सभव बनाया है। फलत भक्ति-साहित्य तथा शृगार-साहित्य की अपेक्षा आधुनिक नागपुरी साहित्य मे छोटानागपुर के जन-जीवन की झाँकी विशेष रूप से पाई जाती है। सच तो यह है कि नागपुरी का भक्ति साहित्य लोगो को जीवन की समस्याओ से विमुख करता रहा। इसी प्रकार छोटे-मोटे सम्पन्न लोगो, जमीदारो तथा राजाओ ने शृगार साहित्य को अपनी काम-वासना को उभाडने तथा मनोरजन का साधन समझा। इस दृष्टि से उपर्युक्त दोनो प्रकार के नागपुरी साहित्य जन-जीवन को प्रभावित कर सकने मे अक्षम सिद्ध हुए, किन्तु आधुनिक नागपुरी साहित्य सभी प्रकार के लोगो के लिए है। आज नागपुरी साहित्य जनता के इतना अधिक समीप है जितना कि वह कभी भी नही था। यह सतोष का विषय है कि नागपुरी साहित्य मे छोटानागपुर की सस्कृति प्रतिफलित होने लग गई है। इस पर नीचे विशेष रूप में विचार किया जा रहा है। सुविधा की दृष्टि से नागपुरी के पद्य तथा गद्य साहित्य पर क्रमश अलग-अलग विचार करना समीचीन होगा।

(१) नागपुरी काव्य में प्रतिफलित छोटानागपुर की संस्कृति

(क) छोटानागपुर का जन-जीवन—

छोटानागपुर की धरती रत्नगर्भा मानी जाती है, पर इस धरती के बेटे सदा से भूखे तथा नगे रहते आए हैं। यहाँ अनेक परिवर्त्तन होते रहे, परन्तु छोटानागपुर के निवासियो के जीवन मे कोई क्राति नही आ सकी। यहाँ की जनता आज भी दीन-हीन ही है। यहाँ के अधिकाश आदिवासियो को अपनी जीविका उपार्जित करने के लिए आसाम के चाय बागानो मे अभी भी जाना पडता है। शेख अलीजान ने ऐसे ही एक आदिवासी मजदूर का तलस्पर्शी चित्र निम्नलिखित गीत मे प्रस्तुत किया है—

काम करे गेलौं टइया, टौंका बगान हो
हायरे सघत बिना, मन रहे न थीराये ॥ १ ॥

मन के राखु थीर, तीन साले घुरब फीर
हायरे लिखल जहाँ, तहाँ जीना असथान ॥ २ ॥

तनिको न राखुमन तन में फीकीर हो
हायरे भरोसा जानी, पुरा भजु भगवान ॥ ३ ॥

जीला तो सीवसागर, पोस्ट सोनारी हो
हायरे रहना डेरा, है ये चारि नम्बर खोली हो ॥ ४ ॥

दईया सुनली हाम, चारि आना पाँच आना

हायरे बहुत मिले, कहे "सेख अलीजान" बहुत मीले ॥ ५ ॥[1]

छोटानागपुर का एक मजदूर स्वजन-परिजन से दूर आसाम के शिवसागर जिले के चाय-बागान मे काम कर रहा है। वह चार नम्बर की खोली मे रहता है। वह वह सोचता है कि उसकी तकदीर मे शिवसागर की ही रोटी है। उसका हृदय स्थिर नही रह पाता, पर वह अपने को सान्त्वना देता है—कोई बात नहीं, तीन वर्षों के बाद मैं फिर अपनी मातृभूमि छोटानागपुर लौटूँगा।

कुछ अभागे ऐसे भी होते हैं, जो चाय-बागान तक भी पहुँच नही पाते। ऐसे लोग रत्नगर्भा छोटानागपुर मे रहकर ही जीवन की यातनाएँ भोगते हैं। गर्मी का मौसम है। चारो ओर भयकर धूप पड रही है। बाहर निकलने का साहस कोई नही करता। पर इस चिलचिलाती धूप में भी किसी को घर से बाहर निकलना ही पडता है—पेट की आग शान्त करने के लिए। वह "एक मूठा अन्न" के लिए दरवाजे-दरवाजे घूमता है, पर उसे कुछ भी नही मिलता। वह आम के एक-दो फलो के लिए पेड के नीचे पहुँचता है। यह किसी व्यक्ति-विशेष का चित्र नही। छोटानागपुर के अधिकाश लोगों की यही दुरवस्था है। इस यथार्थ को वासन्तीपूत (स्व० पीटर शाति नवरगी) ने बडे ही मार्मिक शब्दो मे अपनी "ई बछरक रउद अउर भूख" नामक कविता मे प्रस्तुत किया है—

हेठे धरती दहकत, ऊपरे तो लू लहरत।
जीव मोर अकुलाए, काया ई विकलाए ॥१॥
कहाँ जे पानी पाती, जुडाती तनिक छाती।
हा। दइया इसन दसा, सगरे जीवन कासा ॥ २ ॥
पेट में एक अन नहीं, अग में सवाग नही।
करब तो काजे करब, बइसलो कइसे रहब ॥ ३ ॥
चलु, जाई अम्बा तरे, अब नि रहाए ई घरे।
एक-दुई जे फल पावब, तो परान तो राखब ॥ ४ ॥
मगर हा! धरक हालइन, हा। मूरूल मनुन जाइत।
धरनी उठाम देखे, छउना कादे मूले ॥ ५ ॥
दुरा-दुरा बुडल फिरली, लाज टर छोडइ रहली।
"एक मूठा अन देहू, बूडत बचाय लेहू ॥ ६ ॥

[1] नगपुरीया दमकच छत्तीसरग, पृष्ठ १।

छउवा मोर कलपत, घरनी मोर तलफत।
घर में एक खुदी नहीं, कोनो उपाय नहीं॥ ७॥
सब बट निरास भेली, एके जवाब पाली
"न कहे, कोनो न कहे, का देउ कोनो न कहे"॥ ८॥
भगवान! हमर पर तरसु, अब हमर जान बखसु।
ई बछर जीनं रहब, तो पर आस फिर नई करब॥ ६॥[2]

प्रत्येक समाज मे कुछ सम्पन्न लोग तो रहते ही हैं, परन्तु ऐसे लोगो का जीवन भी किंचित् विचित्र होता है। एक व्यक्ति सम्पन्न है, पर अपनी पत्नी के साथ उसका व्यवहार अमानुषिक है। एक ऐसे ही पति के सम्बन्ध मे उसकी पत्नी शिकायत करती है—वह अपने पति के साथ रहना नही चाहती। वह अपने पति के अत्याचार अब और नही सहना चाहती। वह कहती है—

आपने तो मुहजारा धोती फेटा पिंधेला,
हामके तो लेदरा देवेला,
ऐसन पुरुष से मोंय नि रहोंना॥
आपने तो मुहजारा दही दूध खायेला,
हमके तो चोकोंडा कर लेटो देवेला,
ऐसन पुरुष से मोंय नि रहोना॥
आपने मुहजारा लाली सेज सोवेला,
हामके झंझेरा पटिया देवेला,
ऐसन पुरुष से मोंय नि रहोंना॥[3]

इन पक्तियों मे "मुहजारा" शब्द बड़ा सार्थक है। जहाँ इस शब्द मे पत्नी का आक्रोश झलकता है, वहाँ उसकी प्यार भरी झिड़की का पुट भी कोई कम महत्त्वपूर्ण नही।

भारतीय समाज मे नारियो को सदा प्रताड़ना मिलती रही है। युवावस्था तक कन्या पिता का बोझ मानी जाती है। विवाह के बाद पति का प्रेम किस्मत वाली ही पाती है, अन्यथा अन्य नारियो के जीवन मे सास और ननद की जली-कटी बातें ही होती हैं। रुकमिनी ने एक ऐसी ही नायिका के दु खमय जीवन का सजीव वर्णन किया है—

२ आदिवासी, स्वतत्रता-दिवस अक १६६४, पृष्ठ २०।
३ नगपुरिया फगुआ गीत, पहला भाग, पृष्ठ १४।

कासे कहबू पिया दुःख के बीचारी,
दुख सहे नहीं पारी, सासु ननन्द देलें गारी,
गारी सुनि जीवा हारी ॥ १ ॥
नहीं सहे पारों पिया ऐसन ऐसन गारी,
काचा काया लागे भारी, नैहरें नइ बाबा महतारी,
सेहे श्रदे मन मारी ॥ २ ॥
रहे रुकमिनी गोरी ठाढे कर-जोरी,
जिनगी है दिन चारी, रौरे सगे देवू जीव डारी,
करु पिया इनवारी ॥ ३ ॥[४]

सास और ननद की गालियाँ इतनी असह्य हैं कि नायिका की कच्ची काया (तरुणावस्था) भी माटी (वृद्धावस्था) मे परिवर्तित हो जाती है। नायिका माता-पिता विहीन है, अत वह असहाय है। उस निर्बल के राम सिर्फ उसके पति ही हो सकते हैं, जिसे वह अपने पूर्ण-समर्पण का विश्वास दिला रही है।

जीवन की यह गाडी आगे कैसे चले ? इसे घसीटना भी बडा कठिन है। इस कठिनाई की अनुभूति शेख अलीजान को है। यह स्वर्ण-सा जीवन भी उन्हे भार प्रतीत होता है—

होरी ए हो पेट के फिकिर हये भारी हो
परी छउवा पूता करये दिकदारी ॥ १ ॥
होरी काम घधा चले मदा दुनिया है महाफदा,
नहिं भला होत उपकारी हो
परी छउवा पूता करये दिकदारी ॥ २ ॥
होरी गेल वेपार करे, असरा देखन धरे
पइचा उधार करी करी
हो परी छउवा पूता करये दिकदारी ॥ ३ ॥
होरी आवके फुहरी नारी, खोजे करै काठी-कुरीं,
का कहु खोसे कोंपे दाढी
हो परी छउवा पूता करये दिकदारी ॥ ४ ॥[५]

४. देसी झूमर, भाग ३, पृष्ठ ४।
५ फगुआ गीत, भाग ३, पृष्ठ १४।

भारतीय किसानो का जीवन कृषि पर निर्भर करता है। छोटानागपुर मे जो नदियाँ हैं वे पहाडी हैं, अत बरसात मे वे भर जाती है और गर्मी के दिनो मे बिलकुल सूख जाती हैं। इस विषम परिस्थिति के कारण यहाँ सिंचाई की कोई व्यवस्था नही। यहाँ की कृषि पूर्णत इन्द्र महाराज की अनुकम्पा पर निर्भर करती है। अतिवृष्टि हो तो दिक्कत, अनावृष्टि हो तो कठिनाई। दोनो ही परिस्थितियाँ यहाँ के किसानो के लिए समस्याएँ उत्पन्न करनेवाली प्रमाणित होती हैं। एक किसान है, वह ऋण लेकर खेती करता है, पर उसकी आशाओ पर तुषारापात हो जाता है। वह चिंता के बोझ से दबा जा रहा है। उसकी इस मन स्थिति को बटेश्वरनाथ साहु ने शब्दबद्ध करने का जो सफल प्रयास किया है वह दर्शनीय है—

हाय रे हाय—फिकीर में आइज डुब गेली।
कैसे के जीवन हामर चली ॥ १ ॥
बुनली ऋण करी धान, सेकरो में पानीक टान।
समय में ऋण न चुकाली कैसेक जीवन हामर चली ॥ २ ॥
एक जोडा डांगर, पैंचा उधरा घर
एक दिन बेईमान भेली, कैसे के जीवन हामर चली ॥ ३ ॥
साँझ पहर भेल, तेल-काठी घटि गेल
राइत-सगर भूखे चिताली, कैसे के जीवन हामर चली ॥ ४ ॥
छौवा-पूता नाती। उघरे बितावैं राती
कखनो नै सुखे सुतली, कैसे के जीवन हामर चली ॥ ५ ॥
बटेश्वर साव कहे देखि के जे दृग बहे
हरि के न कबहुँ भुलाली, कैसे के जीवन हामर चली ॥ ६ ॥[6]

छोटानागपुर के जन-जीवन मे पर्व-त्योहारो का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन अवसरो पर छोटे-बडे, स्त्री-पुरुष तथा बच्चे-बूढे सभी खूब आनन्द मनाते हैं। करमा और होली ये दो त्योहार ऐसे है, जिनकी प्रतीक्षा लोग बडी व्यग्रता से करते हैं। करमा का त्योहार आ गया है। इसके सम्बन्ध मे धनीराम बक्शी कहते हैं—

भादो का एकादशी, सबे नारी हँसी-खुशी।
आठ-माई खेलब रसिया, आजु करम केर रनिया ॥
बाग बगइचा बारी सभे दिसे हरी हरी।
बडी रीझ लागे से गोइया, आजु करम केर रनिया ॥[7]

६ लोकगीत, पृष्ठ १३।
७ देशी झूमर, भाग ७, पृष्ठ १२।

जिस "फगुआ" की प्रतीक्षा थी वह निकट है। पर फगुआ मनाने का उल्लास ठंडा पड़ता जा रहा है। आर्थिक विषमताओं का प्रभाव छोटानागपुर के ऊपर तेजी से पड़ रहा है। लोग त्योहारों के प्रति उत्साहहीन-से प्रतीत होते हैं। एक इसी प्रकार का उत्साहहीन व्यक्ति अपनी विवशता प्रकट करते हुए कहता है—

पसो रा फगुआ मारे बड़ी झखना,
कासे कहबु मने गुनि रहना।
कासे कहबु हाय बिसुरल नहीं जाय,
इस्ट कुटुम सबे भेल बिराना।
कासे कहबु मने गुनि रहना॥
बनला के सबे मीत दुनिया के एहे रीत,
टका के लोभे सभे होत अपना।
कासे कहबु मने गुनि रहना॥[८]

छोटानागपुर के बेटों की अधिकांश आय शराब और हाँडी पीने में बर्बाद हो जाती है। शराब तथा हाँडी पिलाकर भोले-भोले नागपुरी-भाषियों को लोगों ने खूब-लूटा-खसोटा। इस कमजोरी के कारण छोटानागपुर के लोग आज भी पिछड़े हुए हैं। इस दुरवस्था को देखकर एक अज्ञात कवि बड़े दर्द भरे स्वर में नसीहत देता है—

रा लगिन नगापुर अगा तोरा मैला भेल
नगापुर का लगिन नैना बहि लोर,
हाँडी तोरा नगापुर देसा के लूटि लेल,
नगापुर दारु तोरा राजी लूटि लेल,
अब छोड़ नगापुर हाँडिया रे दारु
नगापुर छोंडी देऊ महुवा का रस।[९]

यहाँ की अनुसूचित जनजातियों में यह प्रथा है कि कन्या के विवाह के लिए वरपक्ष से रुपये लिए जाते हैं। यह परंपरा प्राचीन है, किन्तु कुछ नये लोग इसे अच्छा नहीं समझते। एक कन्या जिसका विवाह इसी प्रकार हुआ है, वह अपनी माँ से शिकायत करती है—तूने मुझे जन्म दिया और पाला-पोसा। खुद्दी-चुन्नी तथा दूध-भात देकर तुमने मुझे बड़ा किया, पर तुमने सिर्फ साड़ी-कपड़े के लिए पाँच रुपये में एक अनजान व्यक्ति के हाथ मुझे बेच दिया—

८. धनीराम बक्शी, फगुआ गीत, पहला भाग, पृष्ठ ४।
९. लील खो-रखा खं खेल खण्ड २, पृ० ५२।

जनमले नयो मोरा जनमले रे
धरती धरि धरि जनमले
पिरीती धरि धरि जनमले
पोसालेगे नयो मोरा पोसाले रे
खुदी चुनी से पोसाले रे
दूधे माते से पोसाले रे
बेचाले नयो मोरा बेचाले रे
पचे टका लागिन बेचाले रे
साडी लुगा लगिन बेचाले रे ।[10]

(क) कलियुग और छोटानागपुर :—

युग के अनुरूप छोटानागपुर भी द्रुतगति से परिवर्तित होता जा रहा है। कलियुग के दुष्प्रभाव से छोटानागपुर नही बच सका। इसी कलियुग के सम्बन्ध मे लक्ष्मणराम गोप कहते हैं—

कलि के महिमा अति भारी हो संत,
चलु पथ करि के विचारी ॥ ध्रुव ॥
झूठा सत अ य को कहै सत्य असत्य धरी कान,
पाखंडी के बात सुनै सज्जन के अपमान ॥
वेद पुरान जत गुप्त भये ग्रन्थ संत्,
निज मति करै अनुसारी हो संत ॥ चलु ॥ १ ॥
भये लोग सब मोह वस, तजि दियो सुकर्म,
जिमि मृगा जाने नहीं कस्तूरी के मर्म ॥
भटकी फिरत मृग चिन्है नहीं निज दृग,
इत उत चलत निहारी हो संत ॥ चलु ॥ २ ॥
दधि माखन घृत छाडिकर, सुरा पियत सुख मान,
तजि अमृत विष के गहे करे न मन अनुमान ॥
उलटी करम करी मनहु में आशा भरी,
अन्त पाये दु ख अति भारी हो संत ॥ चलु ॥ ३ ॥

१० लील खो-रखा खे खेल, खण्ड २, पृष्ठ ३२४।

मेवा मिष्टान को छाड़िकर मीन मांस के मान,
छाँड़ देत लाज नहीं हाट ही खान न्यान ॥

सोच न विचार करें मनहु न ध्यान,
धरे नित करें अधम अहारहिं ना ॥ चलु ॥ ४ ॥

माता-पिता को छाड़िकर कर त्रिया सों नेह लगाय,
अन्न-वस्त्र के कारने रहत सदा बिललाय ॥

नर नारि दुखी जोरी रहन आनन्द नहीं,
अनेक रोग में मजाई हो ना ॥ चलु ॥ ५ ॥

निज त्रिया को तजिकर करत कलि के संग,
जात पात चिन्हें नहीं जैसे दीप पतंग ॥

लछुमन लाज तजी नाचत है रूप सजी,
छने छने रूप के भिखारी हो सन ॥ चलु ॥ ६ ॥"[11]

कलियुग के प्रभाव में आकर हिन्दु तथा मुसलमान दोनो धर्मों के अनुयायियों ने झूठ को सच बनाना प्रारम्भ कर दिया है। लोग धर्म के मार्ग से हटकर पापाचार को अपना रहे हैं। शेख अलीजान इस "उलटी जमाना" को देखकर चकित हैं—

होरी ए हो उलटी जमाना देखु भाई है,
झुठ बात के सचा तो बनाई ॥ १ ॥
होरी का हिन्दु मुसलमान धरम ना करे खयाल,
बहुत निकट भये जाई है, झुठ बात के सचा तो बनाई ॥ २ ॥
होरी कम नेकी पूरा सेखी, बदी तौल गुना रही,
का तो कराग आई है, झूठ बात के सचा तो बनाई ॥ ३ ॥
होरी हाय त्रिया हाय माल हर छन रहे खयाल
दिन दिन लालच बढ़ाई है, झूठ बात के सचा तो बनाई ॥ ४ ॥
होरी 'सेख अलिजान" कहे, बुझी आपन रहे,
जेकर जैसन कमाई है, झुठबात के सचा तो बनाई ॥ ५ ॥[12]

"धर्म" अब चर्चा का विषय रह गया है। आधुनिक युग में धर्म के लिए कहीं भी कोई स्थान नहीं। अब्बास अली रोजेदारों को चेतावनी देते है कि फरेब से क्या लाभ—

रोजा फरज हमें मानु बतीया, मला मानु बतीया,
कबर में कोई ना जाने कवन गतीया ॥ १ ॥

११ नागपुरिया गीतावली, पृष्ठ १८।
१२ फगुआ गीत, भाग ३, पृष्ठ-३।

दिन में बीमार कहे वैसे रतीया मला वैसे रतीया
पेट में दरद कहे हमार छतीया ॥ २ ॥
बहुत फरेब रचे झूठो बतीया मला झूठो बतीया
कमाय मरे राँची शहर हटीया ॥ ३ ॥
जनी बोले कैसे करबै पैठीया मला करबै पैठीया
तनीको ना बूझे मीलत मटीया ॥ ४ ॥
कोई तो देखलै मांझे सुने खटीया मला छूछे पटीया
गेल बाटे ठसर ठसर झोटीया ॥ ५ ॥
अब्बास लिखे गीनिया भाई रीतिया मला देखो रीतिया
मन करे मारबै घुमाय लटीया ॥ ६ ॥[13]

गाँव की सीधी-सादी लडकियाँ जो कभी एक अनजान पुरुष को देखकर दरवाजे की ओट मे छिप जाया करती थी, अब उनके माथे पर आँचल भी नही। वे "रेजा" के रूप मे शहरो मे काम करती है, किन्तु उनके बनाव-शृगार को देखकर दाँतो तले उगली दबानी पडती है। डोमन राम ने बडे समीप से रेजाओ का अध्ययन किया है। वह कहते है—

कलीयुगे रेजा काम जारी
निच नारी गोई, सर्ग उपरे पगुढारी
बमकन मोटर गाडी झलमल उडे
साडी छींट जाकिट साया बुटे दारी,
चमतकारी गोई नख सील भूषण सवारी ॥ १ ॥
चिरम्हारी झालेर खोपा-खोपा उपर फूलफ खोपा,
सेन्दुर काजर लाल कारी-मृग हारी गोई
निपटे मोहन रुपधारी ॥ २ ॥
गले मला मुगा मोनो-छतीय लजरत
अति उत्तम हरवा केर हारी झमकदारी गोई
डोमना सुजन मन टारी ॥ ३ ॥[14]

रेजाओ का बनाव-शृगार अखरनेवाली बात नही, परन्तु इस नई सभ्यता

१३ लेखक की हस्तलिखित प्रति से।
१४ कलयुग खण्ड, पृष्ठ ५।

इ जुगे मिले न उपाय, जीयव कवन खाय।
शाहु महाजन करी, रीन से बोयाय।
जीयव कवन खाय, एहो सुधी अनेक बढाय।[१७]

(ग) छोटानागपुर—स्वतत्रता के पूर्व :—

बीसवी शताब्दी के पूर्व छोटानागपुर एक दुर्गम प्रात माना जाता था। इस ओर आने का साहस बहुत कम लोग किया करते थे। मुगलो के शासन-काल मे भी यह क्षेत्र एक प्रकार से उपेक्षित एव उनके शासन की सीमा से बाहर रहा। यदा-कदा इस क्षेत्र के ऊपर छोटे-मोटे हमले हो जाया करते थे। अग्रेजो ने ही छोटा-नागपुर को शासन प्रदान किया। पर इसके लिए उन्हें अनेक कठिनाइयो का सामना भी करना पडा।

सन् १८३१ ईस्वी मे एकाएक छोटानागपुर मे एक "लरका आदोलन" या "कोल आदोलन" उठ खडा हुआ।[१८] इस आदोलन मे छोटानागपुर के हजारो गैर-आदिवासी यहाँ के आदिवासियो के द्वारा बडी निर्ममता के साथ मौत के घाट उतार दिए गये। इस नर-सहार को हापामुनि के बरजूराम पाठक नामक नागपुरी कवि ने स्वय अपनी आँखो देखा था। इस अमानुषिक हत्याकाड से सबधित बरजूराम पाठक के अनेक गीत उपलब्ध हैं। नीचे के दो गीतो मे इसी आदोलन के चित्र प्रस्तुत हैं—

छोटानागपुरक हाल, अठारह सौ अठासी साल,
खल मु डा कोल्ह बउरावल ए सजनी,
गँवागाई मत्र टिकावल, ए सजनी ॥ धुन ॥
ढाल धनुष तीर असि धरी बनी वीर,
मत बाँधी दल अधिकावल ए सजनी,
गँवागाई मत्र टिकावल ॥ १ ॥
सजन हतकरी मरल प्रबल अरि,
गृहपरे अनल लगावल ए सजनी,
गँवागाई मत्र टिकावल ॥ २ ॥
सुनहु लरका खण्ड कहैं भ्रजु प्रचड,
नागपुरी छन्द गीन गावल ए सजनी
गँवागाई मत्र टिकावल ॥ ३ ॥[१९]

१७ नगपुरिया गीत छत्तीस रग, पृष्ठ १०।
१८ डॉ० जगदीशचद्र मिश्र, दि कोल इनसरेक्शन (१९६५) कलकत्ता।
१९ श्री दिवाकरमणि पाठक (हापामुनि) से प्राप्त।

ऊपरे तोप छूटल भारी,
नागवसी कापत जीवहारी ॥[२१]

अग्रेजी शासन के विरुद्ध भारत के लोग तैयार हो रहे थे। स्वतत्रता की भावना ने जोर मारा और समूचे भारत मे १८५७ का प्रसिद्ध सिपाही विद्रोह हुआ। इस स्वतत्रता-सग्राम की आग छोटानागपुर तक आ पहुँची। यहाँ के सपूतो ने भी अग्रेजी शासन को जड-मूल से उखाड फेंकने का प्रयास किया। इस आदोलन का केन्द्र राँची बना और इसका नेतृत्व बडकागढ के विश्वनाथ शाही तथा उनके सहयोगी पाण्डे गणपतराय ने किया। अततोगत्वा यह आन्दोलन अग्रेजों के द्वारा दबा दिया गया। विश्वनाथ शाही को राजद्रोह के अभियोग मे १६ अप्रैल १८५८ को फाँसी की सजा दी गई। फाँसी के समय पाण्डे गणपतराय ने विश्वनाथ शाही से जो कहा था वह नागपुरी गीतो की थाती है—

चढ ठाकुर मति डरु फाँसी,
कैल नहीं परसों तो होवों राउर साथी।[२२]

विश्वनाथ शाही शहीद होकर अमर हो गए। वह यहाँ के निवासियो के हृदय मे सदा-सर्वदा के लिए बस गए। उस सिंह-पुरुष की स्मृति मे पाण्डेय दुर्गानाथ राय की "शहीद विनती" नामक निम्नाकित रचना उल्लेखनीय है—

ठाकुर विश्वनाथ साय, सिंह पुरुष जनम पाय छोटानागपुरे
देश खातिर उठलैं वीर कसिके कमरें भाई
ऐसन नर बिरले अवतरे भाई
ऐसन नर बिरले अवतरे।
अंगरेज के पेताचार, सही नहीं अब दिल हमार
कहिके जुद्ध करे, गोला बारूद बम-बन्दूक
कुछ के नहीं डरे भाई
ऐसन नर बिरले अवतरें भाई
ऐसन नर बिरले अवतरे।
देशवासी के सुख कारण, करी लेलैं मने द्रीढ परन
साहसी नी डरे
देश हमार होवी उद्धार

२१ धनीराम बक्शी, फगुआ गीत, पहला भाग, पृष्ठ १३।
२२ कुशलमय बीतल छोटा नागपुर की कलीसिया का वृत्तात (१९५५) पृष्ठ ४५।

फहिके जीद्ध घरे माई
ऐसन नर विरले अवतरे माई
ऐसन नर बिरले अवतरे।
फांसिक जब हुकुम आय, तबु नहीं चीतें घबराय
हाय-हाय सब करे रांचीक बीचे
कदम्ब गछे फांसी देलें उपर माई
ऐसन नर विरले अवतरे माई
ऐसन नर बिरले अवतरें।
धन्य धन्य कहें हरेक-जन, गीटे राज जस गावें
सभे ठन, गाँव-नगर-सहरे
ऐसन नर बिरले अवतरे माई
ऐसन नर बिरले अवतरें।[23]

धीरे-धीरे छोटानागपुर में अंग्रेजों के पैर जम गए। ईसाई मिशनरियों ने यहाँ के भीतरी गाँवों में जा-जाकर धर्म-प्रचार का कार्य प्रारंभ कर दिया। इस तरह छोटानागपुर में एक नये युग का सूत्रपात हुआ। इसी युग में लोगों ने बड़े आश्चर्य के साथ रेलगाड़ी के दर्शन किए—

फिरंगी कर देसे आहे बहुत लोहारे
फिरंगी कर देसे आहे बहुत लोहा रे।
तहाँ से लोहा मंगाए हाकिम
रेल तो बनावे सुन्दरी ओगे
हाकिम बड़ी बुधिमान ओगे ॥ १ ॥
लोहा कर इंजिन बने काठकर डाबा बने।
रेलगाड़ी उड़े लागल पवन समान सुन्दरी ओगे
हाकिम बड़ी बुधिमान सुन्दरी ओगे ॥ २ ॥
नीचे तो आइग पानी, ऊपरे मनकानी,
शंपकर छुटी भेल, चढ़ल मुसाफिर रैल,
ड्राइवर चलावे कल, गारदो देवे बल

२३ आदिवासी, २८/४/१९६६, पृष्ठ ४।

भभकही भभकटी पल मे पहुँच दी ॥ २ ॥
रैलगाडी उडे लागल पवन समान ।[२४]

अग्रेजी शासन की जडें छोटानागपुर मे जमने लगी। जिन जगलो पर यहाँ के निवासियो का स्वत्वाधिकार था, उन पर भी सरकार की कुदृष्टि पड गई। महारानी (सभवत विक्टोरिया) के जगल सम्बन्धी नये आदेश से छोटानागपुर की जनता चिंतित हो उठी। जनता की इस व्यथा का चित्रण निम्नाकित पॅचपरगनिया गीत मे देखने योग्य है—

महारानी हुकुम आनी, जगले इसतार भेल,
मु डा मानकी कोरिछे भाभोना, काटिले जेहल जुरवाना ॥ १ ॥
जिजरीनें नाप कोरिली, चोद्दस दिकें टिका दिलो,
मिटे बाबू चोपोरासी जामा, काटिले जेहल जुरबाना ॥ २ ॥
परमिट निये वने पुसे, केभा काटे केमा घोसे
साल कुसुम आसन मोहुल माना, काटिले जेहल जुरवाना ॥ ३ ॥
हेनो राधे कृपाहीन, केमोने बाँचिबो दीन,
एक सेर चाउर चाइर आना केमोने बाँचिवो दुइ जना ॥ ४ ॥[२५]

इगलैंड से सम्राट् पचम जार्ज का भारत मे आगमन हुआ। सारा भारत पचम जार्ज के समक्ष नतमस्तक हो उठा। सम्राट् का मुक्त-हृदय से ऐसा स्वागत किया गया कि यहाँ का कवि भी मौन नही रह सका और वह पचम जार्ज की प्रशस्ति मे गा उठा—

विलात ते एलो राजा, पांचोम जार्ज महाराजा,
आनोन्दित दिली ते आसिलो, दिलिरो गादी ते से बोसिलो हे
शोभिलो हें, दो रोशने प्राण जुडाइलो ॥ १ ॥
गुनिवे के हाथी घोडा, सोभा कोतो गेलो जोडा,
कोलो रागे वाजोना वाजीलो, दिलिरो गादी तें से बोसिलो हे ॥ २ ॥
जोमिदार बाबू राजा, गुनी माने सोबे प्रोजा,
मिलिये ताहाके पुजिलो, दिलिरो गादी ते से बोसिलो हे ॥ ३ ॥

२४ डमकच गीत, पृष्ठ १४।
२५ धनीराम बक्शी, देशी झूमर, भाग ७, पृष्ठ ७-८

जे रूपे देखी हो मेला नाना रूपेग होलो खेला
घोरे घोरे आलो जालिलो, दिलिरो गादी ते से बोसिलो हे ॥ ४ ॥
दीन दुखी सोबे सुखी, होलो तारे देखी
"घोनिराम" जोयो जोयो बोलो, दिलिरो गादी ते से बोसिलो हे ॥५॥[२६]

सन् १९३२ ई० मे छोटानागपुर की भूमि की माप हुई जो "सर्वे सेटलमेंट" के नाम से प्रसिद्ध है। इस समय सरकारी आदमियो ने ग्रामीणो से काफी लाभ उठाया। छोटानागपुर की अशिक्षित जनता सर्वेक्षण के अधिकारियो से कितना घबराती थी, उसका बडा ही सफल चित्र शेख अलीजान ने इस गीत मे प्रस्तुत किया है—

पहुँचल साल नवासी आय गौरमेन्ट से हुकुम पाय,
जमीन जमीं परे करन नाप नगर गाँव नगर नगरे सखी
हरखन जाँच रइयत ऊपरे ॥ १ ॥
घर घर पारि देत सुवा सब काम जे ठीक हुवा,
दिहान हाजिरे कोई झडी कोई सिम्र
तख्त मुड ऊपरे सखी, हरखन जाँच रइयत ऊपरे ॥ २ ॥
गाँवकर सब मुंडा पहान, करत भेट साफ दिहान,
कोटवार हाक पारे, का सेखी का गुमान,
निकलत सब डरे सखी, हरखन जाँच रइयत ऊपरे ॥ ३ ॥
देखत जमीन कागज पतर, निकलत नाम जेवर जेवर,
मही मच्च करे, करु खेयाल काहे बेहाल,
विधि नट तरे सखी हरखन जाँच रइयत ऊपरे ॥ ४ ॥
सेखी करत क्लर्क भजन, सुनत, "सेख अलिजान"
पहिले सवरे, सरकार करत सरिस
नोटिस जब करे सखी, हरखन जाच रइयत ऊपरे ॥ ५ ॥[२७]

अग्रेजी शासन के विरुद्ध जनमत तैयार होने लगा। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता-सग्राम प्रारम्भ हो गया। भारत की जनता अपनी खोई हुई स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए एक झडे के नीचे आ गई। सारे भारत मे सभाएँ होती रहीं, जनमत बनता रहा। और एक दिन छोटानागपुर के रामगढ़ नामक स्थान में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन का जो विवरण शेख अलीजान ने प्रस्तुत किया है, वह देखते ही बनता है—

२६ देखो झूमर, भाग ८, पृष्ठ ६।
२७ नगपुरिया गीत दलीलरा, पृष्ठ १३।

आखरी समा किये पयान, रामगढ जग तबु तान,
मैदान मजूरे फाइट-फाइट के जगल झाड
शहर बास करे, देखत मन लागत चकेरे ॥ १ ॥
उत्तर है सरग टीसन, दखिन है काना जकसन,
बिच में है डेरा गिरे, छावनी छपर लाइन,
घेरत टटरे हो, देखत मन लागत चकरे ॥ २ ॥
सामान है बेशुमार, गेट पीछे हुई पहरदारे
चौबिस पहरे, चाहत लोग अन्दर जाय,
टीकस पास करे हो, देखत मन लागत चकरे ॥ ३ ॥
दीसत गलि पका रोड, चलत गाडी हजार जोड,
गनती कोन करे, सॉझ बिहान आवत जात
रेल से मोटरे हो, देखत मन लागत चकरे ॥ ४ ॥
बिजली खुटा छावल तार, टॉकी भरन भये तैयार,
कल से जल भरे, खात पियत जात नहाय
देखनद सागरे हो, देखत मन लगत चकरे ॥ ५ ॥
खरचत अति दूध घीव, दधि माखन बढ जीव,
लखपनि कढोरे सबजी बागान फूल,
सोहत सुन्दरे हो, देखत मन लागत चकर ॥ ६ ॥
लागत हैं कनेकसन, कहत "सेख अलिजान",
बम्बा सर करे, गाधी महाराज छाज,
बरनित सगरे हो, देखत मन लागत चकरे ॥ ७ ॥[२८]

द्वितीय विश्व युद्ध का प्रभाव यो तो सारे भारत पर पडा, पर छोटानागपुर मे महँगाई को बढाने मे इस युद्ध का विशेष योग रहा। इतना ही नही छोटानागपुर के विभिन्न क्षेत्रो मे सैनिको के अड्डे रखे गए, जिनके कारण यहाँ के लोगो के सामने अनेक प्रकार की नई समस्याएँ उठ खडी हुईं। "रेजिमेट के आर्डर" के सामने यहाँ के अच्छे-अच्छे लोग काँपा करते थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय छोटानागपुर की जो दुर्गति हुई, उसका बडा ही मर्मस्पर्शी चित्रण शेख अलीजान ने इस गीत मे प्रस्तुत किया है—

पहुँचल देखु अइसन दिन, सबकर सेखि भेलक हीन,
कोई नहो ऊबरे, राजा जमींदार गरीब,

२८ नागपुरिया गीत छत्तीस रग, पृष्ठ १।

झखत घरे घरे हो, मिलत चाउर डेढ सेरक दरे ॥ १ ॥
महँगी बढ़े सुबह शाम, बड़े-बड़े करें कुलिक काम,
रेजिमेंट ओडरे, अइसन दुख छोटानागपुरे हो
मिलत चाउर डेढ सेरक दरे ॥ २ ॥
छव सात आना मिलत रेट, चौकिदार में खटात मेट,
जहाँ तहाँ काम परे, राज वढि के देत समान
गरीब सब डरे हो, मिलत चाउर डेढ सेरक दरे ॥ ३ ॥
सब चीज केर होवल टान, बुझि देखे 'सेख अलिजान"
दूना दुख परे, चिंता मेल काचा उमरे हो
मिलत चाउर डेढ़ सेरक दरे ॥ ४ ॥[२६]

सैनिको के शिविर शहर तथा गाँव सभी क्षेत्रो मे स्थापित किए गए। इससे गाडियो का आवागमन बढ गया, जिसके सम्बन्ध मे शेख अलीजान ही दूसरे गीत मे कहते हैं—

सरकार केर पसन्द भेल, मोटर ढेखु हरेक मेल,
छोटानागपुरे, का शहर का देहात,
समझन नहीं परे हो, मन वेहाल विच में का करे ॥ १ ॥
हलचल रामगढ रॉची, विच में नइसे इजन वाँची
नामकोम डेरा गिरे, कय सौ गाडी नहीं सुमार
चलत रोड परे हो, मन वेहाल वीच में का करे ॥ २ ॥[३०]

द्वितीय विश्वयुद्ध ने छोटानागपुर को महँगाई, भ्रष्टाचार तथा मुद्रास्फीति प्रदान किए। फौजी जवानो ने यहाँ के जीवन की नीति को पतित तथा गँदला बना दिया—

पलटन सब धन लूटे,
मोटर साइकल लोगी
जेकर में भरी भरी
गाँव-गाँव सब लूटे
पैसा नहीं मागन के छीटे
पलटन सब धन लूटे।[३१]

२६. नागपुरिया गीत छत्तीस रंग, पृष्ठ ७।
३०. नागपुरिया गीत छत्तीस रंग, पृष्ठ ७-३।
३१. केदारनाथ पाठक, आदिवासी, १५ अगस्त, १९६४, पृष्ठ, २४।

इतना ही नही इस विश्वयुद्ध के परिणामस्वरूप यहाँ के लोगो ने "कट्रोल" का परिचय प्राप्त किया, जिस कट्रोल मे नमक, तेल, कपडा, धान तथा चावल आदि सभी दुर्लभ हो गए—

समते दु हाजार साले हलचल मचल रे
दुनिया आकाल भेला, जुद्ध में पलटन बोम्बा छोडल रे ॥ १ ॥
गाँव के गाराम पीछे सुलन्टी निकसावल रे,
दुनिया आकाल भेला, सए पाचास लिख आसाम भेजल रे ॥ २ ॥
नोन तेल कन्ट्रोल भेल कपडा महँगा भेल,
दुनिया आकाल भेला, धान चाउर सब कोन बटे गेल रे ॥[32]

द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हो गया, पर वचन के अनुसार अग्रेजो ने भारत को स्वतत्र नही किया। फलतः देश मे रोष की एक नई लहर फैल गई। स्वतत्रता-सग्राम ने जोर पकडा। स्वतत्रता के इस सग्राम मे अनेको की जानें गईं। किसी का सुहाग लुट गया। किसी का लाल छिन गया और बिछड गया किसी बहन का भाई। अतत भारत के सपूतो की आहुति ग लाई। अग्रेजी साम्राज्य को स्वतत्रता के दीवानो के सामने झुकना पडा और १५ अगस्त १९४७ को पराधीनता की बेडियाँ टुकडे-टुकडे हो गईं और भारत की जनता स्वतत्र हो गई—

आजादी मिलल बढ भारी, सुनु नर नारी ॥ १ ॥
अढाई सौ साल छाई विदशी जाल,
निशिदिन करैं अत्याचारी ॥ २ ॥
लाख विधि तडपालैं, बम गोला बरसालैं,
भारत में दुख भेल भारी ॥ ३ ॥
नर-नारी लाख मिली बलिदानी शुली लेली
कबहु न हिम्मत हारी ॥ ४ ॥
बडे-बडे नेतागण, तजलैं, तन-मन-धन
सपनों में धीरज न हारी ॥ ५ ॥
बटेश्वर कहे सब, आजादी न भूला अब,
कर्त्तव्य जान करु रखवारी ॥ ६ ॥[33]

स्वतत्रता तो मिल गई, पर कैसे ? इस सम्बन्ध मे लक्ष्मण राम गोप की यह रचना अविस्मरणीय है—

३२ लक्ष्मण सिंह बडाईक, नागपुरिया गीत पचरगी, पृष्ठ ३।
३३. बटेश्वरनाथ साहु, लोकगीत, पृष्ठ १४।

जब-जब दुनियाँ, में दु खदायी राजा भेलैं,
तब-तब भगवान ले लैं अवतार कि दुनियाँ में
देलैं दु ख से छोड़ाये कि दुनिया में ॥ देलैं ॥ १ ॥
सत युग हरिश्चंद्र लेलैं अवतार हो,
काया के बेची राजा, सत्य के बचाय कि दुनियाँ में,
देलैं धरम बचाय कि दुनियाँ में ॥ देलैं धरम ॥ २ ॥
त्रेता में रामचद्र ले लैं अवतार हो
रावण के मारि करि धरती उधारे कि दुनियाँ में
दु ख सब के मेटाये कि दुनियाँ में ॥ दु ख ॥ ३ ॥
द्वापर में कृष्णचद्र ले लैं अवतार हो
कंस के मारी करी असुरे संहारे कि दुनियाँ में
देलैं जुलुम छोड़ाय कि दनियाँ में ॥ देलै ॥ ४ ॥
कलकी में गाधी बाबा ले लैं अवतार हो
चरखा चलाये बाबा ले लै तो सोराजे कि दुनियाँ में
दे लैं गोरा के भगाय कि दुनियाँ में ॥ देलैं गोरा ॥ ५ ॥
लछुमन कर जोरी, कहत विनय करी
भारत के सब जानि मनि करु रारी कि सीनाजोरी,
भोगु पुरुन सोराजे करि हरि हरि ॥ भोगू पुरुन ॥ ६ ॥[३४]

लोग आजादी का अर्थ गलत न समझ बैठें, इसलिए नईम मिरदाहा ने अपनी रचना "आजादी का सदेश" मे इसका स्पष्ट अर्थ बताया—

आजादी कर बात सुनु, मगल मनाय लेठ।
हिन्दुस्तानी भाई सब, गला मिलाय लेठ ॥
बाबा-बाबा बाबामत, सब कोई अपनाय लेठ।
आपन देशक लाज राखु, झडा फहराय लेठ ॥
बढाऊ तिरगाक शान, जन गन गाय लेठ।
सब सैंतालिसक बात, मन में बैठाय लेठ ॥
हम हकी भारतवासी, एकता बनाय लेठ।
आईंझ खुशीक दिन आहे, हिलीं-मिली खाय लेठ ॥

३४ नागपुरिया गीतावली, पृष्ठ १३।

छुवा-छूतक भेद-भाव, दिल से हटाय लेउ।
इसन बात बोलु माई, सबके रिझाय लेउ॥[३५]

और पंद्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस से तिरंगा आकाश मे लहराता आ रहा है, जो हमे अनवरत यह संदेश दे रहा है—

केशरिया रंग कहे राखू वीर विचार,
यदि देशे आँच आय देहू पल में पछार,
एही है भारत देश सब जनक प्राण अधार
गोइ केशरिया
बीचे फरफर फहरत पटी सादा रंग,
कहे सात्विक विचारे निमु सब नर संग,
एही जिंदगी में सत्य अहिंसा के न करू भंग,
गोइ बीचे
बीचे सोहे अशोक चक्र घन,
कहे दिनोदिन बढ़ी उद्योगीकरण,
एही प्रगति पथे नहि रुकी हमर चरण,
गोइ बीचे
नीचे हरियर पटी कहे जान,
है हामर देश कृषि प्रधान,
एही बसुधा के छवि हरियर मोहि सबके प्राण
गोइ बीचे [३६]

(घ) छोटानागपुर—स्वतंत्रता के पश्चात् :—

उन्नीस सौ सैंतालीस सने, पंद्रह अगस्त शुक्रवार दिने
होवलें बापू मगने फिरंगी भागलें जने-जने
विजयी होलें देना रने, फिरंगी भागलें जने-जने।[३७]

पंद्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस को भारत स्वतंत्र हो गया। अंग्रेजों का साम्राज्य भारत से समाप्त हो गया। भारत के लोगो ने चैन की सांस ली और

३५ आदिवासी, स्वतंत्रता दिवस विशेषांक १९६७।
३६ बलदेव प्रसाद साहू, आदिवासी, १५ अगस्त, १९६६, पृष्ठ ६४।
३७ नईमउद्दीन मिरदाहा, नागपुरिया गीत, भाग ५-६, पृष्ठ ४।

अपनी प्रिय कांग्रेस पार्टी से लोकप्रिय सरकार बनाने को कहा। अंग्रेजो के काले शासन के स्थान पर कांग्रेसी राज्य का श्री गणेश हुआ—

ऐ दैया भारत राजा भेला कांगरेसी,
नम्बर देखु बेसी, भारत राजा भेला कांगरेसी॥ १ ॥
लिगवाला अति साज सबे मिली चाहे ताज,
झारखंड भेल आदिवासी, नम्बर देखु बेसी,
भारत राजा भेल कांगरेसी ॥ २ ॥
सुभाष आजाद जवाहर, पटेल गांधी राजेन्द्र
चाहल चले आपन देसी, नम्बर देखु बेसी,
भारत राजा भेल कांगरेसी ॥ ३ ॥
हिन्दु मुसलमान भाई, मेल से रहना होई,
पाकिस्तान जिना के फरमासी, नम्बर देखु बेसी,
भारत राजा भेल कांगरेसी ॥ ४ ॥[38]

स्वतंत्रता-प्राप्ति के उपरांत छोटानागपुर की जनता भी स्वर्णिम स्वप्न देखने लगी कि स्वराज्य में ऐसा होगा और ऐसा नहीं होगा। सभी अपनी कल्पना की बातें करते। लोगों को कांग्रेस से बड़ी-बड़ी आशाएँ थी। लोग समाजवाद की भी बातें सोचने लगे। यहाँ के ग्रामीणों ने स्वराज्य की जो कल्पना की थी, उसे "लछुमन" ने अभिव्यक्त करने का सफल प्रयास किया है—

कठिन गोरमेंट बुधि लाई हो
सबे भाई से मान बगाई।
दुगनी लागाई गोरमेंट पीसा तो बनाई
दिने दारू हजारी लगाई हो
सबे भाई मे मान गवाई ॥ १ ॥
महँगी देवी गोरमेंट तलब बढ़ाई
काम देखि सबे चल होवें हो,
सबे भाई मे मान गवाई हो।[39]

पर "लछुमन' की तीव्र दृष्टि भविष्य को भी टोह लेती है। उन्हें भय है कि यदि लोगों को अधिक पैसे मिलेंगे, तो यहाँ के लोग उन्हें शराब पीने में बहा [illegible]।

३८ [illegible], पृष्ठ १६।
३९ [illegible], पृष्ठ १४-१६।

शराब पीकर वे कुल-शील को भी भूल जायेंगे, अत "लछुमन" आगे कहते हैं—

भठी घरे जाई, मद पीके मताई
बोमी करे सबसे छुवाई हो,
समे भाई से काम कराई ॥ ३ ॥
सब नर नारी कुल सील के डुबाई
समुझि "लछुमन" पसताई हो
समे भाई से काम कराई ॥ ४ ॥*

पराधीनता से मुक्त होने का हमारा उत्साह ठडा भी नही हुआ था कि भारत के ऊपर एक वज्रपात हो गया। ३० जनवरी १६४८ को बापू की हत्या कर दी गई और सारा ससार शोकमग्न हो गया—

काहे मलीन मुँह दीसत ससार,
तब सखी भाई किया लगिन दुनिया अंधार ॥ १ ॥
देहली दरद देखि मलीन ससार,
तब सखी भाई गाधी बिना दुनिया अधार ॥ २ ॥
कोपिनी कसि कइसे मेटल अग्रेजी राइज,
सखी भाई आजु कहाँ गाधी महाराज ॥ ३ ॥
पापी मुदैया नथू, देहली का शहरे जाई,
सखी भाई तकि देल गोलिया चलाई ॥ ४ ॥
नेहरू के दये राज आपने चलले आज,
सखी भाई सरगहिं गाधी महाराज ॥ ५ ॥
कादत देशे देशे, सुनु "घनी" कहत बेसे,
सखी भाई मानि चलु गाधी उपदेश ॥ ६ ॥[४०]

जब भारत से अग्रेजो का साम्राज्य समाप्त हो गया, तो लोगो ने राजा तथा जमीदारी प्रथा को भी समाप्त कर डालना चाहा। सरदार पटेल ने केन्द्र मे रहकर राजा-रजवाडो को भारतीय सघ का अग बना लिया। इधर बिहार मे कृष्ण बल्लभ सहाय के प्रयास से जमीदारी प्रथा का उन्मूलन हुआ—

भोट के भमना गेल, मेम्बर अपना भेन,
देखु सखी पलटल जात से जवाना रे ॥ १ ॥

*गीत पचरगी, पृष्ठ १६।
४० नागपुरिया जेबी सगीत, पृष्ठ २६।

कृष्ण वल्लभ सहाय, कहत हैं समुझाय,
आये गेला प्रजाक राइज, नेटतउ भखना रे ॥२ ॥
बुझा-बुझी करि जाय, सभे देलें एके राय,
जिमींदारी राजाक राइज, चाहि उठि जाना रे ॥ ३ ॥
मिली राजा जिमींदार, बुझावलें बारे बार,
दरबारे नाहि चलल एकहू बहाना रे ॥ ४ ॥
जिमिदारी उठि गेल, राजाक राज टुटी गेल,
प्रजा प्रजा प्रजा राजा, प्रजा के बुझाना रे ॥ ५ ॥
गाधी कर आँधी जोर, चले लागल चहुँ ओर,
सुनु "धनी" गाधी नाम सगरे रटना रे ॥ ६ ॥[४१]

प्रजा-प्रजा और प्रजा ही राजा भारत में कैसे समव हो ? इसके लिए नेताओ ने एक स्वर से कहा कि देश मे शिक्षा का द्रुतगति से प्रचार किया जाना चाहिए ताकि भारत का एक-एक व्यक्ति शिक्षित हो जाय। शिक्षा का यह सदेश छोटानागपुर के गाँवो मे पहुँचा। फलत लक्ष्मण राम गोप गा उठे—

उठु उठु भाई सब मनि करु ठेर रे
बिनल समय नहीं फिरे रे ॥ ....
पढी लेहु गुनी लेहु करु तो गेयान रे
ओरो बनु पडित महान् रे ॥[४२]

काग्रेसी सरकार ने गाँव-गाँव मे स्कूल का प्रबन्ध कर दिया—

अवसर अब इसन भेल
गाँवे-गाँवे इसकूल देल काग्रेस सरकारे।[४३]

शिक्षा का महत्त्व बडी तेजी से बढने लगा। शिक्षा की बढती हुई महिमा को देखकर शेख अलीजान ने तो यहाँ तक कह दिया—

होरी जे नहीं बालक पढावन हो माता पिता बएरी
सभा मधे सोभा नहीं पावन, हँस मधे बकुनी।
जे नहीं बालक पढावन ॥ १ ॥[४४]

४१ नागपुरिया जेंठी मगाँत, पृ० २५-२६।
४२ नागपुरिया गीतावली, पृष्ठ १२।
४३ अभ्यासपत्री (हस्तलिखित प्रति से)।
४४ फगुआ गीत, भाग १, पृष्ठ ३-४।

शेख अलीजान की बात लोगो के मन मे उतर गई। "हसो के बीच बगुला" बनकर रहना यहाँ के लोगो को बुरा लगा। अब सभी हस बनने की तैयारी मे जुट गए। इस दौड़ मे वृद्ध स्त्री-पुरुष भी पीछे नही रह सके—

> बुढवा के सगे बुढ़ी ठुनकते जाय,
> हम्हों पढे जाब चलू नाम लिखाय।
>
> × × ×
>
> हमरे कर जोढा-पाडी, सिखलैं सब लिखा-पढी
> अँगुठा निशान अब केठ न लगाय।
> हम्हों पढे जाब चलू नाम लिखाय।[४५]

केन्द्रीय सरकार ने भाषा के आधार पर राज्यो का पुनर्गठन करना चाहा। इसके लिए राज्य पुनर्गठन आयोग बनाया गया। इस आयोग का आगमन छोटानागपुर मे भी हुआ। आयोग के सामने यहाँ के निवासियो ने अपनी माँगे पेश की कि वे अपनी मातृभूमि का कोई भी हिस्सा उडीसा या बगाल राज्य मे नही मिलने देंगे। सरायकेला थाना उडीसा राज्य मे मिला दिया जाएगा यह अफवाह चारो ओर फैल गई। इसके विरोध मे सभाएँ हुई। लोग दिल्ली गए और बिहार सरकार ने भी अपनी "दाबी" (दावा) प्रस्तुत की। सरायकेला बिहार राज्य मे ही रह गया। इस सूचना को पाकर लोग नाच उठे। चारो ओर उत्सव मनाए गए—

> होइलो उडिसा राज सोराइकेला थाना रे,
> खोबोर सुनिये दीदी लागिछे भाभोना रे ॥ १ ॥
> सिंगभूमे केना बेचा जोहि होबे माना रे,
> छुटिबे से कालीमाटी चाईबासा जाना रे ॥ २ ॥
> गाँये गाँये सोभा कोरे कोरिछे मोंत्रोणा रे,
> उठिलो बिरोधो बाद के कोरिबो माना रे ॥ ३ ॥
> बिहारी कोरिलो दाबी, दिये ठकुर नाना रे
> आरोजी कोरिलो प्रजा, दिल्ली ते रावाना रे ॥ ४ ॥
> दिल्ली से उठिलो मिमिल, हुकुम भेलो जाना रे,
> सोराईकेला चाईबासा सोदोरे रो थाना रे ॥ ५ ॥
> आनोंदो उल्लासे, 'भोनो" बाजिलो बाजोनारे,
> कुमारो कोरालेन सुखे बोडो पीना खाना रे ॥ ६ ॥[४६]

४५ पाण्डेय दुर्गानाथ राय, आदिवासी १२ नवम्बर १९६४, पृ० १८।
४६ धनीराम बक्शी, नागपुरिया जेबी सगीत, पृ० ३४-३५।

अंग्रेजों के शासन-काल में भारत की आर्थिक स्थिति शोचनीय हो गई थी। यहाँ की सारी दौलत इंगलैंड पहुँच गई थी, अत. नूतन भारत के पुनर्निर्माण के लिए पचवर्षीय योजनाएँ बनाई गईं। प्रथम पचवर्षीय योजना में कृषि पर विशेष बल दिया गया। इसके उपरात द्वितीय पचवर्षीय योजना प्रारंभ हुई, जिसका संदेश छोटा-नागपुर के गाँवों में विष्णुदत्त साहु ने यों पहुँचाया—

सुनु भाइ. सुनु भाइ. पाँच बछर केर,
दूसर जोजना केर. समय आलक भाइ रे।
पहिल जोजना तो. सफल होलक सुनु
दूसर जोजना केर. समय आलक भाइ रे।
कल कारखाना बढ़ी. अन धन खूब बढ़ी,
मोटर जहाज रेल, दिने-दिने चली रे।
सेहे लगी कहथी. दूसर जोजना के,
तन मन धन ले मदैत कर भाइ रे।
दूसर जोजना के, सुफल होलहें जानू,
हमरेकर दलिदर, दूर भागी भाइ रे।[३७]

छोटानागपुर का औद्योगीकरण प्रारंभ हो गया। हटिया में भारी मशीन के कारखाने के निर्माण में हजारों व्यक्ति जुट गए। हटिया की इस कायापलट को देखने के लिए लोग सैकड़ों की सख्या में हटिया पहुँचने लगे। कवि भारत नायक ने भी हटिया कारखाना के निर्माण को समीप से देखा—

हटीया कारखाना के पालान चलु देखन भाई ॥
कारखाना के देखो सजान करे पारी नहीं अनुमान
कुली रेजा लागलैं असठेकान चलु देखन भाई
हटीया कारखाना के पालान।
हवलेर में डेम बँधाय. धुरवा में डीपु बनाय
सरनी में नीमीन लगाय चलु देखन भाई
हटीया कारखाना के पालान।
लटमा में सड़क सोधाय, पहान टोली आनी नीलाय
जगन्नाथपुर रहे ऊँचे अस्थान. चलु देखन भाई
हटीया कारखाना के पालान।
तुलसी कुछ रहे दूर लाईन भीरे बईलामपुर
कब होवी हीनु डुमुर से मिलान. चलु देखन भाई

[३७] मादर के बोल पर, पृष्ठ ९-१०।

हटीया कारखाना के पालान ।
भारत कहे अघाय देखी के सब मन लोभाय
हीनी हारी जानै भगवान चलु देखन भई
हटीया कारखाना के पालान ।[४८]

अब हटिया के कारखाने ने अपना वास्तविक स्वरूप लगभग प्राप्त कर लिया है। हटिया नामक छोटे-से गाँव ने एक बड़े नगर का रूप ग्रहण कर लिया है। यहाँ अनेक प्रकार के लोग बसते है, अत हटिया मे नई सस्कृति देखी जा सकती है। हटिया की रौनक चकचौंध करने वाली है। नईमउद्दीन मिरदाहा ने इसी हटिया का रगीन चित्र बडी सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया है—

हटिया शहर बड भारी भाई चलत ट्रेन कार गाडी
हटिया शहर बड भारी भाई चलत ट्रेन कार गाडी ॥ १ ॥
भवन बनावैं ईंट—सेफर में गदीया सीट
बहुत बढल ठीकेदारी भाई हटिया शहर बड भारी
चलत ट्रेन कार गाडी भाई—हटिया शहर बड भारी ॥ २ ॥
बिजली से होवे फिट—देखु फैसन आउर जीट
बाबू भईया रहें दिकदारी भाई—हटिया शहर बड भारी
चलत ट्रेन कार गाडी—हटिया शहर बड भारी ॥ ३ ॥
किमती लगावें सेंट—चेहरा में करैं पेंट
नाज नखरा बड भारी भाई—हटिया शहर बड भारी
चलत ट्रेन कार गाडी—हटिया शहर बड भारी ॥ ४ ॥
सब्जी में लेवैं मटर—बान बोलैं अटर-पटर
समय दाईन्ज करैं दुराचारी भाई—हटिया शहर बड भारी
चलत ट्रेन कार गाडी भाई—हटिया शहर बड भारी ॥ ५ ॥
राईत जे बजलैं आठ—रेजा कुली धरैं ठाठ
करैं सब सिनेमा के तैयारी भाई—हटिया शहर बड भारी
चलत ट्रेन कार गाडी भाई—हटिया शहर बड भारी ॥ ६ ॥
नईम जे देखल हाल—देखी के हविल बेहाल
लिखन कठीन विचारी भाई—हटिया शहर बड भारी
चलत ट्रेन कार गाडी भाई—हटिया शहर बड भारी ॥ ७ ॥[४९]

४८. भारत का नया चमत्कार, पृष्ठ ३।
४९ नागपुरिया गीत, पाँचवाँ एव छठा भाग, पृ० २-३।

गाँवो मे पचवर्षीय योजनाओ को कार्यान्वित करने का भार प्रखण्ड विकास पदाधिकारियो (ब्लॉक डेवलेपमेंट ऑफिसर) को दिया गया, जिन्हें लोग बी०डी०ओ० के नाम से जानते हैं। सडक, कुआँ, तथा सिंचाई की व्यवस्था के लिए ग्रामीणो को ऋण दिए जाने लगे और चारो ओर बी०डी०ओ० का नाम गूँजने लगा—

गुँजे बी०डी०ओ० कर नाम काम खुलै धुमा धाम
गाँवे गाँवे रास्ता बनावें गोई साजैन मिली जुली
रुपीया गनावें गोई साजैन मिली जुली रुपीया गनावें ॥ १
देहु बी०डी०ओ० साहब कुछ तो रुपीया
काम करी कुली केर कलपथी हिया गोई साजैन
कोई नहीं पथ के चलैया गोई साजैन ॥ २ ॥
गाँवे गाँवे कुवाँ तालाब खोदथैं खोदवैया
कोई कहें पैसेस गेली खाली जहर के पुड़िया
गोई साजैन कोई नहीं हमके बचैया गोई साजैन ॥ ३ ॥
खने खने नापी जोखी करथैं करैया
सगे सगे कर्मचारी होवथैं फेरैया गोई साजैन
कोई नहीं बात के मनैया गोई साजैन ॥ ४ ॥
बहुत खुललैं काम बोर्ड में लिखालैं नाम
जीप बैठी गाड़ी के उड़ालैं गोई साजैन
करैं भलाई नाम जगालैं गोई साजैन ॥ ५ ॥
कहत नईम बाबू—गीनिया बनाली आजू
पंचवर्षीय योजना के बारे गोई साजैन
बिजली चमको घरे घरे गोई साजैन
बिजली लगातो घरे घरे ॥ ६ ॥[५०]

और देखते-ही-देखते तृतीय पचवर्षीय योजना भी आरम्भ हो गई। पिछली दो योजनाओ का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हुए पाण्डेय दुर्गानाथ राय तृतीय पचवर्षीय योजना का स्वागत करते हैं—

मोयँ तो खुसी भेलों भारी · ···
विकास जोजना उपकारी, भाई
मोयँ तो खुसी भेलों भारी · ·

५० नागपुरिया गीत पहला एव दूसरा भाग पृष्ठ ८-९।

टाँड़ डीह गाँवे गाँवे चोभ-कुवाँ ठाँव-ठाँव
मोयँ तो खुशी भेलों भारी
गड़ा-स्कूल बिसारी भाई मोयँ तो
भेली रे शासन नीति, सम्हली जगाली रीति
मोयँ तो खुशी भेलो भारी
खढ़ि गेले अबरा पढ़वारी भाई, मोयँ तो
रोगे दुखे नहे डर, ब्लौके आई डाक्टर
मोयँ तो खुशी भेलो भारी
बिना दामे छोटाँवे बेमारी भाई, मोयँ तो
नगर सुधारे अबरा बढ़ि गेले बाड़ी-बारी
मोयँ तो खुशी भेलो भारी
गाय भैंस भेलयँ दुधारी भाई, मोयँ तो
तीसर योजना परे, खेती-बारी देखू जोरे
मोयँ तो खुशी भेलो भारी
मिच्छा समाज के सुधारी भाई, मोयँ तो [५१]

भारत प्रगति के माग पर अग्रसर हो रहा था। यहाँ की शातिप्रिय जनता अहिंसा तथा शाति पर विश्वास करती रही। किसे पता था कि अहिंसा के कथित पुजारी चीनी ही हमारे ऊपर आक्रमण कर बैठेंगे? अक्टूबर १९६२ मे एकाएक भारत की उत्तरी सीमाओ पर चीनी हमले प्रारभ हो गए। हमारा रक्षक हिमालय भी भारतीय जनता के साथ-साथ आदोलित हो उठा। चीनियों को अपनी पवित्र मातृभूमि से निकाल बाहर करने का सकल्प छोटानागपुर के लोगो ने भी किया। इसके लिए ईश्वर से प्रार्थनाएँ की गई—

गिरिधारी हो। आज मुरली मोलल टाटाय ले ले हाथें सुदरसन।
गीता अर्जुन सुनाव भारत जन-गन-मन ॥
माया तोड़ हमनी के आईगे कूद सिखाव।
लदाख नेफाय चोर चीन के जमदूत देखाव ॥[५२]

छोटानागपुर के बच्चे, बूढे और जवान सभी पाण्डेय दुर्गानाथ राय के स्वर मे स्वर मिलाकर गा उठे—

५१. आदिवासी, स्वतत्रता दिवस अक १९६४, पृ०-४६
५२. दुखहरण नायक, आदिवासी (कविताक) ६ फरवरी १९६४, पृ० ४।

सस्ता दर चावल नहा चलैं सीना तानी गोइ साजैन
जने देखु तने हानि-हानि गोइ साजैन ॥ ४ ॥
पिन्धे ले कपडा नहीं खाब का लानी
छौवा पुता दीक करैं करी का धरीनी गोई साजैन
जने देखु तने हानि-हानि गोई साजैन ॥ ५ ॥[५४]

चीनी आक्रमण के पश्चात् देश मे महँगाई बढती ही गई, जिसे रोक पाने मे सरकार सर्वथा असफल सिद्ध हुई। इस मँहगाई के कारण गरीवो की कमर टूट गई। उन्हे जीवन के लिए नितात आवश्यक चीजें भी नही मिलने लगी। छोटानागपुर के लोगो ने इन गाढे दिनो को कैसे व्यतीत किया, उसका एक कारुणिक चित्र नीचे अकित है—

सुनु तो नागपुरी माई, इसन समय आय गेल।
रुपये सेर चाउर बिके, बहुत महँगी भेल ॥ १ ॥
साग सब्जीक भाव, बहुत जे बर्द्ढ गेल।
पियब वैसे चाह अब, चिनी तो कन्ट्रोल भेल ॥ २ ॥
डालडा, करुआ तेल, घीव से भी बर्द्ढ गेल।
जाय रहों गूर किने, माटी तेल सुना भेल ॥ ३ ॥
कपडा का जाव लेवे, नर से आगे नारी गेल।
एक से एकैस कहै, इसन दोकानदारी भेल ॥ ४ ॥
धान महुवाक भाव, उरीद से टर्प गेल।
आलू सकरकन्दा, बहुत अमृत भेल ॥ ५ ॥
बोदी बराई राहर, एक भाव बिक गेल।
अदना तेंतैर लगीन, बहुत जे दिक भेल ॥ ६ ॥[५५]

एक मुसीवत टली, तो देश के ऊपर एक नया सकट आ पडा। पाकिस्तान ने भारत के ऊपर आक्रमण किया, पर उसे इस आक्रमण की बडी कीमत चुकानी पडी। नागपुरी के कवि बलदेव प्रसाद साहु ने भी यहाँ के लोगो की ओर से पाकिस्तान के समक्ष स्पष्ट कर दिया —

नद नन्दन बन है हामर कशमीर
सेके लेइ कोन आखिर,

५४. नागपुरिया गीत, तीसरा एव चौथा भाग, पृ० १६।
५५ नागपुरिया गीत, सातवाँ एव आठवाँ भाग, पृ० १६।

सुन्दरियो गे
कनि कहन गुनो
अचके मरन सुनो
लाल वहादुर सुरपुर जाई
सुन्दरियो गे [५७]

श्री शास्त्री चले गए, पर उनके द्वारा दिए गए नारे "जय जवान" "जय किसान" आज भी हमारे हृदयो मे गूँज रहे हैं—

जय जवान जय किसान, देश के सचा सान, जय-जय वीर महान।
तोहें हेकिस चक्रधारी, तोहें हेकिस हलधारी
तोहें हेकिस परम सुजान,
हिमगिरी विंध्य-शृ ग, कृष्ण कवेरी गग, तरगित मान।
दुसासन खल भारी, खींचत द्रोपदी सारी,
रक्षा करु चट भगवान,
हाथे धरु सुदर्शन, चीर पुनीन धन, करु मुक्त दान।
नेफा लदाख भूमि, रन कछ चूमि चूमि,
उमगत चलू बलवान,
चले जइसे सिंहराज, दर्प विदीर्न काज, पुलकित प्रान।
देस के माटी सोना, करि देउ कोना कोना,
पसेना के महिमा बखान,
सस्य स्यामला भूमि, हरित भरित पुनि, बने दूनिमान।
तिनरग सोमा माने, सत्रु जय तेजवाने,
रङ्ग देवइ गोट आसमान,
"केसरी" सत्य वल, नहीं भय नहीं छल, विदित जहान। [५८]

छोटानागपुर के गाँवो मे पचायती राज प्रारम हो गया। मुखिया का चुनाव होने वाला है, पर इस चुनाव को देखकर ही यह अनुभव किया जा सकता है कि भारत मे प्रजातत्र का नाटक कितना महँगा और छिछला है। वस्तुत "वोट" "नोट" के विना सभव नही, अत इसमे वेचारे मुखिया का क्या दोष—

५७ आदिवासी, १२ जनवरी, १९६७ पृष्ठ २।
५८ प्रो० विसेश्वर प्रसाद "केसरी". आदिवासी, गणतन्न दिवस विशेषाक, १९६६, पृष्ठ ५८।

पानी-कल किस्ती अघोर
बसावत जल-सूत धारे ॥
तैतिस-सुत्री योजना, व्यर्थ न जातेग सुना,
सहयोग केर आशा केर,
सफल हतेग धीरे-धीरे ॥
करेके आत्म निर्भर, अलप दिन भीतर,
सुख सपन्नता विचारे
कवे आशु सुदिन नेहारे ॥[६०]

सयुक्त विधायक दल की सरकार के सामने सबसे बडी समस्या थी—छोटा-नागपुर के कुछ हिस्सो मे प्रस्तुत भयकर अकाल। इस लोक-हितकारी सरकार ने अकालग्रस्त लोगो के बीच लाल कार्ड बाँटकर उन्हे भूखो मरने से बचा लिया—

हाय रे हायरे सरकार हितकारी महँगी में करे उपकारी
सरकार हितकारी महँगी में करे उपकारी ॥ १ ॥
लाल काड करे जारी असहाय के राशन फिरी
करे सेवा सोची विचारी खुश होवलें जनता सारी
सरकार हितकारी महँगी में करे उपकारी ॥ २ ॥
रिलीफ के काम जारी करें सब नर-नारी
माय छौवा पारी-पारी कोई न रहलें तो बेकारी
सरकार हितकारी महँगी में करे उपकारी ॥ ३ ॥
बाँध पोखैर मेल तैयारी रुपया बाटत भारी
तनीको न करे देरी बिहन धान होवे बटवारी
सरकार हितकारी महँगी में करे उपकारी ॥ ४ ॥
लगान में कमी करी गरीब के देलें तारी
अब समय आय घुरी नईम गावत विचारी
सरकार हितकारी महँगी में करे उपकारी ॥ ५ ॥[६१]

पर सामान्य जनता कमर तोड महँगाई से परीशान थी। इस महँगाई ने लोगो को क्या दिया और लोगो से क्या लिया इसका मार्मिक विवरण नईमउद्दीन मिरदाहा ही आगे प्रस्तुत करते हैं—

६० आशुतोष, आदिवासी, १२ अक्तूबर १९६७, पृष्ठ ११।
६१ नागपुरिया गीत, नवा एव दसवाँ भाग, पृष्ठ २३-२४।

समय कर महँगी आवे न भुलाय के
सबक मन रहे कुमलाय के एहे भाई ।। १ ।।
का गरीब का अमीर एके पथ सिधाय के
सोचैं सब बहुत अकुलाय के ।। २ ।।
मीले न पईंचा चाउर जियत का खाय के
है से भी रहें मटीयाय के ।। ३ ।।
मीलो बाजरा गहुँम सीराय गेल बेचाय के
बहुत रहलें पछताय के ।। ४ ।।
सेठ जे साहूकार हँसे मुसकाय के
एहे दिन हेवे तो कमाय के ।। ५ ।।
बीस पर दाम दस लाने तेउ मे इतराय के
कोई तो बेचले मगन मन से उतराय के
लीखाले कागज पचास बनाय के ।। ६ ।।
कोई तो हसले ससता पाय के ।। ७ ।।
कोई खालें सूजी रोटी छिलका पकाय के
कोई खालें खूद्दी मिझाय के ।। ८ ।।
कोई खालें गोहैर दाईल घीव से बघराय के
कोई खाले साग हबकाय के ।। ९ ।।
कोई पिन्धे पेंट कमीज लोहा लगाय के
कोई पिन्धे करैया सकताय के ।। १० ।।
कोई पिन्धे मोजा जूता पालीस लगाय के
कोई चलें खरपा लटकाय के ।। ११ ।।
कोई चढ़े मोटर गाड़ी पेट्रोल जराय के
कोई जियें रिक्सा चलाय के ।। १२ ।।
कोई घुरें पक्का सड़क धोती फहराय के
कोई चले भेलगी जूराय के ।। १३ ।।
कोई रहें पक्का घरे छत उठाय के
कोई रहें कुम्बा छराय के ।। १४ ।।
कोई सुतें पलंग पर गदीया डसाय के
कोई सुतें बोरा पसराय के ।। १५ ।।

कहे नईम इसन रीत राखु महत अपनाय के
राखु प्रभु सबके सम्मराय के ॥ १६ ॥[६२]

यह महँगाई अन्नाभाव और जीवन की अन्य समस्याएँ कैसे दूर की जा सकती हैं ? इनका एक ही उत्तर है—कृषि का आधुनिकीकरण तथा परिवार-नियोजन—

से दिना सेमिनार में
सुनली
सबसे बगरा बाढलक है
देशकर आबादी।
आबादी माने
छउवा-पूता।
जे हिसाब से
छउवा-पूता होवथें
एक दिन
केकरो खायेक-पीयेक ले
नी मिली।
अटर फिर सोचू
आदमी कर
कि छगरी भेडी कर
चँगना कर
मइला कीडा कर।
छगरी भेडी चँगना
मइल कीडा इसने
गेदरगेसा होयला
खायला-बचेला
मरेला।
मुदा भाई मने
आदमी कर
छउवा-पूता
आदमी नियर।

६२ नागपुरिया गीत, नवाँ एव दसवाँ भाग, पृष्ठ २४-२५।

ठीक हिसाब से
बढाय सकब
खिलाय-पिलाय
पढाय-सकब।
सेके भाई मने
सोचू समझू बाबू—
छउवा-पूता
आदमी कर
कइंठो?
हाँ, हाँ, ठीक कहली
बेसी से बेसी
तीन ठो, चार ठो।
इके कहँना
परिवार नियोजन।
तो परिवार नियोजन करु।[६३]

आज के प्रत्येक शिक्षित तथा अशिक्षित व्यक्ति की अभिलाषा सरकारी नौकरी की प्राप्ति है, पर जिन्हे सरकारी नौकरी मिल गई है वे अपनी सरकारी नौकरी से ही परेशान हैं। वास्तव मे सरकारी नौकरी एक ऐसी चीज है जो सबको रास नहीं आ सकती। एक ऐसे सरकारी कर्मचारी की व्यथा सुनिए जो अपनी नौकरी नहीं, नौकरशाही से परेशान है—

इसन सरकारी काम छुटी जातौ मातृ धाम।
तनीको न मिलतौ आराम गोईं साजैन
छने-छने होबे बदनाम गोईं साजैन ॥ १ ॥
बी०डी०ओ०, एस०डी०ओ० मिली देलँ कठिन काम
जाहू भाई कर्मचारी करु इसन काम
गोईं साजैन जग में बाजतौ हामर नाम गोईं साजैन ॥ २ ॥
औडर जब भेल जारी-घुमैं लागँ कर्मचारी
भूखे पियासे आरी आरी-गोईं साजैन

६३. शशिकर, आदिवासी, २६ जुलाई, १९६५, पृष्ठ ५।

तेऊ नहीं खुश करे पारी-गोई साजैन ॥ ३ ॥
आलैं इन्सपेक्टर साहब-देस के तैयारी
रुबाब जमालैं कठिन कलम देहैं मारी
गोई साजैन कर्मचारी का करे पारी गोई साजैन ॥ ४ ॥
बड़े-बड़े ऑफिसर देखैं नहीं एको सर
छोटकोबैन बोलैं फरफर गोई साजैन
करैं रिपोर्ट देखी के अवसर गोई साजैन ॥ ५ ॥
कहत नईम बाबू-देखु सुनू बड़ा बाबू
हमके न लागो एको डर-गोई साजैन
धरबों हम घर के डहर गोई साजैन ॥ ६ ॥[६४]

सन् १८५७ के असफल सैनिक विद्रोह के पश्चात् सन् १८९५ मे बिरसा मुडा ने एक आदोलन अग्रेजो, जमीदारो तथा ईसाई पादरियो के विरुद्ध प्रारभ कर यह नारा बुलन्द किया था—"हमारा छोटानागपुर छोडो"। अतत बिरसा गिरफ्तार किए गए और जेल मे ही उनकी मृत्यु हो गई। एक प्रकार से छोटानागपुर के लोगो ने बिरसा को विस्मृत कर दिया था, किंतु इधर बिरसा भगवान के प्रति छोटानागपुर के आदिवासियो (विशेषत ईसाई-आदिवासियो) के हृदय मे एक नई श्रद्धा उमड पडी है। बिरसा के नाम पर कुछ दल भी उठ खडे हुए हैं। इस शहीद को स्मरण करते हुए दुःखहरण नायक कहते है—

बिरसा हो भगवान फूँक मुरली तान,
जगम दुगे फसले तोर दुनिया दुख ओढ़े तान
नदी झरना कांदन-गांदन मूँदल चापटा भेल
चहकन तोर पहाड़ जगल हँसी भूँदल गेल।
हावा पानी बदलल गेल गोटा मदुआ भान ॥
ओड़ली भोर नखो रामें न्जूर नखो नाचदें।
दुख बिसरल मुरली नखो चरवाहागन फूँकेर।
परिहागिन जरे पनिना लेले दिल उफान ॥
दुनिया दुखे "दुखा दुख सुन भगवान।
झल-झल झर सूनल निंदे जनम ले-ले जान।

६४ नगपुरिया गीत, पहला एव दोसरा भाग, पृष्ठ ८-१०।

बाजे नगरा मेदर सहनई पाँच शब्दी तान ॥[६५]

नागपुरी के कवि सीमाओं मे बद्ध नही है। उन्हें यह पता रहता है कि संसार मे क्या कुछ हो रहा है। यही कारण है कि हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री रामवृक्ष बेनीपुरी के निधन पर नागपुरी कवि गहन विचलित हो उठे। स्वर्गीय बेनीपुरी के प्रति उनकी यह श्रद्धांजलि उल्लेखनीय है—

अह अमटर रहँ कि विष बूझाल छरी।
आइज सरगवासी भेलयँ रामवृक्ष बेनीपुरी ॥
कला नीति साहित्य
तीनों कर त्रिवेणी—बेनीपुरी।
गढ़लयँ माटी कर मूरति।
से सोना भेगेलक आउर
चमचमाय लागलक—चमचम-चमचम।
नगर नारी आम्रपाली
जेकर कृपा से बटन गेलक
सत-सत साहित्य पुजारी के
आराध्य देवी
जब प्रलयंकर ताडव करत रहे—
विश्व-कर रंग-मंच मे—
रक्त लोलुप युद्ध-नीति—
तब जेकर कलम देलक—
तथागत।

साहित्य लोक में आलोक दव बद—
जे बारलयँ "मशाल",
टिमटिमात ढिबरी ना लागे—
जे फूका से नोंभ जाई,
धुका लागे आउर भी—
धक् धक् धक् धक् धक् धक् धक् धक्
जोर से झोर करी, आउर देवी—
नवा साहित्य राहगीर के—

६५ आदिवासी, २२ मई १९६९, पृष्ठ ७।

चिरतन प्रकाश ।

जेकर बारे बच्चन के वचन है—

बहुत पद्य के गद्य बनाय देलयँ,

आउर बेनीपुरी गद्य के पद्य बनालयँ ।

राष्ट्रकवि जेके कहलयँ ।

कलम है कि जादूकर छड़ी ।

कलम के महान् जादूगर,

भाषा, भावलोक कर सम्राट,

हिन्दी के महान् शब्द-शिल्पी—

आइज नखयँ, जेकर काया के

चिता के आइग—निहाँ निहाँ

साहित्यिक जग्य पूरनाहूति—

के हवन-ज्वाला

आपन में आतमसात्न कइर लेलक ।

हाँ काया के, मगर जेकर जीवन—

जेकर प्रान साहित्य में आतमसात भेगेल—

हमेसा-हमेसा लगिन अछय, अमिट,

अमर भेगेलक—[६६]

ससार-प्रवाह अनादि काल से बहता आ रहा है । पता नही इसमे कितने बह गए और कितने अभी बहेगे—कहना सभव नही । इस परिवर्त्तनशील जगत् मे परिवर्त्तन तो होते ही रहे है, होते भी रहेगे, पर वे इस काल-प्रवाह मे नही बह पाते जो काल के कपाल पर "टीका" लगा देत हैं । इस सत्य को नागपुरी कवि प्रफुल्ल कुमार राय ने पहचाना है—

कहिया-कहिया से ई दुनियाँ बोहाये,

इकर संगे चाँद आउर सुरुज बोहाये,

कतना नछतर आउर तारागन बोहाये,

सरग आउर नरक आकास आउर पताल

इन दिसन तीनों लोक आउर चौदहो भुवन

मनुज आउर, चारो जुग-जुग,

६६ आदिवासी, १७ अक्तूबर, १९६८, पृष्ठ ८ ।

गंगा आउर जमुना माटी आउर सोना,
एके संगे आउर फिर अलगे-अलगे
बोहाये से बोहाये।

...

कतना-कतना इकर में बोहाय गेलयँ।
बोहालक कतना गीत, आउर राग,
काजर, सेंदुर, मूँगा, मोती आउर अंगराग,
आकांक्षा, प्रतीक्षा सोग आउर सन्तोष,
सुख आउर दुख, रोदन आउर विलाप
काम, क्रोध लोभ आउर मोह
विचार आउर कल्पना तृष्णा आउर व्यामोह।

... .

एखन आउर आइज भी बोहायनें कतना—
सबे हाल भी—ई अनजान नगर आउर काया—

... . .

आउरो कतना-कतना बहावयँ।
का जनी-कहिया तक।

.. ..

तो का घर सम्भार व्यर्थ है?
एतना प्रसाधन आउर सिंगार? सब राख कर अम्बार।
इन्द्रिय प्रक्रिया आउर कलाप?
सुख-दुःख आउर सन्ताप?
एकदम बन्धन आउर अपराध—
खाली हाथ आना आउर खाली हाथ जाना?
नहीं एके बात मानब एकरे कर निष्कर्ष—
कोनो नइ इ काल कर कपार में
एको ठो टीका, येन इया येकार कइसनो नइसनो,
दे देउ—तनिकन—बोहाइक आउर बहेक बेरा।[६७]

६७, आदिवासी, १५ मार्च, १९६८, पृष्ठ ५० से ५३।

हमे यह आशा करनी चाहिए कि नागपुरी मे भी ऐसे कवि है और होगे जो काल के कपाल पर निश्चित रूप से टीका लगा सकेंगे और नागपुरी साहित्य को अमरत्व प्रदान करने मे सफल-काम प्रमाणित होगे।

(ख) नागपुरी गद्य में प्रतिफलित छोटानागपुर की सस्कृति

प्रत्येक भाषा के साहित्य मे पद्य की अपेक्षा गद्य-लेखन का प्रारम्भ विलम्ब से होता है। यही स्थिति नागपुरी साहित्य की है, फलत इसका अधिकाश साहित्य पद्य मे सुरक्षित है।

नागपुरी गद्य-लेखन के क्षेत्र मे जो अभाव दिखाई पडता है, उसके कई कारण हैं। छोटानागपुर के गाँवो मे पहले शिक्षा का प्रबन्ध लगभग शून्य-सा था। ऐसी स्थिति मे साहित्यानुरागियो का साहित्य-रचना की ओर ध्यान न देना (विशेषत. गद्य-लेखन की ओर) स्वाभाविक ही है। नागपुरी मे गद्य-लेखन का श्रीगणेश ईसाई मिशनरियो ने किया। जर्मन इवाजेलिकल लुथेरान चर्च मिशन, राँची के रेवरेण्ड पी० इड्नेस इसके सूत्रधार हुए। उन्होने बाइबल के सुसमाचारो का नागपुरी मे अनुवाद प्रस्तुत किया। पहली पुस्तक सन् १९०७ मे "नागपुरिया मे नया नियमकेर पहिला ग्रथ याने मत्ती से लिखल प्रभु यीशु ख्रीष्टकेर सुसमाचार" प्रकाशित हुई। इसी प्रकार कैथलिक मिशन के रेवरेण्ड ए० बून०, रेवरेण्ड पीटर शाति नवरगी, तथा श्री जोहन केरकेट्टा ने ईसाई धर्म सम्बन्धी पुस्तके नागपुरी मे लिखी। राजनीतिक उद्देश्यो से प्रेरित होकर श्री जुलियस तीगा ने 'छोटा नागपुर केर पत्री' तथा प्रो० विमल नाग ने "अग्रेज आदिवासी लडइकर सक्षिप्त बयान' नामक पुस्तिकाएँ प्रकाशित की। हितैषी कार्यालय, चाईबासा के सचालक स्वर्गीय धनीराम बक्शी ने भी श्री गणेश गाँठ कहनी, श्री कृष्णचरित्र, फोगली बुढियाकर कहनी, करम महात्म्य तथा जीतिया कहनी नामक पुस्तिकाओ का प्रकाशन किया।

श्री जयपाल सिंह द्वारा प्रकाशित एव सम्पादित "आदिवासी सकम", श्री राधाकृष्ण द्वारा सम्पादित "आदिवासी", श्री इग्नेस कुजूर द्वारा सम्पादित "अबुआ झारखण्ड" तथा "झारखड समाचार' मे नागपुरी मे लिखित गद्य-रचनाएँ भी यदा-कदा प्रकाशित होती रही है। 'राँची एक्सप्रेस' मे प्रति सप्ताह प्रकाशित होने वाला 'नागपुरी स्तम्भ' भी गद्य मे ही होता है। 'राँची टाइम्स' तथा 'साप्ताहिक हलधर' ने भी ऐसे ही स्तम्भो का प्रकाशन प्रारम्भ किया था, पर यह क्रम बहुत दिनो तक नहीं चल सका।

आकाशवाणी, राँची की स्थापना से नागपुरी मे गद्य-लेखन को काफी बल प्राप्त हुआ, पर आकाशवाणी के द्वारा प्रसारित गद्य-रचनाएँ प्रचार को ध्यान मे रखकर लिखी जाती है, अत उनमे छोटानागपुरी सस्कृति की छाप ढूँढना पाषाण-पुष्प मे सुवास ढूँढने जैसा होगा।

"नागपुरी" (मासिक) तथा "नागपुरीया समाचार" (मासिक समाचर पत्र) दो ऐसे पत्र प्रकाशित हुए, जिनमे नागपुरी गद्य को उभरने का पर्याप्त अवसर मिल रहा था, पर इन पत्रो का प्रकाशन रुक जाने के कारण यह क्रम भी ठप्प पड गया है।

नागपुरी मे गद्य-साहित्य का अभाव है, फिर भी नागपुरी का जो उपलब्ध गद्य-साहित्य है, उसमे प्रतिफलित छोटानागपुर की सस्कृति पर अत्यल्प ही, परन्तु विचार तो किया ही जा सकता है।

उपन्यासों मे किसी क्षेत्र-विशेष की सस्कृति को उभरने का विशेष अवसर प्राप्त होता है। दुर्भाग्यवश अन्य बोलियो की तरह नागपुरी मे भी अब तक कोई उपन्यास नही लिखा गया है। हाँ, नागपुरी मे कुछ मौलिक कहानियाँ अवश्य लिखी गई है, पर नागपुरी कहानीकारो की सख्या भी अधिक नहीं। इन कहानीकारो मे धनीराम बक्शी, स्व० पीटर शाति नवरगी, श्री योगेन्द्र नाथ तिवारी, श्री हरिनन्दन राम, श्री राधाकृष्ण, श्री प्रफुल्ल कुमार राय, श्री नईमउद्दीन मिरदाहा, श्री भुवनेश्वर "अनुज" आदि है। श्री प्रफुल्ल कुमार राय ने "मोनभईर" नामक एक सग्रह का स्वय प्रकाशन किया है, जिसमे गीतो के अलावे उनकी छ: मौलिक कहानियाँ भी हैं। इन सभी लेखको की कहानियो मे छोटानागपुर के हृदय की धडकनें सुनी जा सकती हैं।

श्री हरिनन्दनराम की 'मोही बुझोना, मोयँ बइद मोको नखो"[६८] नामक कहानी नागपुरी की एक प्रतिनिधि कहानी मानी जा सकती है। इस कहानी को पढकर प्रेमचन्द की सरल तथा मुहावरेदार भाषा तथा आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की स्मृति सहसा ही मस्तिष्क मे कौंध उठती है।

"मोही बुझोना, मोयँ बइद मोको नखो" छोटानागपुर के जीवन का यथार्थ चित्र है। दुखना महतो लापुर गाँव का रहनेवाला है। उसके दो बेटे हैं—सोहना और मोहना। सोहना गाँव मे गृहस्थी सँभालता है और मोहना राँची के राँची कॉलिज मे पढता है। गाँव मे सोहना के कई मित्र हैं, जो बराबर उसे उसकाते रहते हैं ताकि वह घर से अपना हिस्सा लेकर अलग हो जाय। सोहना अपने मित्रों के बहकावे में आ जाता है। वह अपनी माँ से कहता है—"मोहना एकला तोहरे कर बेटा हेके। मोय का तोहरे कर बेटा हेंको ? मोहना कर एगो लाल कचिया कर कमाइ न कजाइ। उके बेस तइर खियाल-पियाल करखा। महीना-महीना दू-तीन कोरी कर धान बेड्च के उकर ले रुपीया भेजल करखा। रग-बिरग कर पिंधेक-ओढेक उकर ले देवल करखा। एतना-एतना धान-पान उकरे खातीर जुन उपजुथे। का जानी उ पढऽथे कि पोडऽथे।"

हर घर मे फूट की नीव इसी कमजोर भूमि पर पडती है। सोहना ने अपने

६८ आदिवासी, स्वतत्रता-दिवस अक, १९६२, पृष्ठ ७४ - ७८।

पिताजी के सामने अपनी माँग प्रस्तुत कर दी। परन्तु पिताजी ने साफ इकार कर दिया "मोर रहत मे एगो कनवा-फुचिया तो पाबे नी करबे।"

मोहना का उत्तर है—"तोर जियन मे नी देबे होले तोके आब मोगइये के मोयँ हिस्सा बतरा लेबो।"—मोहना के चरित्र की इस गिरावट पर थोडा भी आश्चर्य नही होना। यह तो आधुनिक सभ्यता की देन है। ऐसे 'सपूतो'' के कारण ही "सयुक्त परिवार" की नीव इस देश मे कब की ही हिल चुकी है।

सोहना ने अपना हिस्सा पा लिया। दो तीन वर्षों मे ही सारी जायदाद स्वाहा हो गई। दोस्तो ने खूब आनन्द उठाया। इस बीच मोहना बी० ए० पास कर लेता है। वह अब एक ऑफिसर है। उसे अच्छा वेतन मिलता है। छुट्टियो मे वह अपने गाँव आया है। सोहना अब अन्य बेरोजगार व्यक्तियो की तरह भूटान जाना चाहता है—रोजी-रोटी की तलाश मे। वह अपने छोटे भाई मोहना के पास आता है—सहायता के लिए। मोहना ने अपने बडे भाई के साथ पहले रूखा व्यवहार किया। पर बाद मे वह पसीज उठता है—सोहना की गिडगिडाहट सुनकर। सोहना अपने सुधर जाने का मोहना को विश्वास दिलाता है। मोहना तो चाहता भी यही था। दोनो आपस मे गले मिलते है और गाँव के लोग एक स्वर से बोल पडते है—'मोहना! बेटा होवे तो तोर नियर बेटा होवे।"

सोहना के पतन की पृष्ठभूमि मे उसका काहिल, नशेबाज, पत्नी-भक्त तथा कान का कच्चा होना है। इन सामान्य अवगुणो के कारण छोटानागपुर के प्रत्येक व्यक्ति का जीवन दुःखपूर्ण हो जाता है। नशेबाजी के कारण मनुष्य काहिल हो ही जाता है। सामान्यत यहाँ की आदिवासी लडकियाँ रह-रहकर अपने मायके भाग जाती है, जिनके पीछे पतिदेवो को बार-बार दौडना पडता है। छोटानागपुर की इन विशेषताओ के जीवत चित्रण की दृष्टि से यह कहानी अत्यन्त सफल मानी जा सकती है। अशिक्षा के अधकार से निकलकर शिक्षा के प्रकाश की ओर यहाँ का प्रत्येक मोहना बढना चाहता है, पर सोहना जैसे लोग-रास्ते के काँटे बन जाते है। द्वन्द्व की यह स्थिति इस कहानी मे कौशल के साथ उभारी गई है।

छोटानागपुर के लोग आज भी अधविश्वास तथा रूढिवादिता के शिकार है। श्री योगेन्द्रनाथ तिवारी ने अपनी कहानी "भूतक् भूत"[६६] मे ऐसी ही एक घटना को प्रस्तुत किया है। मधेया की भैस बीमार है। उसके इलाज के लिए डाक्टर नही, ओझा बुलाया जाता है। ओझा मत्रोच्चारण करता है—"घर घर, के घर, हम घर, डाइन बाँधो, कौन-कौन बाँधो, छीन-छीन बाँधो, के बाँधे, गुरु बाँधे, गुरु मत्रे हम बाँधे, दोहाई गउरा पारवती इसर महादेव के।"

पर भैस ठीक नही होती। दूसरे दिन ब्लॉक से डॉक्टर आता है। डॉक्टर

६६ आदिवासी, १६ अगस्त, १९६४, पृष्ठ ५०-५१।

की दवा से भैंस की हालत सुधरने लगी और सात दिनो के अन्दर भैंस स्वस्थ हो गई। इस चमत्कार को देखकर गाँव के लोगो ने कहा—"डॉक्टर तो हमरे केर भूतो केर भूत बइन गेलक।"

अब नागपुरी मे शब्दचित्र भी लिखे जाने लगे हैं। नागपुरी का पहला शब्द-चित्र "चउधरी" दादा 'आदिवासी' (१३ अगस्त १९७०) मे प्रकाशित हुआ, जिसके लेखक श्रवण कुमार गोस्वामी हैं।

नागपुरी मे लिखित निबन्धो की सख्या अधिक नही। परन्तु विविध विषयो पर नागपुरी में अल्प ही पर काफी अच्छे निबन्ध लिखे गए है, जो निम्नलिखित कोटियो मे रखे जा सकते हैं—

(क) परिचयात्मक निबन्ध

(ख) सस्मरणात्मक निबन्ध

(ग) समीक्षात्मक निबन्ध

(घ) सामयिक निबन्ध

इन निबन्धो के अध्ययन से छोटानागपुर मे हो रहे परिवर्तन, फैलती हुई नवचेतना, सभ्यता तथा सस्कृति का आसानी से परिचय प्राप्त किया जा सकता है। श्री शिवावतार चौधरी ने अपने "स्वामी विवेकानन्द" नामक निबन्ध मे एक स्थान पर लिखा है—"इतिहास मे पढ़ ही कि सिकन्दर, सीजर, चगेज, तैमूर, नेपोलियन ऐसन योद्धागण देश के जीतेक वास्ते सेना साइज के निकलते रहे। हमरेक देखकर इ किसिम कर दिग्विजय नई होलक। मुदा विवेकानन्द कर अमेरिका यात्रा ऐसन दिग्विजयी रहे जेकर मिसाल दुनिया मे नखे। एक गेरुआ वस्त्र पहइन के वेद-उपनिषद कर हथियार लेके एकले स्वामी जी चललयँ उ देश मे जहाँ कर आदमी हिन्दू के असभ्य समझत रहँ।"[७०]

छोटानागपुर के इतिहास मे नागवशी राजा दुर्जनशाल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। तत्कालीन मुगल सम्राट् जहाँगीर ने स्वय अपनी "तुजक-इ-जहाँगीरी" में दुर्जन-शाल का उल्लेख किया है। अब तो दुर्जनशाल के सम्बन्ध मे अनेक प्रकार की बातें सुनने मे आती है, जिनमे से अधिकाश "किंवदन्ती" जैसी प्रतीत होती हैं। श्री योगेन्द्रनाथ तिवारी ने अपने निबन्ध "नवरत्नगढ़" में दुर्जनशाल के सम्बन्ध मे लिखा है, वह ध्यान देने योग्य है—"इतिहास मे इसन लिखल है कि जे घरी भारत मे जहाँगीर बादशाह रहँ से घरी ऊ इब्राहीम खाँ के सन् १६१६ मे छोटानागपुर भेजले रहँ। से घरी छोटानागपुर के राजा रहँ, दुर्जन शाल। जहाँगीर बादशाह के राइज भेर बोतना लोभ नइ रहे जतना धन भेर रहे। दुरजनशाल महाराज केकरो अधीन नइ रहे। उनकर राइज-पाट सब आपन आउर कुल कारखाना आपन रहे। सेवहो

७० आदिवासी, ६ मार्च, १९६८, पृष्ठ ५।

मालगुजारीओ नइ देत रहैं। महाराज के आपन रइअत बनावेले आउर मालगुजारी लेवेले बादशाह जहाँगीर छोटानागपुर में इब्राहीम खां के भेजलैं। इब्राहीम खाँ आउर दुरंजन साल से लडाई भेलक मगर लडाई मे महाराज ठठे नइ पारलैं। इब्राहीम खाँ उनके कैद कर लेलक। ई बात सन् १६१६ ईस्वी केर हेके। उनकेहे कैद करके नइ लेगलक बलके आउरो-आउरो राजामन के सग लेले गेलक। सेकर सगे २३ हाथी आउर ढेइर हीरा दिल्ली भेजलक। राजा आउर महाराज के ग्वालियर केर किला मे १२ बरीस तक कैद राखल गेलक। महाराजा हीरा पारखी रहैं। बादशाह जहाँगीर के हीरा परखुवाएक रहे। ढेइर केउ के बोलालैं मगर केउ सुपट पारीख करे नइ पारलैं। तब उनके छोटानागपुर केर महाराज कर खेयाल भेलक आउर उनके बोलाल गेलक। ऊ आए के सुपट ठीके ठीक हीरा के परीख लेलैं। इकर मे बादशाह उनकर से अइत खुश भेलैं तब उनके आउर उनकर सगी राजामन के कैद से छोइड देलैं। सग-सगे "साहदेव" केर पदवी भी देलैं। इकर आगु जतना महाराज रहैं सेमनकेर साहदेव पदवी नखे।"[७१]

छोटानागपुर मे शक्ति की उपासना अत्यधिक प्रचलित है। ऐसा लगता है कि शक्ति की उपासना की परम्परा छोटानागपुर मे अनन्तकाल से चली आ रही है। यही कारण है कि नागपुरी गीतो मे "शाक्त-भावना" का प्रभाव प्रचुर मात्रा मे दिखलाई पडता है। इतना ही नही छोटानागपुर की जो सास्कृतिक विरासतें आज सुरक्षित हैं, वे भी इसकी पुष्टि करती हैं कि "शक्ति की उपासना" इस क्षेत्र मे अत्यन्त प्राचीन है। इस विषय पर श्री भवभूति मिश्र ने अपने "नागपुरी लोकगीतो मे शाक्त-भावना" नामक निबन्ध मे विचार किया है, जिसका एक महत्त्वपूर्ण अश नीचे उद्धरित है—

"राँची, जिलाकेर टाँगीनाथ नांवक ठाँव मे लोहा केर बडका ठो त्रिसूल एखनो हले है उकर मे एखनो तक चीती नई लाईग है। उहाँ केर लिखल के एखनो तक आदमी पढे नइ पाइर हैं। पता नखे कि कोन जुगकेर शक्ति पूजाकेर बात के इआइद करवाए ले ई जीत के चिनहा आपन ठीक आउर असल इतिहास बताथे। ठाँवे-ठाँव मदिल आउर देवी भडार केर इहाँ कमी नखे। माटी केर पीडा बनाए के सेंदुर केर टीका खीच के इहाँ केर आदमी मन देवीकेर पूजा कइर लेवैंना आउर वोहो देवी मण्डा कहाएला। अइसन बुझाएला कि ई प्रदेश मे पहिले-पहिल जेमन आलैं सेमन के आपन जीएक-खाएक केर उपाए मिलेक मे बडा दीक-दीक आउर असुविम्ना से लडेक भेलक होई। आउर ई लडाई जाइत-जाइत केर लडाई नही होएके प्रकृति केर देल हालत से उलटेक मे प्रकृति से भेलक होई। इमन हालत मे वेमतलब केर शक्ति नास से निरबल होएके आदमी मन बल पावेले शक्ति केर पूजा सुरु करलैं हाई। सेई ले आइज तक आदमी

७१ नागपुरी, जुलाई १९६१, पृष्ठ १५।

मन बोहे डहर मे चलते आवयँ आउर नाकि केर पूजा कोनो नी कोनो रूप मे इहाँ चलतेहे है।'[७२]

नागपुरी के सामयिक निबन्धों में देश की प्रगति तथा बदलती हुई परिस्थितियों का परिचय यहाँ के लोगों को प्राप्त होता ही रहता है। स्व० धनीराम बक्शी ने अपने "नावा राइज" नामक निबन्ध में लोगों को गणतंत्र भारत की जानकारी प्रदान की है। इस लेख की कुछ पंक्तियाँ नीचे प्रस्तुत हैं—

"इ बात जानल गेल होई कि अंग्रेजी राइज आब देस में गेलक और नावा राइज चालू होइल है। यदि जानल नहि होय तो जानल जाय जे एहो सा० २६ जनवरी से नावा राइज चलत है। ओहे दिन से नावा नियम (विधान याने कानून) चलत है। इ नियम गोटे भारत (हिन्दुस्तान) कर लागिन है। इ विधान में पुरे ध्यान देवेक बात नीचे लिखल जात है :—

(१) धर्म, कुल जाति, लिंग (स्त्री-पुरुष कर भेद) और जनमभुई कर लगिन कुछ भेदभाव नहि करल जाई। (धारा १५)

(२) आपन आपन विशेष भाषा, लिपि आहे संस्कृति के बनाय राखेक सबकर अधिकार है। (धारा २९)

(३) आपन-आपन धर्म आहे भाषाकर आधार से शिक्षा-संस्था (विद्यालय या स्कूल) खोइल के चलाल जाय सकेला। राइज इकर से सहायता देवेक में इ आधार पर भेद नहि करइ सकेला कि उ संस्था धर्म और भाषा में आधारित अल्प-संख्यक कर प्रबन्ध में है। (धारा ३०)'[७३]

नागपुरी के निबन्धकारों में स्व० धनीराम बक्शी, स्व० पीटर शांति नवरंगी, श्री योगेन्द्रनाथ तिवारी, श्री शिवावतार चौधरी, श्री नईम उद्दीन मिरदाहा प्रो० विश्वेश्वर प्रसाद "केशरी" श्री भुवनेश्वर 'अनुज', श्री छुन्नूलाल मल्लिका प्रसाद नाथ साहदेव श्री महादेव उरांव, श्री विनय कुमार तिवारी तथा श्री प्रफुल्ल कुमार राय के नाम उल्लेखनीय हैं।

श्री इग्नेस कुजूर द्वारा सम्पादित "अबुआ झारखण्ड" (साप्ताहिक) में "दोना-दोनी" नामक एक स्तम्भ प्रकाशित किया जाता था, जिसमें समसामयिक गतिविधियों पर व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ "डुठु" के द्वारा लिखी जाती थी। इस स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचनाओं में सरायकेला खरसावाँ गोलीकांड, जनता की सरकार, तकली सिखाई, छोटानागपुर का औद्योगीकरण, राँची का ग्रीष्मकालीन सचिवालय तथा लीडर के प्रकार आदि अनेक विषयों पर पैनी शैली में चुभते हुए व्यंग्य प्रस्तुत किए गए।

७२. नागपुरी, मार्च १९६१, पृष्ठ ५।
७३. वहीं, खण्ड २ (१९५०), पृष्ठ ३-४।

सरकार की ओर से यह बराबर कहा जाता रहा है कि छोटानागपुर एक पहाडी इलाका है, अत यहाँ सिचाई की कोई व्यवस्था नही की जा सकती। इस सम्बन्ध मे "ढुठू" ने जो छीटे कसे हैं, वे अविस्मरणीय है—

"थोडे दिन से माने ढेरे बरस से कहल जाथे कि आदमी-मन दुनिया मे वगरा होते जाथैं और जमीन कमती। और हमरेन केर झारखण्ड मे तो कहल जायला कि सोबखेत पत्थर चट्टान मनक बीच मे आहें, मुलकें ऊँच नीच आहे, न नया खेत वगरा बाईन सकी, न वरखा छोड कोनो किसिस पटावन होवे पारी। तिरिल आश्रम से, जहाँ हमरे मनक सरकार भलाई करेक पहिल-पहिल वडका फैक्टरी खोललै, उहाँ से दुर्विन लगाल ने हमरेन केर मुलुक थोडेक दिसेला। टेबोघाट और नेतरहाट और राँची केर मु डली गिरजा केर ऊपर बैसल सेहूँ रीरें अगर चाहू तो देखे पारवा कि हमरेन केर मुलुक कैसन गढा, डीपा, ठेंका, ठोढें और झाँगड-झोगोड आहे। अशोक राजा दिने बिहार मे रहवैया मनहूँ एकदम बुझकहे नी पारैना और साईद सेहेले आन मुलुक आदमी मन आईज काईल कहैना कि इ झारखण्ड तो अजीब ऊबड-खावड मुलुक है हिया तो पटावन होएहे नी सकी। पटावन केर दुईये ठो कायदा है एक बरखा राम भरोसे, दूसरा माईनर इरिगेशन, सीता भरोसे।

ऐसन कलीफोर्निया से भी खराव हमरेन कर मुलुक। मोके हमर प्रधान मत्री से अर्जी करेक रग लागेल चाईबासा मे अटोम बोम्ब गिराएक एक बदली राँची टु गरी मे गिराल जाओक एक तो टु गरी सम भेवी और राँची तलाव भी भराई। छहक पोहुची तो महात्मा गाधी रोड भी सफा भे जाई। एक मुट्ठी बोम्ब से केतना खेत बाईन जाई।"[७४]

श्री इग्नेस कुजूर ने ही इधर "झारखड समाचार" नामक एक साप्ताहिक का प्रकाशन प्रारम्भ किया है, जिसमे "दोना-दोनी" जैसा ही एक स्तम्भ "बुधुवा का लूर" रखा गया है। इस स्तम्भ का प्रकाशन नागपुरी मे ही होता है। इसकी रचनाएँ भी व्यग्य-प्रधान होती हैं।

समय-समय पर विभिन्न सस्थाओ तथा सरकार द्वारा नागपुरी मे कुछ प्रचार-पत्र प्रकाशित किये जा रहे हैं, जिनकी सहायता से छोटानागपुर के बदलते हुए जीवन का परिचय प्राप्त किया जा सकता है। राँची का विकास जब एक बडे नगर के रूप मे प्रारभ हो गया, तो यहाँ की भोली-भाली आदिवासी युवतियो की इज्जत खतरे मे पडने लग गई। इस समस्या के समाधान के लिए यहाँ के लोगो ने कई जन-सभाएँ, की और प्रस्ताव पारित किए और उन्हे कार्यान्वित भी किया। नीचे ऐसे ही एक प्रचार-पत्र की प्रतिलिपि प्रस्तुत है—

"उराँव मु डा केर जाति सभा।

७४ अबुआ झारखण्ड, १८ अप्रैल, १९४८, पृष्ठ ३।

तारीख ५ जुलाई १९३६ ई० आनेवाला एतवार के हेसल चाह बगान (बिड़ला बोडिंग के सामने) १२ बजे दिन से मीटीग होई। सब उरांव-मुंडा भाईमन एक रोज काम हरज करके जरूर आऊ और अपना जातिकेर इज्जत बचाउ।

भाईमन !

शहर मे हमरेकर बहुबेटी के बदमास-मन खराब कर रहल हैं। तौ भी हमरे चुपचाप हेई ! ! धीक्कार ऐसन जीना ! ! ! हमनी के बहुबेटी केर इज्जत बचावेक बदे सब तरह से उपाय करेक चाही। नही तो हमरे मनक कोई मोल नई रही—

इ-बदे-इ मिटीग करल जात है, जरूर से जरूर सब कोई आऊ। कोई खास आदमी इया गाँव केर सभा मे कोई निंदा सिकायत नई होई और जातिभर के बेटी बहुमन कर इज्जत बचावेक सलाह करल जाई।

निवेदक —

भन्डरा उरांव, सुकरा उरांव, ठेवले उरांव, महली राम, महादेव उरांव-रांची। रीझुराम-मदुकम, तेलगा मुन्डा, डहरु उरांव-हेसल, मधना हवलदार, एतवा पाहन-चडरी, मुकुल पाहन-बडागाई, रामा राम-सीरम, कीतु उरांव-गुटोली, बीगलाहा मुन्डा, रतीया उरांव, सुकरा भगत-नगडा टोली, महादेव उरांव-करम टोली, मादी पहान-पन्डरा, टुनीया पाहन-डगरा टोली।

बन्धु विलास प्रेस रांची।"

नागपुरी मे प्रकाशित मासिक समाचार-पत्र नागपुरिया समाचार मे कुछ ऐसी रचनाएँ भी प्रकाशित होती थी, जिनमे यहाँ की समस्याओ की झलक मिल जाती है। छोटानागपुर मे यहाँ के निवासियो की अब तक जैसी उपेक्षा होती रही है, वह सर्वविदित है। "छोटानागपुर मे रइह के नागपुरीयामन विदेशी" शीर्षक एक रचना में इस प्रश्न पर विचार किया गया है। इस निबंध का एक अंश इस प्रकार है—

"कोई आपन हक वास्ते लडेक तेइयार आहय तो काले नागपुरिया भाई मने आपन हक के नी माडग के चुप रही। हमारे ठीन कोन तकत नखे, जे सब दुसर कोई ठीन आहे। हामरे के चाही कि आफिस चाहे जहाँ भी रही आपन भाषा मे बात-चीत करी, काले हामरे लजाय के या डराय के आपने भाईमन से हिन्दी मे बोली जे नागपुरिया बोलेक जाने। हामरे केर तकलीफ के हामरेहें आपस मे मगवद्ध होइके दूर कइर सकीला। केउ दुसर कोई हामरे के बनाइक ने नी आवी। आब भी अगर हामरे नी समझ्य हले छोटानागपुर मे हामरे के पुछेक वाला केऊ नी रही आउर हामरे हिया रइहके विदेशी जइसन बनल रहब।"[७५]

छोटानागपुर तथा उडीसा-मध्य प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों की सम्पर्क-भाषा

७५ नागपुरिया समाचार, अप्रैल, १९६८, पृष्ठ १।

होकर भी नागपुरी अब तक उपेक्षित रही थी, पर अब ऐसे सकेत मिलने लगे है, जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि नागपुरी भाषा तथा साहित्य के सम्बन्ध मे जो भ्रातियाँ थी, वे धीरे-धीरे दूर होती जा रही है और नागपुरी की वास्तविक प्रकृति प्रकट होने लगी है। राँची विश्वविद्यालय ने नागपुरी को आधुनिक भारतीय भाषा के रूप मे पाठ्य-क्रम मे सम्मिलित कर इसे हाल ही मे अपनी मान्यता प्रदान की है। सन् १९७३ मे तथा तत्पश्चात् होनेवाली आई० ए०, आई० एस-सी० तथा आई० कॉम की परीक्षाओ मे सम्मिलित होनेवाले नागपुरी-भाषी परीक्षार्थी अब अपनी मातृभाषा नागपुरी तथा उसके साहित्य का अध्ययन कर परीक्षा दे सकते है।

यह स्पष्ट है कि यहाँ के निवासी अपनी भाषा नागपुरी का महत्त्व अब अच्छी तरह समझने लगे हैं और वे अपने साहित्य, सस्कृति तथा जीवन को एक नूतन रूप प्रदान करने के लिए अपने-आपको तैयार कर रहे है। यह कहने की आवश्यकता नही कि इस नव-चेतना को प्रसारित करने मे नागपुरी साहित्य विशिष्ट भूमिका निभा रहा है।

६

परिशिष्ट

(क) नागपुरी में प्रकाशित पुस्तकों की सूची

१ आदि झूमर संगीत—सकलनकर्ता-राजा बहादुर श्री उपेन्द्रनाथ सिंहदेव। प्रकाशक रघुवर प्रकाशन, राँची। वर्ष संवत् २०१३ (१९५६ ई०) विषय झूमर सग्रह। लिपि देवनागरी। मूल्य तीन रुपये।

२. आदिवासी नागपुरिया संगीत—सकलनकर्त्ता एतवा उराँव। प्रकाशक किशुन भगत, गाँव पुरियो, पोस्ट रौनू, राँची। वर्ष १९५१ लिपि देवनागरी। मूल्य बारह आने।

३. ईसु-चरित-चिन्तामइन—लेखक पीटर शाति नवरगी, एस जे०। प्रकाशक · काथलिक मिशन, राँची। वर्ष १९६४। विषय जीवन-चरित। लिपि देवनागरी। कीमत ढाई रुपये।

४ उलाहना—लेखक सहनी उपेन्द्र पाल "नहन"। प्रकाशक सहनी उपेन्द्र-पाल "नहन"। गाँव तारागुटू, पोस्ट गुनिया (टोटो), जिला राँची। वर्ष १९५७। विषय काव्य। लिपि - देवनागरी। कीमत दस आने।

५ ए सदानी रीडर—लेखक : पीटर शाति नवरंगी, एस० जे०। प्रकाशक : पीटर शाति नवरगी, मनरेजा हाउस, राँची। वर्ष १९५७। विषय : सग्रह। लिपि · देवनागरी। मूल्य · एक रुपया आठ आना।

६ ए सिम्पल सदानी ग्रामर—लेखक-पीटर शाति नवरंगी, एस० जे०। प्रकाशक दि धार्मिक साहित्य समिति बुकडिपो, पो० बा०-२, राँची। वर्ष-१९५६। विषय-व्याकरण। लिपि-देवनागरी तथा रोमन। मूल्य-१।)

७. एतवार केर पाठ—अनुवादक फादर जोन केरकेट्टा। प्रकाशक · काथलिक मिशन, सम्बलपुर। वर्ष · १९६२। विषय - धार्मिक साहित्य। लिपि . देवनागरी। मूल्य · अमुद्रित।

८ अंग्रेज-आदिवासी लड़इकर सक्षिप्त बयान—लेखक · प्रो० विमल नाग, एम० एन० सी०। प्रकाशक · प्रो० विमल नाग, एम० एन० सी०, सत एंथोनी'ज कॉलेज,

शिलाग, आसाम। वर्ष-१९५९। विषय, इतिहास। लिपि, देवनागरी। मूल्य, मूल्य, पाँच आने।

९. कार्थलिक धर्म की सादरी प्रश्नोत्तरी—लेखक-०। प्रकाशक, हरमन वेस्टरमेन, सबलपुर। वर्ष, १९५९। विषय, धर्म संबधी प्रश्नोत्तर। लिपि, देवनागरी। मूल्य अमुद्रित।

१० किसानी गीत—रचयिता-श्री गोविन्द साव। प्रकाशक : श्री गोविन्द सावग्राम तथा पोस्ट, पिठोरिया, जिला, राँची। वर्ष-१९५९। विषय • गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य अढाई आने।

११ गीत नागपुरिया झूमर—संग्रहकर्त्ता एव प्रकाशक-रामहटल राम, कचहरी कम्पाउंड, राँची। वर्ष-१९५५। लिपि देवनागरी। मूल्य अमुद्रित।

१२ छोटा नागपुरकेर पुत्री—लेखक, जूलियस तीगा। प्रकाशक, जूलियस तीगा राँची। वर्ष १९४१। विषय निबंध। लिपि देवनागरी। मूल्य डेढ आने।

१३. छोटानागपुरी पचरत्न—रचयिता-रामूदास देवघरिया। प्रकाशक-रामूदास देवघरिया, ग्राम तथा डाकघर सुकुरहुटु (काँके), जिला राँची। वर्ष अमुद्रित। विषय गीत। लिपि देवनागरी। मूल्य चार आने।

१४ जनी झूमँर और मर्दानी झूमँर—लेखक, वसुदेवसिंह। संग्रहकर्त्ता : कुमार उदित नारायणसिंह देव। प्रकाशक हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : अमुद्रित। विषय • झूमर-संग्रह। लिपि : देवनागरी। मूल्य सैंतीस नये पैसे।

१५ जीतिया कहानी—लेखक छोटानागपुरी। प्रकाशक हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : १९४७। विषय कहानी। लिपि देवनागरी। मूल्य तीन आने।

१६ झारखण्ड मे साग-सब्जी केर खेती—लेखक हरमन लकडा, बी० ए०। प्रकाशक हरमन लकडा बी०ए०, राँची। वर्ष अमुद्रित। विषय कृषि। लिपि : देवनागरी। मूल्य . अमुद्रित।

१७. टूसू-संगीत—रचयिता कविराज। प्रकाशक . कविराज, ग्राम, वारेडिह। डाकघर, लान्दुपडिह। थाना, सोनाहातु। जिला राँची। वर्ष • १९६४। विषय : गीत। लिपि • देवनागरी। मूल्य बारह पैसे।

१८ डमकच गीत—संग्रहकर्त्ता • श्री धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष—तृतीय संस्करण १९५७। विषय गीत। लिपि देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

१९ तेतर केर छाँहें—लेखक • श्री विष्णुदत्त साहु। प्रकाशक जन सम्पर्क विभाग, विहार सरकार, पटना। वर्ष १९५८। विषय, नाट्य-संग्रह। लिपि देवनागरी। मूल्य • अमुद्रित।

२० देशी झूमर (पहला भाग)—रचयिता। बडाईक महादेवसिंह। सम्पादक :

श्री घनीराम बक्शी। वर्ष : अमुद्रित। विषय : झूमर। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

२१ देशी झूमर (दूसरा भाग)—सम्पादक, श्री घनीराम बक्शी। प्रकाशक, हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : दूसरा संस्करण, १९४९। विषय : झूमर। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

२२. देशी झूमर (तीसरा भाग)—सम्पादक : श्री घनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : दूसरा संस्करण १९५०। विषय : झूमर। लिपि, देवनागरी। मूल्य, तीन आने।

२३. देशी झूमर (चौथा भाग)—संग्रहकर्त्ता श्री घनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : अमुद्रित। विषय : झूमर। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

२४ देशी व नागपुरिया झूमर (पाँचवाँ भाग)—लेखक : अमुद्रित। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : १९३६। विषय : झूमर। लिपि : देवनागरी। मूल्य : एक आना।

२५ देशी झूमर (छठा भाग)—सम्पादक : श्री घनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : दूसरा संस्करण, १९५२। विषय : झूमर। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

२६ देशी झूमर (सातवाँ भाग)—संग्रहकर्त्ता श्री घनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : १९५३। विषय : झूमर। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

२७ देशी झूमर (आठवाँ भाग)—सम्पादक : घनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : अमुद्रित। विषय : झूमर। लिपि : देवनागरी, मूल्य, तीन आने।

२८ द्वादश बीजनी हृदय रंजनी—रचयिता : डोमन राम। प्रकाशक : डोमन राम। ग्राम : मनातू, डाकघर, कमडे, जिला, रांची। वर्ष : अमुद्रित। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : पचास नये पैसे।

२९. देहाती गाने—लेखक बाबू श्यामलाल केरकेट्टा। प्रकाशक : स्वयं। गाँव इन्नादिगी, पो० पिठोरिया, राँची। वर्ष : १९५०। लिपि : देवनागरी। मूल्य : चार आने।

३० नागपुरिया गीतयमी—लेखक : श्री लक्ष्मणराम गोप। प्रकाशक : श्री लक्ष्मणराम गोप. पो० टुमना, रांची। वर्ष : १९६०। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : पचास पैसे।

३१. नागपुरिया भजन—लेखक : अमुद्रित। प्रकाशक : एस०पी०जी० मिशन,

रांची । वर्ष : तीसरी छपाई, १९३२ । विषय गीत । लिपि देवनागरी । मूल्य चार आने ।

३२ नागपुरिया डमकच गीत—सग्रहकर्त्ता श्री कुमार उदित नारायण देव । प्रकाशक हितैषी कार्यालय, चाईवासा । वर्ष अमुद्रित । विषय गीत । लिपि देवनागरी । मूल्य : चार आना ।

३३ नागपुरिया जनी झूमैर—सग्रहकर्त्ता श्री कुमार उदित नारायण देव । प्रकाशक . हितैषी कार्यालय, चाईबासा । वर्ष १९५७ । विषय झूमर । लिपि देवनागरी । मूल्य . सैतीस नये पैसे ।

३४ नागपुरीया सगीत माधुरी—रचयिता श्री दिवाकर मणि पाठक "मधुप" । प्रकाशक श्री दिवाकर मणि पाठक "मधुप", ग्राम, हापामुनि, पोस्ट गम्हरिया, जिला, रांची । वर्ष : १९५८ । विषय गीत । लिपि । देवनागरी । मूल्य . बारह आने ।

३५ नागपुरिया डमकच छत्तीस रग—रचयिता . शेख अलीजान । प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा : वर्ष अमुद्रित । विषय गीत । लिपि देवनागरी । मूल्य तीन आने ।

३६ नारद मोह लीला—लेखक श्री सहनी उपेन्द्र पाल "नहन" । प्रकाशक हितैषी कार्यालय, चाईबासा । वर्ष १९५६ । विषय सगीत रूपक । लिपि देवनागरी । मूल्य पांच आने ।

३७ नगपुरीया गीत । रचयिता शेख अलीजान । प्रकाशक हितैषी कार्यालय, चाईवासा । वर्ष . अमुद्रित । विषय गीत । लिपि देवनागरी । मूल्य तीन आने ।

३८. नगपुरिया सगीत-सुमन-माला—रचयिता श्री धनीराम बक्शी । प्रकाशक हितैषी कार्यालय चाईबासा । वर्ष १९५२ । विषय गीत । लिपि देवनागरी । मूल्य तीन आने ।

३९ नगपुरिया गीत पचरगी—सग्रहकर्त्ता श्री अक्ष्मण सिह वडाईक । प्रकाशक हितैषी कार्यालय, चाईवासा । वर्ष १९५१ । विषय गीत । लिपि देवनागरी । मूल्य . तीन आने ।

४०. नगपुरिया जेबी सगीत—सग्रहकर्त्ता : श्री धनीराम वक्शी । प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईवासा । वर्ष ० । विषय . गीत । लिपि देवनागरी । मूल्य . आठ आने ।

४१ नगपुरिया बियाह गीत—सकलन कर्त्ता एक झारखण्डी । वर्ष . द्वितीय सस्करण, १९५० । विषय विवाह गीत । लिपि देवनागरी । मूल्य तीन आने ।

४२ नागपुरी गीत पुस्तक—रचयिता घासीराम । प्रकाशक हुलास राम, गांव, करकट, पोस्ट, चोरेया, जिला, रांची । वर्ष १९५६ । विषय गीत । लिपि : देव नागरी । मूल्य बारह आने ।

४३ नगपुरिया करम संगीत (पहला भाग)—संग्रह कर्त्ता : श्री धनीराम बक्शी। प्रकाशक हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : अमुद्रित। विषय : करम गीत लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

४४. नगपुरिया करम संगीत (दूसरा भाग)। संग्रहकर्त्ता : अब्दुल हमीद। सम्पादक · धनीराम बक्शी। प्रकाशक हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : अमुद्रित। विषय, करम गीत। लिपि · देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

४५. नगपुरिया करम संगीत (तीसरा भाग)—सम्पादक . धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय : चाईबासा। लिपि . देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

४६ नगपुरिया करम संगीत (चौथा भाग)—संग्रहकर्त्ता श्री माकुरुटी जी। सम्पादक : श्री धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : १९५८। विषय · करम तथा जीतिया गीत। लिपि . देवनागरी। मूल्य · तीन आने।

४७ नगपुरिया फगुआ गीत (पहला भाग)—संग्रहकर्त्ता श्री धनीराम बक्शी प्रकाशक हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष दूसरा संस्करण, १९५०। विषय · फगुआ गीत। लिपि देवनागरी। मूल्य · तीन आने।

४८. नगपुरिया फगुआ गीत (दूसरा भाग)। रचयिता श्री धनीराम बक्शी। प्रकाशक हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष दूसरा संस्करण, १९५०। विषय · फगुआ गीत। लिपि . देवनागरी। मूल्य · तीन आने।

४९. फगुआ गीत—संग्रहकर्त्ता : शेख अलीजान (तीसरा भाग)। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष . अमुद्रित। विषय . फगुआ गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य . तीन आने।

५० फगुआ गीत (चौथा भाग)—संग्रहकर्त्ता, श्री माकुरुटी। सम्पादक, श्री धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : १९६१। विषय, फगुआ गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य · बीस नये पैसे।

५१ नल दमयन्ती चरित। लेखक—स्व० दृगपाल देवघरिया। प्रकाशक · "आदिवासी" साप्ताहिक में धारावाहिक रूप से प्रकाशित। वर्ष : १९६१। विषय : चरित काव्य। लिपि : देवनागरी।

५२ नोट्स ऑन दि गँवारी डायलेक्ट आफ लोहरदगा छोटानागपुर—लेखक : रेव० ई० एच० व्हिटली, एन०पी०जी० मिशन, राँची। प्रकाशक : बंगाल सेक्रेटेरियट प्रेस, कलकत्ता। वर्ष . १८९६। विषय व्याकरण। लिपि : रोमन। मूल्य : छ आने।

विशेष—इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण "नोट्स ऑन नागपुरिया-हिन्दी" के नाम से सन् १९२४ ई० में प्रकाशित हुआ। इसका प्रकाशन तत्कालीन बिहार एण्ड उड़ीसा गवर्नमेंट प्रेस पटने के द्वारा किया गया था। मूल्य : अमुद्रित।

५३ नागपुरी फाग शतक—लेखक : घासीराम । प्रकाशक गोकुलनाथ शाहदेव, जमीदार, मासमानो ठाकुर गाँव रांची । वर्ष सवत १९६८ (सन् १९११) विषय गीत । लिपि देवनागरी । मूल्य : अमुद्रित ।

५४ नागपूरिया मे लिखिल नया नियमकेर पहिला ग्रन्थ याने मत्ती से लिखल प्रभु यीशु ख्रीष्टकेर सुसमाचार—अनुवादक अमुद्रित । प्रकाशक · दि ब्रिटिश एण्ड फारेन बाइबल सोसाइटी, कलकत्ता । (द्वितीय सस्करण) । वर्ष १९०८ । विषय धर्म । लिपि कैथी । मूल्य एक पैसा ।

५५ "नागपूरिया मे नया नियमकेर दोसर ग्रन्थ याने मारक से लिखल प्रभु यीशु खीष्टकेर सुसमाचार"—अनुवादक · अमुद्रित । प्रकाशक दि ब्रिटिश एण्ड फारेन बाइबल सोसाइटी, कलकत्ता । वर्ष : १९०८ । विषय धर्म । लिपि : कैथी । मूल्य : एक पैसा ।

५६ "नागपूरिया मे नया नियमकेर चौथा ग्रन्थ याने योहन से लिखिल प्रभु यीशु खीष्टकेर सुसमाचार"—अनुवादक अमुद्रित । प्रकाशक · दि ब्रटिश एण्ड फारेन बाइबल सोसाइटी, कलकत्ता । वर्ष १९०९ । विषय · धर्म । लिपि कैथी । मूल्य एक पैसा ।

५७ "नागपूरिया मे नया नियमकेर पाँचवाँ ग्रन्थ याने लूक से लिखल प्रेरितमनक काम"—अनुवादक अमुद्रित । प्रकाशक दि ब्रिटिश एण्ड फारेन बाइबल सोसाइटी, कलकत्ता । वर्ष १९१२ । विषय धर्म । लिपि : कैथी । मूल्य : दो पैसे ।

५८ नगपुरिया गीत, पहला एव दूसरा भाग—रचयिता श्री नईम उद्दीन मिरदाहा । प्रकाशक · श्री नईम उद्दीन मिरदाहा, मौजा : कादोजोरा पोस्ट . हेठु घाघरा, जिला · रांची । वर्ष १९५९ । विषय गीत । लिपि देवनागरी । मूल्य सैंतीस नये पैसे ।

५९ "नगपुरिया गीत" तीसरा : चौथा भाग—रचयिता श्री नईम उद्दीन मिरदाहा । प्रकाशक श्री नईम उद्दीन मिरदाहा, मौजा · कादोजोरा, पोस्ट : हुठु घाघरा, जिला रांची । वर्ष अमुद्रित । विषय गीत । लिपि देवनागरी । मूल्य : सैंतीस नये पैसे ।

६० नागपुरिया (सदानी) साहित्य, दूसरा ग्रन्थ—प्रथम भाग सदानी रीडर के नाम से प्रकाशित ग्रथकर्त्ता पीटर शाति नवरगी । प्रकाशक पीटर शाति नवरगी, सेंट अल्बर्ट कॉलेज, रांची । वर्ष १९६४ । विषय · कहानी, लीला तथा गीत सग्रह । लिपि देवनागरी । मूल्य दो रुपये ।

६१ नगपुरिया पहिल पोथी—लेखक श्री धनीनाम बक्शी । प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा । वर्ष १९४८ । विषय पहली पोथी । लिपि देवनागरी । मूल्य दो आने ।

६२ नया गीत—रचयिता शेख बालक। प्रकाशक : शेख बालक, ग्राम : सुकुरहुट्टु, डाकघर : सुकुरहुट्टु (काँके), जिला : राँची। वर्ष : अमुद्रित। विषय गीत। लिपि देवनागरी। मूल्य चार आने।

६३ नागपुरिया गीत (पाँचवाँ और छठा भाग)—रचियता : नईम उद्दीन मिरदाहा। प्रकाशक : नईम उद्दीन मिरदाहा, ग्राम कादोजोरा, डाकघर हुठु-घाघरा, जिला राँची। वर्ष १९६५। विषय : गीत। लिपि देवनागरी। मूल्य : पचास पैसे।

६४. नागपुरिया गीत (सातवाँ और आठवाँ भाग)—रचयिता : नईम उद्दीन मिरदाहा। प्रकाशक नईम उद्दीन मिरदाहा, ग्राम कादोजोना, डाकघर : हुठुघाघरा, जिला राँची। वर्ष : १९६५। विषय गीत। लिपि देवनागरी। मूल्य पचास पैसे।

६५ नागपुरिया गीत (नवाँ और दसवाँ भाग)—रचयिता नईम उद्दीन मिर-दाहा। प्रकाशक नईम उद्दीन मिरदाहा, ग्राम कादोजोरा, डाकघर : हुठुघाघरा, जिला राँची। वर्ष १९६५। विषय गीत। लिपि देवनागरी। मूल्य साठ पैसे।

६६ नागपुरिया गीत—रचयिता : खुदी सिंह। प्रकाशक खुदी सिंह। मो० घोघरा, पो० गुमला, जिला राँची। वर्ष अलिखित। विषय गीत। लिपि देव-नागरी। मूल्य पचास पैसे।

६७ नागपुरिया सदानी बोली का व्याकरण—लेखक पीटर शांति नवरंगी एस० जे०। प्रकाशक : स्वयं, संत अल्बर्ट कॉलेज, राँची। वर्ष : १९६५। लिपि-देवनागरी। मूल्य : दो रुपये।

६८ फोगली बुढ़िया कर कहनी—लेखक श्री झारखण्डी। प्रकाशक हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष अमुद्रित। विषय : कथा। लिपि-देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

६९ बुझौवल तथा झूमर—लेखक डोमन राम। प्रकाशक डोमन राम, ग्राम मनातू, डाकघर : कमडे, जिला राँची। वर्ष : १९६४। विषय बुझौवल (हिन्दी) झूमर (नागपुरी)। लिपि देवनागरी। मूल्य पद्रह नये पैसे।

७० भारत का नया चमत्कार। रचयिता कवि भारत नायक। प्रकाशक : कवि भारत नायक, ग्राम तथा पोस्ट चालालौंग, जिला : राँची। वर्ष १९६३। विषय गीत। लिपि-देवनागरी। मूल्य पद्रह नये पैसे।

७१ भवतर्नी चिन्ताहर्नी। रचयिता डोमन राम। प्रकाशक डोमन राम, गाँव मनातू, पोस्ट : कमडे, जिला राँची। वर्ष १९६७। विषय झूमर तथा कीर्त्तन। लिपि देवनागरी। मूल्य बासठ नये पैसे।

७२ माँदर के बोल पर। लेखक श्री विष्णुदत्त साहु। प्रकाशक : जन-सम्पर्क

विभाग, विहार। वर्ष . १९५९। विषय : नाटक-सग्रह। लिपि देवनागरी। मूल्य नि शुल्क।

७३. लंकाकाण्ड—लेखक जयगोविन्द मिश्र। इसकी प्रति मेरे देखने मे नही आई।

७४ लंग्वेज हैंडबुक सदानी। लेखक अमुद्रित। प्रकाशक मेसर्स वेग डनलप एण्ड को०, लिमिटेड, कलकत्ता। वर्ष १९३१। विषय · व्याकरण। लिपि रोमन। मूल्य केवल निजी वितरण के लिये मुद्रित।

७५. लुन्दरू दासी झूमैर—लेखक लुन्दरू कवि। सग्रकर्त्ता · श्री अमीन मेहर। प्रकाशक हितैषी कार्यालय, चाईवासा। वर्ष १९५१। विषय : झूमर। लिपि देवनागरी। मूल्य · दो आने।

७६ लव-कुश-चरित—लेखक श्री वलदेव प्रसाद साहु। प्रकाशक : कमल प्रकाशन, राँची। वर्ष १९७१। विषय : चरित-काव्य। लिपि : देवनागरी। मूल्य : एक रुपया।

७७ लील खो-रख़ा खे-खेल (दि ब्लू लेण्ड)—सग्रहकर्त्ता रेव० एफ० हान, डब्ल्यू० जी० आर्चर तथा धरमदास लकडा। प्रकाशक पुस्तक भण्डार, लहेरिया सराय। वर्ष १९४०। विषय . गीत-सग्रह। लिपि-प्रस्तावना रोमन तथा सग्रह देवनागरी मे। मूल्य अमुद्रित।

यह पुस्तक दो खण्डो मे प्रकाशित है। दूसरे खण्ड का प्रकाशन सन् १९४१ ई० मे उपरिलिखित प्रकाशक के द्वारा ही किया गया। दोनो खडो मे २६६० गीत सग्रहीत हैं, जिनमे अधिकाश गीत नागपुरी है।

७८ लोक गीत—रचनाकार : वटेश्वर नाथ साहु। प्रकाशक : वटेश्वर नाथ साहु, ग्राम सुकुरहुटु। डाकघर . सुकुरहुटु (काँके), राँची। वर्ष अमुद्रित। विषय · गीत। लिपि-देवनागरी। मूल्य-पच्चीस नये पैसे।

७९ विवाह गीत सग्रह—सग्रहकर्त्ता . जगन्नाथ महतो, एम० ए०, वी एल० एम० एल० ए०। प्रकाशक जगन्नाथ महतो, ग्राम झटवाँव, पोस्ट : पु डीदीरी। थाना . तमाड, जिला : राँची। वर्ष अमुद्रित। विषय विवाह गीत। लिपि-देवनागरी मूल्य आठ आने।

८० सादरी धर्म गीत—सग्रहकर्त्ता रे० फा० जोहन केरकेट्टा। प्रकाशक · जे० तिग्गा, कैथलिक मिशन, राँची। वर्ष : १९६२। विषय धर्म गीत। लिपि-देवनागरी। मूल्य अमुद्रित।

८१. सिरी ईसु खिरिस्त कर पवितर सुसमाचार (सत मरकुस कर लिखल)। अनुवादक : पी० शा० नवरगी, एस० जे०। प्रकाशक पी० केरकेट्टा, एस० जे०, राँची। वर्ष १९६२। विषय धर्म साहित्य। लिपि-देवनागरी। मूल्य छप्पन पैसे।

८२ संगती सुमन माला। लेखक : श्री घनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : १९५८। विषय : गीत। लिपि-देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

८३ सदानी ए भोजपुरी डायलेक्ट स्पोकन इन छोटानागपुर—लेखिका डॉ० मोनिका जोर्डन हार्स्टमन। प्रकाशक ओट्टो हरासोविज, वेइसवादेन, जर्मनी। वर्ष . १९६९। विषय शोध प्रबन्ध। लिपि : रोमन। भाषा . अंग्रेजी। मूल्य . अमुद्रित।

८४ "सदानी फोकलोर स्टोरीज"—संकलन कर्ता . रेव० फा० बुकाउट, एस० जे०। प्रकाशक कार्थलिक मिशन, राँची। वर्ष : अमुद्रित। विषय · लोक कथा। लिपि रोमन। मूल्य . मात्र निजी वितरण के लिये।

विशेष—यह पुस्तक साइक्लोस्टाइल कर प्रकाशित की गई। पुस्तक के दाहिने पृष्ठ पर सादरी मे कहानी तथा बायें पृष्ठ पर उसी का अंग्रेजी अनुवाद साथ-साथ प्रस्तुत है।

८५ सिरीं ईसु खिरिस्त कर पवितर सुसमाचार (सतमतीकर लिखल)। अनुवादक पीटर शाति नवरंगी, एस० जे०। प्रकाशक · कार्थलिक मिशन, राँची। वर्ष १९६३। विषय धार्मिक साहित्य। लिपि - देवनागरी। मूल्य . एक रुपया।

८६ सिरी ईसु खिरिस्त कर पवितर सुसमाचार (संत लुकस कर लिखल)—अनुवादक पीटर शाति नवरंगी, एस० जे०। प्रकाशक : कार्थलिक मिशन, राँची। वर्ष . १९६४ विषय धार्मिक साहित्य। लिपि : देवनागरी। मूल्य · एक रुपया।

८६ सोनझईर। लेखक · प्रफुल्ल कुमार राय। प्रकाशक प्रफुल्ल कुमार राय, राँतु रोड, राँची। वर्ष : १९६७। विषय गीत और कहानी-संग्रह। लिपि : देवनागरी। मूल्य · एक रुपया।

८७ श्रीकृष्ण चरित—लेखक श्री घनीराम बक्शी। प्रकाशक हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष अमुद्रित। विषय . जीवनी। लिपि देवनागरी। मूल्य आठ आना।

८८ श्री गणेश . चौठ-कहनी। लेखक . श्री दुखहरण साहु। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष १९५२। विषय पौराणिक कथा। लिपि . देवनागरी। मूल्य · तीन आने।

नई पुस्तकें

८९ नागपुरी और उसके बृहत-त्रय—लेखक डॉ० श्रवण कुमार गोस्वामी। प्रकाशक · कमल प्रकाशन, राँची। वर्ष · १९७१। विषय-भाषा तथा साहित्य लिपि · देवनागरी। मूल्य : तीन रुपये।

९० नागपुरी भाषा साहित्य—लेखक विश्वेश्वर प्रसाद केशरी। प्रकाशक .

कमल प्रकाशन, रांची। वर्ष-१९७१। विषय निवन्ध-सग्रह। लिपि - देवनागरी। मूल्य तीन रुपये।

९१ नागपुरी भाषा का सक्षिप्त परिचय। लेखक योगेन्द्रनाथ तिवारी। प्रकाशक : योग प्रकाशन, ऊपर बाजार, रांची। विषय व्याकरण तथा साहित्य। वर्ष १९७१। लिपि देवनागरी। मूल्य-एक रुपया ५० पैसे।

९२ दू डाइर बीस फूल—प्रधान सपादक डॉ० श्रवण कुमार गोस्वामी। प्रकाशक . स्टुडेंट्स बुक डिपो अपर वाजार, रांची। विषय गद्य-पद्य-सग्रह। लिपि . देवनागरी।

९३ विश्वनाथ शाही। लेखक विसेश्वर प्रसाद केशरी। प्रकाशक नागपुरी भाषा परिषद्, रांची। वर्ष १९७०। विषय नाटक। लिपिदे वनागरी। नि शुल्क वितरण के लिए।

(ख) नागपुरी साहित्य-सेवियो का संक्षिप्त परिचय

अर्जुनसिंह—

सहदेवसिंह के सुपुत्र स्व० अर्जुनसिंह नागपुरी के एक अच्छे गीतकार थे। आप ग्राम : कलिगा (गुमला) के निवासी थे। आपकी हस्तलिखित दो पुस्तको की जानकारी प्राप्त हुई है . (१) लकाकाण्ड, (२) भगवत्।

अब्बास अली—

पिता का नाम . श्री अकबर अली। जन्म नवम्बर १९२६। जन्म-स्थान डुमरी (रांची)। शिक्षा : मिड्ल पास। आजीविका शिक्षण। आपके कुछ गीत आकाशवाणी रांची से प्रसारित हुए हैं। "नागपुरी गीत" नामक आपकी एक पुस्तिका भी प्रकाशित हुई है। वर्त्तमान पता . सहायक शिक्षक, उच्च बुनियादी विद्यालय, सोसई आश्रम, पोस्ट सोसई, जिला रांची। स्थायी पता ग्राम : डुमरी, पोस्ट नर कोपी, जिला रांची।

अमीन मेहर—

पिता का नाम : स्व० सुघुमेहर। जन्मकाल सवत् १९८७ साल। जन्म-स्थान . कोनमेजरा (सिमडेगा)। शिक्षा · मिड्ल तक। आजीविका . कपड़ा बुनना। श्री अमीन मेहर ने स्व० लुन्दस कवि के गीतो का सग्रहकर "लुन्दस दासी फूमैर" नामक पुस्तिका का प्रकाशन हितैषी कार्यालय, चाईबासा से करवाया। वर्त्तमान तथा स्थाई पता ग्राम कोनमेजरा, डाकघर : खिजरी (सिमडेगा) जिला रांची।

अल्फ्रेड पी० बून—

जन्म . २ नवम्बर १८७०। जन्म-स्थान : एलोस्ट। २३ सितम्बर १८९० को धर्म—समाज मे प्रविष्ट। १४ दिसम्बर १९०४ से मिशन के सेवा-कार्य मे सलग्न। मृत्यु . २३ अक्तूबर १९४२।

रेवरेण्ड बून ने छ पुस्तकें नागपुरी मे लिखी, जो अब भी अप्रकाशित हैं। ये सभी पुस्तकें रोमन लिपि मे लिखी गई हैं। पुस्तको के नाम . (१) प्रभु यीसु ख्रीस्त मसीह, (२) सत मार्क केर लिखल सुसमाचार, (३) साल भइर केर हरएक एतवार दिन पढ़ेक ले सुसमाचार, (४) संत लुकसकेर पवित्तर सुसमाचार, (५) सँत योहन केर लिखल सुसमाचार तथा (६) प्रेरितमनकर कार्य।

ईसफ जान—

जन्म : १५ फरवरी १८९९। जन्म-स्थान . एनवर्स। २३ सितम्बर १९१६ को धर्म-समाज मे प्रविष्ट। २५ फरवरी १९२० से मिशन-सेवा कार्य मे सलग्न। २ दिसम्बर १९२२ को स्वदेश वापस। मृत्यु ३१ अगस्त १९५१।

"नागपुरिया कहानी" नामक एक हस्तलिखित पुस्तक काथलिक मिशन, राँची मे दिखलाई पडी, जिनमे लोक-कथाएँ सगृहीत हैं। यह पुस्तक ईसफ जान की है। रेवरेण्ड बुकाउट के "सादानी फोकलोर स्टोरीज" मे जो लोक-कथाएँ हैं, वे सारी रचनाएँ ईसफ जान की पुस्तक मे भी हैं।

पाडुलिपि रोमन लिपि में हैं।

एतवा उराँव—

पिता का नाम श्री गोन्डा उराँव। जन्म-तिथि ९ जनवरी १९२६। जन्म-स्थान गाँव पुरियो (राँची)। शिक्षा पाँचवी श्रेणी तक। आजीविका : गृहस्थी। सन् १९५१ मे आपने "आदिवासी नगपुरीया सगीत" नामक एक पुस्तक का सम्पादन किया। इस पुस्तक के अधिकाश गीत नागपुरी मे ही हैं। स्थायी तथा वर्त्तमान पता ग्राम तथा पोस्ट : पुरियो (राँतू) जिला · राँची।

एन्तोनी सोयस—

जन्म २६ जून १८९२। जन्म-स्थान : ऐन्डरलैंक्ट। २३ सितम्बर १९१० को धर्म-समाज मे प्रविष्ट। ९ मार्च १९२१ मे मिशन के कार्य मे सम्मिलित। ३० नवम्बर १९४९ को वेलजियम मे देहान्त। स्व० एन्तोनी सोयस ने नागपुरी का एक सक्षिप्त "शब्द-सग्रह" प्रस्तुत किया, जो अब तक अप्रकाशित है। इस शब्द-सग्रह का नाम . "सदरी भोकेबुलरी" है।

कचन—

इनका वास्तविक नाम चुन्नी राम दूबे था, पर ये अपने नौकर कचन के नाम से ही गीत लिखा करते थे। जन्म-तिथि फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी सवत् १९१९। जन्म-स्थान वडकाडीह। मृत्यु सवत् १९८४ के पश्चात् किसी समय। इन्होंने अपने जीवन मे अनेक उतार-चढाव देखे थे, जिनकी छाप उनके गीतो मे दिखलाई पडती है। शकर-स्तुति, कृष्ण-चरित, महाभारत, सुदामा-चरित तथा लका काण्ड के अलावे इन्होंने टाना भगत आन्दोलन, तीर्थ-यात्रा तथा अपने सबध मे भी गीत लिखे हैं।

कपिलमुनि पाठक देवघरिया—

पिता का नाम . स्व० चद्र मुनि पाठक देवघरिया। जन्म-काल . सावन सवत् १९६० साल। जन्म-स्थान हापामुनि (राँची)। शिक्षा : साक्षर। आजीविका : पौरो-

हित्य तथा गृहस्थी । श्री कपिल मुनि पाठक ने अनेक विषयो पर गीत लिखे हैं । इनके द्वारा रचित गीतो की सख्या कम है, पर ये गीत बड़े ही मार्मिक हैं । आप स्वयं एक अच्छे गायक भी हैं । वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम : हापामुनि, डाकघर : गम्हरिया, जिला रांची ।

करमचद भगत—

पिता का नाम · श्री भाऊवा उरांव जन्म-तिथि · भाद्र शुक्ल एकादशी १९९३ । जन्म-स्थान · ग्राम जरिया (रांची) । शिक्षा : स्नातक तक । आजीविका : अध्यापन । श्री करमचद भगत हिन्दी, नागपुरी तथा उरांव तीनो भाषाओ मे लिखते हैं । आपने कुछ दिनो तक "पडहा" मासिक का भी सपदान किया था । आपकी नागपुरी कविताएँ आदिवासी मे प्रकाशित तथा आकाशवाणी रांची से यदा-कदा प्रसारित होती रहती हैं । वर्त्तमान पता : करमटोली, बूटी रोड, रांची । स्थायी पता · ग्राम जरिया · डाकघर . बेडो, जिला : रांची ।

किशोरी सिंह ·

आपकी मातृभाषा पजाबी थी, पर आप नागपुरी साधिकार बोलते थे, फलतः आकाशवाणी, रांची मे आपकी नियुक्ति रेडियो कलाकार के रूप मे हो गई । "देहाती दुनिया" कार्यक्रम के अन्तर्गत आपके द्वारा लिखित अनेक नागपुरी नाटक तथा गीत प्रसारित हुए ।

कुमार उदित नारायण सिंह देव—

पिता का नाम · श्री कुँवर रघुनाथ शरण सिंहदेव । जन्म-काल . सन् १९१५ । जन्म-स्थान बाघडेगा (रांची) । शिक्षा . ९ वी श्रेणी तक । आजीविका . खेती-बारी । प्रकाशित पुस्तकें · (१) नागपुरिया जनी झुमैर (रासक्रीडा), (२) नागपुरिया डमकच, (३) नागपुरिया जनी झुमैर और मर्दानी झुमैर, (४) छोटा नागपुरिया जनी झुमैर (हारमोनियम गाइड) आप बीरु राजघराने के हैं । आपने उपर्युक्त पुस्तको मे अनेक गीतकारो के गीतो को सगृहीत किया है । नागपुरी साहित्य की उन्नति मे आपकी विशेष दिलचस्पी है । वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम+पोस्ट . बाघडेगा, परगना बीरु केसलपुर, थाना . कुरडेग, जिला · रांची ।

कुन्दन प्रेमचन्द नवरगी—

पिता का नाम · स्व० आनन्द सिंह । जन्म : १२ अप्रैल १८९५ । जन्म-स्थान : पाटपुर (रांची) । शिक्षा मिड्ल । आजीविका . कृषि । श्री कुन्दन प्रेमचद नवरगी ने नागपुरी लोक-कथाओ के सग्रह मे विशेष परिश्रम किया है । इनके द्वारा संगृहीत कुछ लोक-कथाओ को किंचित् सशोधन के उपरान्त श्री पीटर शांति नवरगी ने अपनी पुस्तक "नागपुरिया (सदानी) साहित्य" मे स्थान दिया है । वर्त्तमान तथा

स्थायी पता : ग्राम : मुनुरुई, डाकघर वरदा, थाना तोरपा : जिला-रांची।

कुँवर रघुनाथ शरण सिंहदेव—

पिता का नाम स्वर्गीय कुँवर नीलाम्वर सिंहदेव। जन्म-वि०सम्वत् १६४८। जन्म-स्थान अकुरा (रांची)। शिक्षा मिड्ल तक। आजीविका . गृहस्थी। आपके कुछ गीत "रांची एक्सप्रेस" मे प्रकाशित हुए हैं। "छोटा नागपुरिया सगीत" नामक आपकी एक पुस्तक अप्रकाशित है। स्थायी तथा वर्त्तमान पता गाँव तथा पोस्ट वाघडेगा, जिला · रांची।

कुमार उदित नारायण सिंह (नागपुरी कवि) आप ही के सुपुत्र है।

कोनराड बुकाउट—

जन्म १६ अक्तूबर १८६७। जन्म-स्थान ब्रूस। श्री बुकाउट २६ सितम्वर १८८६ को धर्म-समाज मे प्रविष्ट हुए। ४ नवम्वर १८८६ से मिशन के सेवा-कार्य मे सलग्न। कलकत्ते मे १४ अगस्त १६०७ को मृत्यु।

स्व० बुकाउट ने नागपुरी का एक पूर्ण व्याकरण तैयार किया था, जो प्रकाशित न हो सका। इस व्याकरण की एक प्रतिलिपि श्री प्रफुल्ल कुमार राय के पास है। कुछ नागपुरी लोक-कथाओ का उन्होने सग्रह भी करवाया था। रेवरेण्ड कार्डोन एवं रेवरेण्ड फ्लोर के सशोधनो के साथ ये लोक-कथाएँ रोमन लिपि मे साइक्लोस्टाइल कर 'सदानी फोकलोर स्टोरीज" नामक पुस्तक मे प्रकाशित की गई।

(कवि) बालक—

कवि वालक का वास्तविक नाम उमर हयात अली है। पिता का नाम : स्व० रहीम वक्श। जन्म-काल सन् १६४० ई०। जन्म-स्थान : ग्राम : मुकुरहुट्टु (काँके) रांची। शिक्षा . माध्यमिक। आजीविका कृषि। कवि वालक के अनुसार इन्होंने लगभग तीस हजार नागपुरी गीत लिखे है, जो विभिन्न विपयो पर है। प्रकाशित पुस्तक नया गीत। वर्त्तमान तथा स्थायी पता ग्राम+ डाकघर मुकुरहुट्टु (कांके) थाना रांची . जिला-रांची।

खुदी सिंह—

पिता का नाम—श्री लोकनाथ सिंह। जन्म-तिथि : आश्विन वदी १५ सवत् १६८७। जन्म-स्थान घोघरा। शिक्षा अपर प्राइमरी। आजीविका : गृहस्थी। "नागपुरिया गीत" आपकी प्रकाशित पुस्तिका है, जिसमें आधुनिक गतिविधियो के कुछ सफल चित्र मिलते हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता ग्राम . घोघरा, पो० गुमला, जिला रांची।

ख्रिस्त प्यारे केरकेट्टा—

पिता का नाम · श्रीयाकूब केरकेट्टा। जन्म : १६०३। जन्म-स्थान : बमिरा।

शिक्षा : मैट्रिक। आप आदिम जाति सेवा मंडल के आजीवन सदस्य हैं। आपने नागपुरी में अनेक प्रकार की रचनाएँ लिखी हैं, जो अब तक अप्रकाशित हैं। गाँवों में युवकों के सहयोग से आपने अपने नागपुरी नाटकों का कई बार सफल अभिनय भी करवाया है। कुछ रचनाएँ आकाशवाणी के द्वारा प्रसारित भी हुई हैं। वर्तमान तथा स्थायी पता : आदिम जाति सेवा मंडल, पोस्ट : सिमडेगा, राँची।

गोपीनाथ मिश्र—

पिता का नाम : श्री विश्वेश्वरनाथ मिश्र। जन्म-तिथि : ३ मई १९४६। जन्म-स्थान : बेलागी (राँची)। शिक्षा : प्रवेशिका। आजीविका : कृषि। श्री गोपीनाथ मिश्र ने आधुनिक विषयों पर भी कविताएँ लिखी हैं यथा : चीन जुनाव और सामूहिक योजना। आपकी रचनाएँ यदा-कदा 'आदिवासी' (साप्ताहिक) में प्रकाशित होती रहती हैं। वर्तमान तथा स्थायी पता-गाँव : बेलागी, पो० : मांडर, जिला : राँची।

गोविन्द साहू—

पिता का नाम : श्री राम प्रसाद साहू। जन्म-विक्रम संवत् : १९३१। जन्म-स्थान : गाँव : पिठोरिया (राँची)। शिक्षा : पाँचवीं कक्षा उत्तीर्ण। आजीविका : गृहस्थी। प्रकाशित पुस्तक : (१) किनाली गीत। वर्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम—पोस्ट : पिठोरिया, लोहरदगा रोड, जिला : राँची।

घासीराम—

पिता का नाम : स्व० सादेराम। जन्म-काल : संवत् १९१६। जन्म-स्थान : करकट। शिक्षा : मिडल। आजीविका : खेती-बारी। प्रकाशित पुस्तकें—(१) नागपुरी फाग शतक (२) लल्ला-रत्न (३) दुर्गा सप्तशती (४) शिव वन्दना (५) फगुवा (६) नागपुरी फगुवा गीत। घासीराम की कुछ अप्रकाशित रचनाएँ भी हैं जिनमें राम जन्म, राम स्वयंवर, कृष्ण-जीवन, शिवजी की स्तुति, सुदामा-चरित, सुन्दर काण्ड, उषाहरण तथा नाग वंशावली आदि विषय सम्मिलित हैं। आप नागपुरी के सर्वाधिक लोकप्रिय एवं वद्य कवि माने जाते हैं। कवि के रूप में जितनी ख्याति आपको मिली, उतनी ख्याति किसी दूसरे को नहीं। ६७ वर्ष की आयु तक आप नागपुरी की सेवा में निरत रहे।

छत्रलाल अम्बिका प्रसाद नाथ शाहदेव—

पिता का नाम : श्री महाराज कुमार जगमोहन नाथ शाहदेव। जन्म : १९०३ ई०। जन्म-स्थान : कुरकुरी गढ़ (राँची)। शिक्षा : बी० ए० एम० एल० बी०। आजीविका : वकालत। आपकी कई रचनाएँ 'नागपुरी' में प्रकाशित हुई हैं। स्थायी तथा वर्तमान पता : मारवाड़ी, मेन रोड, राँची।

जगघोष नारायण तिवारी—

पिता का नाम श्री जगनिवास नारायण तिवारी। जन्म-तिथि अक्षयनवमी कार्तिक सुदी १९५८ वि० स०। जन्म-स्थान ग्राम बोडेया (रांची)। शिक्षा मिड्ल तक। आजीविका खेती-बारी। श्री जगघोष नारायण तिवारी अपने पिता श्री जगनिवास नारायण तिवारी की तरह नागपुरी के एक अच्छे गायक कवि हैं और आपने लगभग ५००-६०० नागपुरी गीतों की रचना विभिन्न विषयों पर की है। आप बंगला तथा मुण्डारी में भी गीत लिख लेते हैं। वर्तमान तथा स्थायी पता . ग्राम आरा, पोस्ट-महिलौंग, जिला . रांची।

जगन्नाथ महतो—

पिता का नाम श्री सोमा महतो। जन्म-तिथि १२ दिसम्बर १९०२। जन्म-स्थान झटगांव (रांची)। शिक्षा एम०ए०, बी०एल०। आजीविका कृषि। प्रकाशित पुस्तक · "विवाह गीत सग्रह"। इस पुस्तक में कई अज्ञात कवियों के गीत सगृहीत हैं। ये सभी गीत पांच परगना में विवाह के अवसर गाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त श्री महतो ने "मुण्डारी" भाषा के विकास में भी योगदान किया है। सन् १९५२ से सन् १९६१ तक आप बिहार विधान सभा के सदस्य थे। सन् १९६४ में आपको तमाड़ प्रखण्ड का प्रमुख निर्वाचित किया गया। वर्तमान तथा स्थायी पता ग्राम झटगांव, थाना तमाड़, पो० पुन्डीदीरी, जिला रांची।

जगन्नाथ सिंह—

पिता का नाम : श्री मनोनाथसिंह जन्म-काल लगभग सन् १९१४ ई० में। जन्म-स्थान हर्रा (रांची)। शिक्षा लोअर तक। आजीविका : गृहस्थी। श्री जगन्नाथसिंह नागपुरी के एक अच्छे गायक कवि हैं। आपके गीतों में आधुनिक समस्याओं का सफल चित्रण मिलता है। आपने लगभग दो सौ से भी ऊपर गीत लिखे हैं। वर्तमान तथा स्थायी पता . ग्राम . आलिन्गुड, डाकघर ' कुन्दुर मुण्डा, जिला : रांची।

जगनिवास नारायण तिवारी—

पिता का नाम स्व० मधुसूदन नारायण तिवारी। जन्म-तिथि चतुर्दशी श्रावण १९३७ वि० सवत्। जन्म-स्थान ग्राम बोडेया (रांची)। शिक्षा मिड्ल पास। आजीविका—खेती-बारी। "रस तरगिणी" श्री जगनिवास नारायण तिवारी की हस्तलिखित पुस्तक है, जिसमें लगभग ६०० गीत हैं। इन गीतों में शृगार रस की छटा अलकार-प्रयोग तथा उक्ति-पटुता दर्शनीय हैं। इन गीतों के आधार पर श्री तिवारी को नागपुरी साहित्य में शृगार-रस का श्रेष्ठ गायक-कवि माना जा सकता है। श्री तिवारी की कुछ रचनाओं का प्रसारण आकाशवाणी रांची ने भी किया है। १६ दिसम्बर १९६५ को आपका देहावसान हो गया।

जयगोविन्द मिश्र—

इनके पिता का नाम नगराज मिश्र था। जयगोविन्द मिश्र के जीवन के संबंध में पूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध नहीं। सिर्फ इतना ही पता चलता है कि इनका घर टाटीसिलवे में था, पर ये कोयलारी में रहा करते थे; क्योंकि इसी गाँव में इनकी खेती-बारी थी। ये हनुमान सिंह तथा बरजूराम पाठक के समकालीन माने जाते हैं। इन्होंने रामायण, महाभारत तथा भागवत आदि के आधार पर अनेक गीत लिखे हैं। "लंकाकाण्ड" इनकी प्रकाशित रचना है, पर इसकी प्रति अब उपलब्ध नहीं होती।

जुलियस तीगा—

पिता का नाम : स्व० मसीहदास तीगा। जन्म-तिथि १३ अक्तूबर १९०३। जन्म-स्थान : पाकरटोली (राँची)। शिक्षा : बी० ए० (प्रतिष्ठा) दर्शन-शास्त्र। आजीविका : सेवा। प्रकाशित पुस्तक छोटानागपुर केर पुत्री। अनेक अप्रकाशित पुस्तकें एवं स्फुट रचनाएँ।

श्री तीगा ने नागपुरी भाषा तथा साहित्य की उल्लेखनीय सेवा की है। आकाश-वाणी राँची से "हमारी दुनिया" का जो कार्यक्रम प्रतिदिन प्रसारित होता है उसके आप परामर्शदाता थे। इसके पूर्व आप "देहाती दुनिया" के "सहायक प्रस्तोता" थे। आपने छोटानागपुर के लोक-नृत्य तथा लोक-गीतों के उद्धार के लिए भी ऐतिहासिक प्रयास किया है, जिसके लिए बिहार सरकार ने आपको पुरस्कृत भी किया था।

जोसेफ कान्स—

जन्म-तिथि १५ फरवरी १८९६। जन्म-स्थान एनवर्स। २३ सितम्बर १९१६ को धर्म-समाज में प्रविष्ट। २५ फरवरी १९२० से मिशन-कार्य में सम्मिलित। २ दिसम्बर १९२७ को स्वदेश वापस। ३१ अगस्त १९५१ ई० में मृत्यु। स्व० जोसेफ कान्स की हस्तलिपि में "नागपुरिया कहानी" नामक एक पाण्डुलिपि मिलती है। इस पाण्डुलिपि के सम्बन्ध में यथा स्थान विचार किया गया है।

जोहन केरकेट्टा—

पिता का नाम : स्व० जोसेफ केरकेट्टा। जन्म-तिथि ८ जनवरी १९१९। जन्म-स्थान : गाईबीरा। शिक्षा : बी०ए०, पी०एच०डी०एच०। आजीविका : सेवा (पौरोहित्य)। प्रकाशित पुस्तकें : (१) सादरी धर्मगीत, (२) एतवार केर पाठ। हस्तलिखित रचनाएँ : (१) येसु संगे, (२) जय येसु। वर्तमान तथा स्थायी पता : कायलिक चर्च, हामिरपुर, राउरकेला-३, उड़ीसा।

डोमन राम—

पिता का नाम श्री जितवाहन राम। जन्म-काल : सन् १९३२ ई०। जन्म-

स्थान · मनातू (राँची) । शिक्षा अपर पास । आजीविका पत्थर काटने का काम। प्रकाशित पुस्तकें (१) राधिका-विलाप, (२) भवतर्नी चिताहर्नी, (३) द्वादश विजनीहृदय रजनी तथा (४) दोहे की रीति से बुझौवल कहानी। श्री डोमन राम भक्ति रस के एक अच्छे कवि हैं। आपने वर्त्तमान जीवन की समस्याओ पर भी कुछ गीत लिखे हैं। अनेक गीत शीघ्र ही प्रकाश मे आने वाले हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता ग्राम मनातू, डाकघर कमडे, थाना . राँची, जिला राँची।

दिवाकर मणि पाठक "मधुप"—

पिता का नाम : श्री विजय मणि पाठक। जन्म-काल १९३६। जन्मस्थान . ग्राम हापामुनि (राँची)। शिक्षा सस्कृत मे साहित्याचार्य। आजीविका पौरोहित्य। प्रकाशित पुस्तक नागपुरीया सगीत माधुरी। इस पुस्तक का प्रकाशन सन् १९५८ मे हुआ। आप नागपुरी के लोक-गीतो के सग्रह तथा प्रकाशन के लिए विशेष प्रयत्नशील हैं। वर्त्तमान पता प्लाथपुर उच्च विद्यालय, कोरोजो, पोस्ट · कोरोजो, जिला राँची।

दु खहरण नायक—

पिता का नाम · स्व० रामकन्हाई नायक। जन्म-तिथि २१ जनवरी १९१२। जन्मस्थान · बुण्डू (राँची)। शिक्षा मैट्रिक सी०टी०। आजीविका : राजकीय सेवा। श्री नायक नागपुरी भाषा के एक अच्छे गायक तथा कवि हैं। आपकी रचनाओ मे अध्यात्मवाद एव रहस्यवाद की छाप विशेष दिखाई पडती है। आपकी रचनाएँ "आदिवासी" मे प्रकाशित तथा आकाशवाणी, राँची से सदैव प्रसारित होती रहती हैं। आप जन-सम्पर्क विभाग, राँची मे नियुक्त थे और जन-सम्पर्क का कार्य नागपुरी भाषा के माध्यम से ही करते थे। इस कार्य मे सरसता लाने के लिए श्री नायक स्वरचित नागपुरी गीतो की भी सहायता लेते थे। अब आपने सेवा से अवकाश प्राप्त कर लिया है। स्थायी पता ग्राम तथा पोस्ट बुण्डू, जिला राँची।

घनीराम बक्शी—

पिता का नाम श्री शुकनाथ बक्शी। जन्म-तिथि १४ जनवरी १८९६। जन्म-स्थान चाईबासा। शिक्षा प्रवेशिका। आजीविका पुस्तक प्रणयन, प्रकाशन तथा विक्रय। आपने अपनी प्रकाशन-सस्था, "हितैषी कार्यालय" से नागपुरी की अनेक छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ प्रकाशित की हैं। जिनमे नागपुरी गीत सगृहीत है। इनमे से अधिकाश पुस्तकें आपके द्वारा ही लिखी गई है। इस प्रकार नागपुरी गीतो को सपूर्ण छोटानागपुर मे प्रचारित-प्रसारित करने का एक मात्र श्रेय आपको ही है। श्री बक्शी पद्यकार के अतिरिक्त नागपुरी के मँजे हुए गद्यकार भी थे। आपका देहावसान चाईबासा मे २२ मई १९६६ को हो गया।

नईमुद्दीन मिरदाहा—

पिता का नाम : श्री अमीर उद्दीन मिरदाहा। जन्म-तिथि १४ जून १९३९। जन्म-स्थान कादोजोरा (राँची)। शिक्षा : प्रवेशिका तक। आजीविका राजकीय सेवा (कर्मचारी)। आपके गीतों का संग्रह "नागपुरिया गीत" के नाम से दस भागों में प्रकाशित हुआ है। श्री मिरदाहा कवि होने के साथ-साथ एक अच्छे गायक एवं कहानीकार भी हैं। वर्तमान-पता : ग्राम : कादोजोरा, थाना : बेड़ो, पोस्ट : हुटुघाघरा, जिला राँची। स्थायी पता : उपर्युक्त।

पाण्डेय वीरेन्द्रनाथ राय—

पिता का नाम श्री पाण्डेय सुरेन्द्र नाथ राय। जन्म-तिथि : १९ जुलाई १९१९। जन्म-स्थान मौजा पहाड़ कन्डरिया (राँची)। शिक्षा : बी०ए०, बी०एल०। आजीविका : कृषि एवं वकालत श्री। राय नागपुरी के प्रसिद्ध गायक-कवि हैं। इनके गीत आकाशवाणी, राँची से यदा-कदा प्रसारित होते रहते हैं। आजकल आप राँची में वकालत करते हैं। वर्तमान तथा स्थायी पता सुरेन्द्र भवन, डाकबँगला रोड, राँची।

पाण्डेय दुर्गानाथ राय—

पिता का नाम श्री पाण्डेय मोहनराय। जन्म-तिथि ५ जनवरी १९१०। जन्म-स्थान सकरा (राँची)। शिक्षा मिडिल। आजीविका खेती और नौकरी, हस्तलिखित पुस्तक "नागपुरिया गीत"। आपकी रचनाएँ "आदिवासी" साप्ताहिक में प्रकाशित होती रहती हैं। कई वर्षों तक आप आकाशवाणी राँची के "हमारी दुनिया" नामक कार्यक्रम में रेडियो कलाकार थे। आकाशवाणी, राँची में भी आपकी रचनाएँ विविध विषयों पर निरन्तर प्रसारित होती रहती हैं। वर्तमान तथा स्थायी पता ग्राम : सकरा, पो० सकरा, जिला राँची।

पी० इड्नेस—

पी० इड्नेस गोस्सनर एवंजेलिकल लुथेरन चर्च, राँची के जर्मन पादरी थे। आपने संपूर्ण बाइबल का अनुवाद नागपुरी में किया था, जिसका प्रकाशन पाँच भागों में हुआ। इड्नेस के प्रयासों के कारण ही नागपुरी ईसाई मिशनों नागपुरी में प्रवेश पा सकी थी। स्मरणीय है कि इड्नेस नागपुरी के प्रथम ज्ञात गद्यकार हैं।

पीटर शांति नवरंगी—

पिता का नाम श्री विलियम प्रेमोदय नवरंगी। जन्म-तिथि : ३० दिसम्बर १८६६। जन्म-स्थान : पाटपुर (राँची)। शिक्षा : विशारद। आजीविका : सन्यास (येसुसंघी)। प्रकाशित पुस्तकें—

(१) सत मरकुस लिखल परभु ईसु कर सुसमाचार ।
(२) सत मत्ती लिखल ,, ,, ,, ,,
(३) सत लूकस-लिखल ,, ,, ,, ,,
(४) सत जोहन-लिखल ,, ,, ,, ,,
(५) सिरी ईसु-चरित चिन्तामडन
(६) सिम्पल सदानी ग्रामर (अग्रेजी मे)
(७) नागपुरिया सदानी व्याकरण (हिन्दी मे)
(८) सदानी रीडर
(९) नागपुरिया सदानी साहित्य

इन पुस्तको के अतिरिक्त आपने हिन्दी मे भी पुस्तकें लिखी है ।

नागपुरी भाषा को व्यवस्था प्रदान करने तथा इसके उन्नयन के लिए आपने जो अथक श्रम किया है, वह अविस्मरणीय है । मृत्यु के पूर्व भी आप नागपुरी साहित्य के सग्रह-प्रकाशन तथा शब्द-कोष के प्रणयन के लिए प्रयत्नशील थे ।

४ नवम्बर १९६८ को आपका देहावसान माँडर अस्पताल मे हो गया ।

प्रद्युम्न राय—

पिता का नाम श्री टीकैत परमानन्द राय । जन्म-तिथि चतुर्थी श्रावण मास सवत् १९७२ । जन्म-स्थान राजा उलातु (राँची) । शिक्षा मिड्ल पास । आजीविका सगीत । श्री प्रद्युम्न राय नागपुरी के एक अच्छे गायक-कवि हैं । आपकी कुछ रचनाएँ आकाशवाणी राँची से यदा-कदा प्रसारित हुआ करती है । सूचना एव प्रसारण मत्रालय के क्षेत्रीय प्रचार विभाग द्वारा आयोजित कार्य-क्रम मे भी कभी-कभी आप नागपुरी गीत प्रस्तुत करते है । स्थायी तथा वर्त्तमान पता ग्राम तथा डाकघर : राजाउलातु, जिला . राँची ।

प्रफुल्ल कुमार राय—

पिता का नाम स्व० पाण्डेय रामकिशोर राय । जन्म ८ फरवरी १९३६ । जन्म-स्थान : पहार बगरु (राँची) । शिक्षा . बी० कॉम, बी० एल० । आजीविका सेवा । प्रकाशित पुस्तक सोनभईर । श्री प्रफुल्ल कुमार राय नागपुर के एक अच्छे निवधकार, कहानीकार तथा गीतकार है आपकी अनेक रचनाएँ नागपुरी आदिवासी तथा राँची टाइम्स मे प्रकाशित तथा आकाशवाणी राँची से प्रसारित हुई हैं । "नागपुरी भाषा परिषद्" के गठन तथा "नागपुरी" के प्रकाशन मे आपका योगदान भुलाया नही जा सकता । सम्प्रति "नागपुरी भाषा परिषद्" के आप सहायक-मत्री हैं । स्थायी तथा वर्त्तमान पता . राँतू रोड, राँची ।

प्रीतमससीह वारोभईया—

पिता का नाम श्री धर्मदास वारोभईया। जन्मतिथि २७ जनवरी १९१४। जन्म-स्थान वादलु ग (राँची)। शिक्षा आई०ए०, सी०टी०। आजीविका शिक्षण। हस्तलिखित पुस्तकें · (१) ठेठ सदानी के कहानी, (२) सदानी डकमच, (३)सदानी बिहा, (४) फगुआ, (५) झुमइर, (६) जनी झुमइर, (७) भजन। श्री पीटर शांति नवरंगी ने अपनी कई पुस्तको मे श्री वारोभईया की रचनाओ को सकलित किया है। वर्त्तमान पता सत पॉवल उच्च विद्यालय, राँची। स्थायी पता गाँव केलो महुआटोली, पोस्ट बारदा, थाना तोरपा, जिला · राँची।

बटेश्वरनाथ साहु—

पिता का नाम श्री उदयनाथ साहु। जन्मतिथि २० जनवरी १९४०। जन्म-स्थान मुकुरहुटु (काँके) राँची। शिक्षा प्रवेशिका। आजीविका कृषि तथा सेवा। श्री बटेश्वरनाथ साहु नागपुरी के नवयुवक गायक कवि हैं जिनके गीतो मे आधुनिक समस्याओ को भी स्थान मिला है। सौ से ऊपर अप्रकाशित गीत। प्रकाशित पुस्तक (१) लोकगीत। वर्त्तमान तथा स्थायी पता ग्राम तथा डाकघर : मुकुरहुटु, थाना राँची, जिला . राँची।

बडाईक ईश्वरी प्रसादसिंह—

पिता का नाम श्री बडाईक देवनन्दनसिंह। जन्म-काल सन् १९१२। जन्म-स्थान करोंदी (गुमला, राँची)। शिक्षा प्रवेशिका तक। आजीविका कृषि तथा व्यवसाय। श्री बडाईक नागपुरी के एक अच्छे नाटककार हैं। अपने गाँव मे दुर्गापूजा के अवसर पर आप प्राय नागपुरी मे ही स्वलिखित नाटक मच पर प्रस्तुत करते हैं। आपके सम्पादन मे "झारखड" नामक मासिक का प्रकाशन गुमला मे होता था, जिसके प्राय हर अंक मे नागपुरी गीत आदि प्रकाशित किए जाते थे। आपने "गजेन्द्र सिंह" के नाम से भी नागपुरी मे कुछ गीत लिखे हैं।

बरजूराम पाठक—

आप ग्राम हापामुनि के निवासी थे और आपने नागपुरी के प्रारंभिक कवि हनूमानसिंह को गीत-सगीत-प्रतियोगिता मे एकबार परास्त किया था। सन् १८३१ का लरका आदोलन आपके जीवन-काल मे हुआ था, जिसका रोमहर्षक वर्णन आपके कुछ गीतो मे मिलता है। आपके अनेक गीत प्रचलित हैं, पर उनका कोई सग्रह उपलब्ध नही।

बलदेव प्रसाद साहु—

पिता का नाम . श्री अयोध्या प्रसाद साहु। जन्म-तिथि : १० अक्तूबर १९३९। जन्म-स्थान · पटमाही (राँची)। शिक्षा प्रवेशिका अनुत्तीर्ण। आजीविका .

गृहस्थी। प्रकाशित रचनाएँ "लव कुश चरित।" इसके अतिरिक्त आपकी नागपुरी मे लिखित तथा नागपुरी से सबधित रचनाएँ बराबर पत्रिकाओ मे प्रकाशित तथा आकाशवाणी राँची के द्वारा प्रसारित होती रहती है। नागपुरी के विकास तथा प्रसार मे आप रुचि रखते हैं। वर्त्तमान पता . मोकाम तथा पोस्ट कटकाही, चैनपुर, जिला . राँची।

बलदेव साहु—

पिता का नाम . श्री खेतू साहु। जन्म-स्थान सुकुरहुटु (काँके) राँची। जन्म-काल वि० स० १९१९ के आस-पास। मृत्यु ६५ वर्ष की अवस्था मे वि०स० १९८४ के भादो मास मे। आप एक शिक्षक थे। स्व० बलदेव साहु के पौत्र श्री नकुल साहु के पास जो पोथियाँ उपलब्ध है, उनमे कुछ गीत हनूमानसिंह तथा जय गोविन्द मिश्र के है। बलदेव साहु की भक्ति परक मौलिक रचनाएँ भी उपलब्ध है।

बसुदेवसिंह—

पिता का नाम—श्री सोनूसिंह। जन्म-काल सन् १८७४ ई०। मृत्यु ८४ वर्ष की अवस्था मे सन् १९५८ ई० मे। जन्म-स्थान कामताडा (सिमडेगा)। स्व० वसुदेव सिंह एक जमीदार थे। आप हिन्दी, बँगला तथा उडिया तीनो भाषाएँ जानते थे। उनके कुछ गीतो का सकलन कर बाघडेगा के श्री उदितनारायण सिंहदेव ने "जनी झूमॅर और मर्दानी झूमॅर" नामक एक पुस्तिका का प्रकाशन हितैषी कार्यालय, चाईबासा, से करवाया था। वसुदेवसिंह के गीत गाँवो मे काफी प्रचलित हैं।

बानेश्वर साहु—

पिता का नाम श्री हरिनाथ साहु। जन्म-तिथि अगहन वि०स० १९४५। जन्म-स्थान सुकुरहुटु (काँके) राँची। शिक्षा साक्षर। आजीविका कृषि। श्री बानेश्वर साहु ने "ज्ञान मजरी" नामक एक पुस्तिका तैयार की है, जिसमे ३० मौलिक गीत है। आप प्रथमाक्षरी लिखने मे पटु है। वत्तमान तथा स्थायी पता ग्राम तथा डाकघर सुकुरहुटु, थाना राँची, जिला राँची।

(प्रो०) विमल नाग—

प्रो० नाग ने १९५९ मे "अग्रेज-आदिवासी लडइकर सक्षिप्त बयान" नामक पुस्तिका लिखी। आप सत एन्थोनी कालेज, शिलांग मे विज्ञान के प्राध्यापक हैं।

भुवनेश्वर "अनुज"—

पिता का नाम श्री कमल साहू। जन्म ४ मार्च १९३७। जन्म-स्थान छरदा (राँची)। शिक्षा प्रवेशिकोत्तीर्ण। आजीविका पत्रकारिता तथा सेवा। आपकी गद्य रचनाएँ "नागपुरी" मे प्रकाशित होती रही है। "नागपुरी भाषा-परिषद्" के गठन तथा "नागपुरी" के प्रकाशन मे आपका सहयोग उल्लेखनीय है। स्थायी-पता

ग्राम छरदा, पोस्ट सिसई, जिला रांँची । वर्त्तमान पता बहुबाजार, चर्च रोड, राँची ।

महथा अभिमन प्रसाद सिंह—

पिता का नाम महथा शम्भुनाथ सिंह । जन्म-तिथि अज्ञात । जन्म-स्थान उगरा (लोहरदगा) । आपको घर मे ही शिक्षा मिली थी । इनके गीतो का कोई सकलन उपलब्ध नही, पर अनुमान है कि इनके द्वारा लिखे गीतो की सख्या · लगभग पाँच सौ से ऊपर है ।

महथा शीतल प्रसाद सिंह—

पिता का नाम स्व० महथा अभिमन प्रसाद सिंह । जन्म-तिथि आश्विन ८ शुक्ल पक्ष सवत् १६३६ । जन्म-स्थान उगरा । शिक्षा घर मे प्राप्त शिक्षा । आजीविका गृहस्थी । अप्रकाशित पुस्तकें (१) उषाचरित्र, (२) उधोगोपी सम्वाद, (३) राधिका विलाप, (४) निर्गुण-निर्णय, (५) प्रभास खण्ड, (६) दृश्यकूट तथा (७) फुटकल कविता । वर्त्तमान तथा स्थायी पता ग्राम उगरा, थाना · लोहरदगा, पोस्ट कोराम्बे, जिला राँची ।

माकुरुगढी—

पिता का नाम श्री भोकरोगढी । जन्म तिथि वैशाख सुदी ७ वि०स० १६८३ । जन्म-स्थान सानसेवई खास (राँची) । शिक्षा एम०ई०जे०बी०टी० । आजीविका कृषि तथा शिक्षण । अप्रकाशित पुस्तकें (१) प्रचलित फगुवा गीत, (२) प्रचलित अगनई गीत, (३) प्रचलित फगुवा गीत (रासक्रीडा) , (४) नागपुरिया अगनई गीत (शृंगार प्रधान), (५) नागपुरिया फगुवा गीत (पुछारी) । प्रकाशित पुस्तिकाएँ (१) नागपुरिया करम ,(२) फगुवा गीत (चौथा भाग) । आपने अपने गीतो मे "गरही" उपनाम का प्रयोग किया है वर्त्तमान तथा स्थायी पता , ग्राम सानसेवई खास , पोस्ट सेवई, थाना-सिमडेगा, जिला राँची ।

डॉ० मोनिका जोर्डन-हार्स्टमन

इन दिनो आप बोन्न विश्वविद्यालय (प० जर्मनी) मे प्राध्यापिका हैं । डॉ० एच० जे० पिन्नो के निर्देशन के अन्तर्गत बर्लिन विश्वविद्यालय मे आपने १६६४-६६ के बीच डॉकरेट की उपाधि के लिए "सदानी—ए भोजपुरी डायलेक्ट स्पोकन इन छोटानागपर" नामक शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया, जिसका प्रकाशन १६६६ मे हुआ । डॉ० पिन्नो १६५६ मे छोटानागपुर आए थे और वह अपने साथ टेप रेकर्ड कर कुछ शोध-सामग्री जर्मनी ले गए थे, जिस सामग्री के आधार पर सुश्री मोनिका ने अपना कार्य आगे बढाया । उन्हें अपने अध्ययन के लिए कुछ टेप रेकर्ड्स बर्लिन मे भी प्राप्त हुए और कुछ टेप रेकर्ड्स उन्होने स्वय छोटा-नागपुर के जर्मन-प्रवासियो की सहायता से तैयार किए । इन्ही सामग्रियो के आधार पर शोध-प्रबन्ध लिखा गया ।

कथाकार तथा शैलीकार। आजीविका लेखन तथा पत्रकारिता। आपकी कई नागपुरी रचनाएँ आकाशवाणी राँची से प्रसारित हुई हैं। "इगुमसीहक जीवनी" आपकी अप्रकाशित पुस्तक है। "नागपुरी भाषा परिषद्" के गठन तथा "नागपुरी" के प्रकाशन में आपका उल्लेखनीय सहयोग है। आप "आदिवासी" साप्ताहिक के सम्पादक रह चुके हैं, जिसमे नागपुरी की रचनाएँ सदैव स्थान पाती हैं। यह उल्लेखनीय है कि "आदिवासी" के प्रारम्भिक चार अंक (१९४७) नागपुरी मे ही प्रकाशित हुए थे जिन अंकों का सम्पादन आपने ही किया था। स्थायी तथा वर्त्तमान पता भट्टाचार्य लेन, राँची।

रामदास देवघरिया—

पिता का नाम श्री कमलदास देवघरिया। जन्म वि० संवत् १९६८। जन्म-स्थान गाँव सुकुरहुट्टु (राँची)। शिक्षा शिक्षित। आजीविका कृषि एवं यजमानी। प्रकाशित पुस्तकें (१) छोटानागपुरी पंचरत्न तथा (२) गो पुकार। श्री देवघरिया नागपुरी के सफल गीतकार हैं। आपके गीत श्री पाण्डेय वीरेन्द्रनाथ राय, वकील के स्वर मे आकाशवाणी, राँची से यदा-कदा प्रसारित होते रहते हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता ग्राम सुकुरहुट्टु (काँके), पोस्ट काँके, जिला राँची।

ललन प्रसाद—

पिता का नाम श्री शिवगोविन्द प्रसाद। जन्म-तिथि ८ जुलाई १९४०। जन्म-स्थान राँची। शिक्षा आई० एस० सी० अनुत्तीर्ण। आजीविका व्यापार। आपके नागपुरी गीत यदा-कदा आकाशवाणी राँची से प्रसारित होते रहते हैं। आपने बचपन मे अपने पिता श्री शिवगोविन्द प्रसाद के ग्रामोफोन रेकार्डों में "नारी कंठ" प्रदान किया है। नागपुरी मे गीत लिखने के साथ-साथ आप एक अच्छे गायक भी हैं। वर्त्तमान पता ललन प्रसाद, कपड़ा के व्यापारी, चर्च रोड, राँची।

लक्ष्मणसिंह—

पिता का नाम श्री महलीसिंह। जन्म-तिथि चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, संवत् १९८४ साल। जन्म-स्थान बेड़ो (राँची)। शिक्षा माध्यमिक उत्तीर्ण। आजीविका कृषि। श्री लक्ष्मणसिंह ने नागपुरी के अनेक कवियो के गीत संग्रहीत किए हैं। आप स्वयं भी नागपुरी के अच्छे गायक हैं। नागपुरी मे आपकी कुछ वार्त्ताएँ, आकाशवाणी राँची से प्रसारित हुई हैं वर्त्तमान तथा स्थायी पता ग्राम बेड़ो, डाकघर बेड़ो जिला राँची।

लक्ष्मणसिंह बड़ाईक—

तलेमरगुडी निवासी लक्ष्मणसिंह बड़ाईक की एक पुस्तक "नागपुरिया गीत पचरंगी हितैषी कार्यालय, चाईबासा से छपी है। इनके कुछ गीतो मे आधुनिक चेतना दिखलाई पड़ती है।

लक्ष्मणराम गोप—

पिता का नाम श्री गनसुराम गोप। जन्मकाल १९१४। जन्म-स्थान ग्राम जिरमी (राँची)। शिक्षा मिड्ल ट्रेन्ड। आजीविका गृहस्थी तथा शिक्षण। प्रकाशित पुस्तकें (१) नागपुरिया गीतावली, (२) नागपुरिया डमकच गीत। वर्त्तमान तथा स्थायी पता पो० गुमला, जिला राँची।

लाल मनमोहन नाथ शाहदेव—

पिता का नाम श्री लाल शभूनाथ शाहदेव। जन्म आपाढ शुक्ल पचमी सवत् १९५९। जन्म-स्थान गिजो ठाकुरगाँव (राँची)। शिक्षा मिड्ल वर्नाकुलर तक। आजीविका गृहस्थी। आप नागपुरी के एक अच्छे गीतकार हैं। आपके द्वारा लिखित गीतो की सख्या लगभग दो सौ है। स्थायी तथा वर्त्तमान पता गाँव तथा पोस्ट-गिजो ठाकुरगाँव, जिला राँची।

आपके कुछ नागपुरी गीत साप्ताहिक हलधर तथा अन्य पत्रिकाओ मे प्रकाशित हुए है।

लुडोविक कार्डोन—

जन्म २५ दिसम्बर १८५७। जन्म-स्थान नेकिन (हैनोत)। श्री कार्डोन २५ अक्तूबर १८७६ को धर्म-समाज मे प्रविष्ट हुए और २५ नवम्बर १८८४ से मिशन के सेवा-कार्य मे लग गए। इनकी मृत्यु ११ फरवरी १९४६ को हुई। श्री कार्डोन द्वारा नागपुरी मे लिखी गई अब तक कोई पुस्तक देखने मे नही आई है। इन्होने श्री बुकाउट द्वारा सगृहीत नागपुरी लोक कथाओ का सशोधन किया था, ऐसा उल्लेख "सदानी फोक-लोर स्टोरीज" मे मिलता है।

लुन्दरु दास—

पिता का नाम स्व गनपइत मेहर। जन्म-काल सवत् १९१९ (टॅसरा)। मृत्यु-काल स० १९९७ ई० (टॅसरा खूँटी डाँड, सिमडेगा)। लुन्दरु दास का वास्तविक नाम लुन्दरु मेहर था। जब से उन्होने गीत लिखना प्रारम्भ किया ये अपने को दास कहने लगे। लुन्दरु दास कपडा बुनने का काम किया करते थे। इनके कुछ गीतो का एक सग्रह "लुन्दरु दासी झूमॅर" चाईबासा से १९५१ ई० मे प्रकाशित हुआ है। इन गीतो का सग्रह श्री अमीन मेहर ने किया है।

वनमाली नारायण तिवारी—

पिता का नाम श्री जगधीप नारायण तिवारी। जन्म-स्थान ग्राम आरा (राँची)। शिक्षा पाँचवी श्रेणी तक। आजीविका खेती-बारी। आप अपने पिता श्री जगधीप नारायण तिवारी तथा पितामह श्री जगनिवास नारायण तिवारी की तरह एक अच्छे गायक कवि हैं। आप नागपुरी, मु डारी तथा उराँव मे गीत लिखते

हैं। आपके द्वारा रचित नागपुरी गीतों की संख्या लगभग पचास से ऊपर है। आपके कुछ गीत आकाशवाणी रांची से भी प्रसारित हुए हैं। स्थायी तथा वर्तमान पता ग्राम आरा, पोस्ट महिलौंग, जिला रांची।

विनयकुमार तिवारी—

पिता का नाम श्री केशव कुमार तिवारी। जन्म-तिथि १८ मार्च १९४५। जन्म-स्थान नूटी (रांची)। शिक्षा बी० ए० (ऑनर्स)। श्री तिवारी नागपुरी के तरुण लेखक हैं। इनकी कुछ गद्य रचनाएँ "नागपुरी" मासिक में प्रकाशित हुई हैं। आप नागपुरी में "यात्रा-संस्मरण" खूब लिखते हैं। स्थायी पता दानी लॉज, नूटी, रांची। वर्तमान पता कमलकान्त लेन, हिल साईड, रांची।

विष्णुदत्त साहु—

पिता का नाम श्री हरिलाल। जन्म-तिथि १ जनवरी १९२१। जन्म-स्थान रांची। शिक्षा बी० ए०, बी० एल०। आजीविका वकालत। श्री विष्णुदत्त साहु नागपुरी के प्रसिद्ध नाटककार हैं। इनके 'तेतर केर छांहि" नामक धारावाहिक रेडियो-नाटक का प्रसारण आकाशवाणी रांची ने जनवरी १९५८ से जून १९५८ तक किया था। इन नाटकों में श्री विष्णुदत्त साहु ने स्वयं अभिनय भी किया। बाद में ये नाटक जन-सम्पर्क विभाग, बिहार सरकार के द्वारा "तेतर केर छांहि" तथा "मांदर के बोल" नामक पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किए गए। आपके कई नाटक अभी अप्रकाशित ही हैं। स्थायी तथा वर्तमान पता श्रद्धानन्द रोड, रांची।

डा० विसेश्वर प्रसाद केशरी—

पिता का नाम श्री शिवनारायण साहु। जन्म-तिथि १ जुलाई १९३३। जन्म-स्थान . पिठोरिया (रांची)। शिक्षा एम०ए०, पी-एच०डी०। आजीविका अध्यापन। आपकी नागपुरी सम्बन्धी अनेक रचनाएँ। नागपुरी, आदिवासी तथा परिषद्-पत्रिका में प्रकाशित एवं आकाशवाणी रांची से प्रसारित हुई हैं। प्रकाशित पुस्तकें (१) नागपुरी भाषा और साहित्य (२) विश्वनाथ साही, (३) दू डार बीस फूल (सम्पादक)। सन् १९७१ में "नागपुरी गीतों में शृंगार-रस" नामक शोध-प्रबन्ध के लिए रांची विश्वविद्यालय ने आपको पी-एच०डी० की उपाधि प्रदान की है। वर्तमान पता हिन्दी विभाग, गणेशलाल अग्रवाल कॉलेज, डाल्टनगंज। स्थायी पता ग्राम तथा पोस्ट . पिठोरिया, जिला . रांची।

शिव शंकर राम—

पिता का नाम श्री [illegible]। जन्म-तिथि ७ जुलाई १९३५। जन्म-स्थान : रांची। शिक्षा . प्रवेशिका। आजीविका सेवा। इन दिनों आप आकाशवाणी रांची के "हमारी दुनिया" नामक कार्यक्रम में रेडियो कलाकार के रूप में काम कर

रहे हैं। नागपुरी भाषा में लिखित आपकी रचनाएँ (नाटक वार्त्ता तथा कहानी) आकाशवाणी राँची से यदा-कदा प्रसारित होती रहती हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : अपर बाजार, सिराजुद्दीन लेन, राँची।

शिवावतार चौधरी—

पिता का नाम : श्री बलदेव चौधरी। जन्म-काल : सन् १९२४। जन्म-स्थान : नादुप थाना (राँची)। शिक्षा : बी० ए० (ऑनर्स), बी० एल०। आजीविका : वकालत। श्री चौधरी नागपुरी के एक अच्छे कवि तथा गद्यकार हैं। आपकी नागपुरी में लिखित रचनाएँ "नागपुरी" में प्रकाशित तथा आकाशवाणी, राँची द्वारा प्रसारित हुआ करती हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : पो० खूँटी, जिला : राँची।

शेख अलीजान—

पिता का नाम : श्री शेख खुदाबक्श। जन्म-तिथि : पन्द्रह जनवरी १९०४। जन्म-स्थान : करमा (राँची)। शिक्षा : अपर। आजीविका : राजमिस्त्री। प्रकाशित पुस्तकें : (१) डमकच छत्तीस रंग, (२) नागपुरिया गीत छत्तीस रंग, (३) फगुआ-गीत (भाग ३) आपके अनेक गीत अप्रकाशित हैं। शेख अलीजान नागपुरी के पहले कवि हैं, जिन्होंने अपने गीतों में आधुनिक जीवन को उभरने का अवसर प्रदान किया है। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम : करमा, पोस्ट : इरबा, राँची।

डॉ० श्रवण कुमार गोस्वामी—

पिता का नाम : श्री बैजूराम। जन्म-स्थान : राँची। आजीविका : अध्यापन। शिक्षा : एम० ए०, पी-एच० डी०। प्रकाशित पुस्तकें : (१) जिस दीये में तेल नहीं (२) नागपुरी और उसके बृहत्-त्रय (३) दू डाइर बीस फूल (प्रधान संपादक), (४) प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक। आकाशवाणी, राँची के द्वारा जुलाई १९५८ से दिसम्बर १९५८ तक प्रसारित 'तेतर केर छाँहे' नामक धारावाहिक नाटक (नागपुरी) के प्रस्तोता, लेखक कलाकार। मुख्यतः हिन्दी के कथाकार एवं व्यंग्यकार। हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिकाओं में सौ से अधिक रचनाएँ प्रकाशित। सन् १९७० में राँची विश्वविद्यालय ने "नागपुरी और उसका शिष्ट साहित्य" नामक शोध-प्रबन्ध के लिए आपको पी-एच० डी० की उपाधि प्रदान की। नागपुरी भाषा तथा साहित्य के सम्बन्ध में शोध करनेवाले आप पहले व्यक्ति हैं। वर्त्तमान पता : अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डोरण्डा महाविद्यालय, राँची-२। स्थायी पता : मेन रोड, राँची-१।

श्रीकृष्ण प्रसाद गुप्त "शशिकर"

पिता का नाम : स्व० दीपनारायण गुप्त। जन्म-तिथि : ३ दिसम्बर १९२६। जन्म-स्थान : नेपाल भवन, चाईबासा। आजीविका : वाणिज्य। श्री शशिकर हिन्दी के अलावे नागपुरी में भी यदा-कदा लिखते हैं। आपकी कई नागपुरी कविताएँ आदिवासी में प्रकाशित हुई हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : सीताराम श्यामनारायण पथ, चक्रधरपुर।

(श्रीमती) सरस्वती देवी—

पिता का नाम श्री लीलमैन सिंह। जन्म-काल १९२३ ई०। जन्म-स्थान-मरगलोया (राँची)। शिक्षा साक्षर। आजीविका व्यवसाय। श्रीमती सरस्वती देवी की आवाज मे आकाशवाणी, राँची से बराबर गीत प्रसारित हुआ करते हैं। वर्तमान तथा स्थायी पता ग्राम डोइमा, डाकघर डोइमा, जिला राँची।

सहनी उपेन्द्र पाल "नहन"

पिता का नाम श्री सहनी वीरेन्द्रपाल सिंह। जन्म १५ अक्तूबर १९३०। जन्म-स्थान तारागुटू (राँची)। शिक्षा मैट्रिक। आजीविका कृषि। प्रकाशित पुस्तकें (१) नारदमोह लीला, (२) उलाहना। हस्तलिखित पुस्तिकाएँ लगभग दस की संख्या मे। श्री सहनी उपेन्द्रपाल "नहन" नागपुरी साहित्य मे "नहन" के नाम से विख्यात हैं। "नहन" स्वयं एक अच्छे गायक भी हैं। इनकी नागपुरी रचनाएँ निरन्तर आदिवासी मे प्रकाशित तथा आकाशवाणी, राँची से प्रसारित होती हैं। स्थायी तथा वर्तमान पता . गाँव तारागुटू, पोस्ट ' गुनिया (टोटो), थाना घाघरा, जिला राँची।

सुशील कुमार—

पिता का नाम स्व० रामानन्द लाल। जन्म ३० जनवरी १९३१। जन्म-स्थान राँची। शिक्षा साहित्यरत्न। आजीविका राजकीय सेवा। श्री सुशील कुमार नागपुरी के ख्याति प्राप्त नाटककार हैं। आकाशवाणी राँची ने आपके धारावाहिक नाटक "चोका, वोका, कोका" को १३ किस्तो मे तथा "लोधो सिंह" को ९ किस्तो मे प्रसारित किया था। आपकी नागपुरी रचनाएँ "आदिवासी" मे भी प्रकाशित होती रहती हैं। आपकी कई नागपुरी रचनाएँ छद्म-नाम से भी प्रकाशित हुई हैं। सम्प्रति "आदिवासी" साप्ताहिक के आप कार्यकारी सम्पादक हैं। स्थायी तथा वर्तमान पता राधाकृष्ण लेन, राँची।

(सुश्री) सीता कुमारी—

पिता का नाम श्री हरिराम गोप। जन्म-तिथि ९ नवम्बर १९४९ ई०। जन्म-स्थान : कैरो (राँची)। शिक्षा ' प्रवेशिका। आकाशवाणी, राँची से सुश्री सीता कुमारी यदा-कदा नागपुरी लोक-कथाएँ प्रसारित करती हैं। स्थायी तथा वर्तमान पता ग्राम : कैरो, डाकघर कैरो, जिला ' जिला राँची।

(श्रीमती) सोना देवी

पिता का नाम : श्री जगन्नाथ सिंह। जन्म-तिथि १२ मई १९४१। जन्म-स्थान फुनगुरी (राँची)। शिक्षा . साक्षर। आजीविका गृहस्थी। श्रीमती सोनादेवी की आवाज मे आकाशवाणी, राँची से निरंतर नागपुरी गीत प्रसारित होते

रहते हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता ग्राम फूलसुरी, डाकघर हुनहट, जिला रॉंची।

हनुमान सिह

आप नागपुरी के प्रारम्भिक कवि तथा स्व० बरजू राम पाठक के समकालीन माने जाते है। आपके अनेक गीत प्रचलित है, पर उनका कोई सकलन प्राप्त नही होता।

हरमन लकडा

पिता का नाम श्री जुसफ लकडा। जन्म-तिथि १, मार्च १९०८। जन्म-स्थान सिंजुसेरेंग (रामपुर), थाना रॉंची। शिक्षा बी० ए०। आजीविका मिशन की सेवा। प्रकाशित पुस्तकें (१) छोटानागपुर मे धान केर खेती, (२) झारखण्ड मे साग सब्जी केर खेती। हस्तलिखित पुस्तकें मिश्रित खेती। इसके अतिरिक्त आपने हिन्दी मे भी कई पुस्तके लिखी है। वर्त्तमान पता न्यूगार्डेन, सिरोमटोली, रॉंची।

हरिनन्दन राम

पिता का नाम स्व० जगन्नाथ राम। जन्म-काल १ फरवरी १९०२। जन्म-स्थान भरनो (रॉंची)। शिक्षा बी० ए० तक। आजीविका राजकीय सेवा (अवकाश प्राप्त)। श्री हरिनन्दन राम की गणना नागपुरी भाषा के श्रेष्ठ कहानी-कारो मे की जा सकती है। "आदिवासी" मे प्रकाशित इनकी "मोहो बुझोना मोय बइद मोको नखो" शीर्षक कहानी नागपुरी भाषा-भाषियो के अलावे दूसरे पाठको के द्वारा बहुत पसन्द की गई। इनकी कुछ कहानियाँ "नागपुरी" मे प्रकाशित हुई है। इनकी भाषा से ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि नागपुरी गद्य कितना सशक्त है। इनके पिता स्व० जगन्नाथ नागपुरी के एक अच्छे कवि थे। स्थायी पता ग्राम तथा पोस्ट भरनो, जिला, रॉंची। वर्त्तमान पता छोटा नागपुर लॉ कॉलेज, रॉंची।

हुलास राम

पिता का नाम कवि घासीराम। जन्म वि० स० १९५८। जन्म-स्थान करकट (रॉंची)। आजीविका खेती-बारी। शिक्षा लोअर। श्री हुलासराम नागपुरी के प्रसिद्ध कवि घासीराम के सुपुत्र हैं। अब तक आपकी कोई पुस्तक प्रकाशित नही हुई है, पर आपने अनेक विषयो पर सैंकडो गीत लिखे हैं। श्री हुलास राम एक अच्छे गायक भी है। स्थायी तथा वर्त्तमान पता ग्राम करकट, पोस्ट : मॉंडर, जिला रॉंची।

हेनरिक फ्लोर

जन्म : १ जून १८७४। जन्म-स्थान ब्रूग्स। २३ सितम्बर १८९३ को धर्म समाज मे प्रविष्ट। १७ दिसम्बर १९०१ से मिशन के सेवा-कार्य मे सलग्न। मृत्यु १२ दिसम्बर १९४७।

स्व० फ्लोर नागपुरी के अनन्य सेवक थे। रेव० बुकाउट द्वारा प्रकाशित "सदानी फोक लोर स्टोरीज" के सशोधक भूमिका लेखक रेवरेण्ड फ्लोर ही थे।

"सदानी हैंड बुक" नामक व्याकरण रेव० फ्लोर ने ही प्रस्तुत किया था। जिसका प्रकाशन दि डिस्ट्रिक्ट टी लेवर एसोसिएसन कलकत्ता ने सन् १९३१ मे किया था।